चैतन्य लहरी

खण्ड : 10 1998 अंक : 1, 2 एवं 3

"...चाहे आप सहज योगी हों, चाहे आपको अपने अगुआओं से सहजयोग का प्रमाण पत्र मिल चुका हो, चाहे आपको बहुत महान समझा जाता हो, परन्तु यदि आप प्रतिदिन सुबह और शाम ध्यान-धारणा नहीं करते तो, सत्य बात है, आप श्रीमाताजी के साम्राज्य में नहीं होंगे, क्योंकि मुझसे आपका सम्बन्ध केवल ध्यान-धारणा के माध्यम से ही है।"

परम् पूज्य श्री माताजी

सम्पादक : योगी महाजन

प्रकाशक : विजय नालगिरकर
162, मुनीरका विहार,
नई दिल्ली-110 067

मुद्रक : अभिनव प्रिन्ट्स, दिल्ली-34
फोन : 7184340

इस अंक में

1.	नवरात्रि की पूर्वसंध्या पर श्री माताजी का प्रवचन		कबैला, इटली
2.	एक योगी की अनुभूति जुनेटीन्थ क्या है? श्री माता जी का सन्देश एक बालक की अनुभूति सहजयोग-पूर्ण शान्ति का एकमात्र स्रोत		
3.	सूफी धर्म एवं सहजयोग	17.02.1997	
4.	नवरात्रि पूजा	05.10.1997	कबैला
5.	महिलाओं की भूमिका	जून, 1988	शुडि कैम्प
6.	आदि शक्ति क्या है?	06.06.1993	कबैला
7.	रामनवमी पूजा	05.04.1998	नोयडा निवास

प्रकृति के समीप रहते हुए सन्तुलित पारिवारिक जीवन व्यतीत करें।

(नवरात्रि पूजा 4.10.1997 की पूर्व संध्या को श्रीमाता जी का प्रवचन, कबैला, इटली)

यह कार्यक्रम हमारे लिए कितना आनन्ददायी था, न केवल मनोरंजन की दृष्टि से परन्तु हमारे भविष्य की गतिविधियों की दृष्टि से भी । आश्चर्य की बात है कि स्विस बैंक के कार्यकलाप मेरे चित्त को आकर्षित करते रहे हैं। मैं नहीं समझ पाती कि किस प्रकार इतनी सुगमता से वे सभी कुछ पचा जाते हैं! आज के इस युग में जबकि लोग प्रजातन्त्र तथा बड़े-बड़े आदर्शों की बातें कर रहे हैं किस प्रकार खुल्लम-खुल्ला यह गैर-कानूनी कार्य हो रहा है! इसके लिए मेरे पास एक योजना है; मुझे इसका पर्दाफाश करना होगा । ऐसा करने के लिए मेरी एक योजना है। जहां तक भौतिकता का प्रश्न है यह कार्यान्वित हो रही है । अत्यन्त उन्नत एवं विकसित कहलाने वाले यह सभी देश भयंकर व्यापारिक मन्दे की चपेट में हैं। यह व्यापरिक मन्दा इन्हें अवांछित वस्तुओं के अत्याधिक उत्पादन के विषय में सबक सिखायेगा।

लालच से पागल हो जाने के कारण भौतिकवाद पनपता है। इंग्लैंड में एक घर की खोज में मैं बहुत से घर देखने के लिए गई। वहां मुझे हैरानी हुई कि सभी घरों में प्लास्टिक की वस्तुओं के ढ़ेर पहाड़ की तरह से लगे हुए हैं। दरवाजे से निकलते ही आपको लगेगा कि यह चीजें आप पर गिरने वाली हैं। केवल इंग्लैंड में ही नहीं पेरिस में भी यही हाल है। लोग व्यर्थ की इन चीजों को इतना इकट्ठा करते हैं कि उनकी समझ में नहीं आता कि इन्हें कहां रखें और क्या करें? यह पागलपन बढ़ता ही चला जा रहा है।

अब सहजयोगियों के लिए मैंने एक समाधान खोज लिया है कि वे क्या करें । उन्हें चाहिए कि वे हस्तकला को प्रोत्साहन दें । चेकोस्लोवाकिया या इंग्लैंड या अन्य कहीं जहां भी मैं गई, मैंने हस्तकला की वस्तुएं खरीदीं । मैं नहीं समझ पाती कि आप लोग ये प्लास्टिक की बनी बेकार की चीजें किस प्रकार खरीद सकते हैं। हस्तकला की वस्तुएं जब मैंने खरीदीं तो मैं हैरान थी । चेकोस्लोवाकिया में अत्यन्त छोटी-छोटी दुकानें थीं। एक एक करके वे मेरे पास आए और कहने लगे, "श्री माता जी हमारे से भी आप कुछ खरीदिए ।" वे कहने लगे कि इतनी सुन्दर वस्तुएं हैं फिर भी हम इन्हें बेच नहीं पाते । परन्तु लोग सभी प्रकार की व्यर्थ की चीजें खरीद रहे हैं तो सहजयोगियों को शपथ लेनी चाहिए कि वे केवल हाथ से बनी वस्तुएं ही खरीदेंगे । जरूरी नहीं कि आपके पास बहुत सी चीजें हों, आप थोड़ी चीजें खरीदें परन्तु यह हाथ से बनी होनी चाहिएं । माल लो आप एक परिधान खरीदते हैं तो इस पर हाथ की थोड़ी-सी कढ़ाई होनी चाहिए या हाथ का कुछ अन्य काम होना चाहिए । लोगों को सस्ती एवं कष्टदायी चीजें खरीदते हुए देखकर आश्चर्य होता है । मैं आपको बताती हूं कि मैं नाइलोन नहीं पहन सकती, कोई भी बनावटी चीज नहीं पहन सकती । थोड़ी देर के लिए यदि मैं जुराबें पहन लूं तो मेरा शरीर दुखने लगता है। तो यह प्रकृति के विरूद्ध है। हस्तकला की वस्तुएं बहुत कम हैं, फिर भी जहां तक हो सके हाथ से बनी चीजों का उपयोग करें । पृथ्वी से भी यह लोग अति सुन्दर मृणमूर्तियां (TERRACOTA) बनाते हैं। स्वभाव से मैं समाजवादी हूं । अतः मेरे मन में तीव्र इच्छा हुई कि मैं मृण-मूर्तियों का निर्यात करूं क्योंकि ये अत्यन्त सुन्दर हैं। ये अत्यन्त शान्ति प्रदायक हैं। अति सुन्दर हैं और अति सुगन्धित भी । परन्तु लोग सोचते हैं कि हमें अमेरिका की बनी कोई चीज खरीदनी चाहिए, मशीनों द्वारा बनी हुई । और वे इस प्रकार की चीजें खरीदते चले जाते हैं। मैं हैरान थी कि अमेरिका की दुकानों पर भी रेशम, कपास तथा चमड़े से बनी बहुत सी सुंदर चीजें बिक रही थीं । परन्तु लोग बड़े-बड़े बाजारों में जाकर बहुत मंहगे दामों में ये बेकार की चीजें खरीदते हैं। इसका अर्थ यह हुआ कि उनमें विवेक की कमी है। विवेक की कमी समाज को पतन की ओर घसीटती है, विवेक से ही पता चलता है कि ये मूर्खतापूर्ण चीजें खरीदना कितना भयानक है।

अब आप यह भी देख रहे हैं कि लोग आयुर्वेद और होम्योपैथी को अधिक अपना रहे हैं। आपके महान देश द्वारा बनाई हुई भयानक औषधियों का उपयोग वे नहीं करना चाहते। आप जानते हैं कि स्विस लोग क्या करते हैं। वे भारत के चिकित्सकों को बुलाने के लिए बड़े-बड़े प्रलोभन भेजते हैं और यदि वे चिकित्सा की कोई विशिष्ट औषधि खोज लें तो उसी में मामूली सा परिवर्तन करके वे कहते हैं कि यह बेहतर है। इन औषधियों के विषय में भी आप जानते हैं, अधिकतर यह औषधियां अत्यन्त भयानक एवं कष्टदायी हैं। गलती से मेरे परिवार के लोगों ने मुझे यह ऐन्टीबायोटीक दे दिए, तभी से मेरी टांगे बहुत दुर्बल और कष्टकर हैं । अब मुझमें काफी सुधार हुआ है।

तो अब आप देखिए कि क्यों हम यह चीजें अपना रहे हैं क्योंकि चहुं ओर प्रदूषण है, जो कि मशीनों की देन है। गांधी जी कहा करते थे कि इतनी अधिक मशीनों के उपयोग की कोई आवश्यकता नहीं है। आप मोटर कार को ही लें । हम पैदल चल सकते हैं, रेलगाड़ियों का उपयोग कर सकते हैं, लेकिन यदि लोगों को दस मीटर भी जाना हो तो वे मोटर कार से जाना चाहते हैं। पैदल नहीं चलना चाहते । इसीलिए हमारा स्वास्थ्य बिगड़ गया है। मैं आपको बताती हूं कि जब मैं स्कूल में पढ़ती थी तो मेरा स्कूल घर से पांच मील दूर था। हमारे यहां कार थी और बग्घी भी थी । परन्तु प्रातः काल पांच मील पैदल चलना हमारे लिए अनिवार्य था । शाम के समय कार हमें लेने के लिए आया करती थी । परन्तु प्रातः काल स्कूल जाने के लिए हमें पांच मील चलना होता था । रास्ते में एक पहाड़ी थी, उसे भी पार करना होता था । इस प्रकार हम प्रकृति के विषय में सीख पाए । पैदल चले बिना आप क्या जान सकते हैं? कार में जाते हुए आप कुछ बिजली के खम्भों को ही देख सकते हैं। प्रकृति को नहीं देख सकते। अब पैदल चलने की यह शैली पुरानी हो गई है। लोग पैदल चलते ही नहीं ।

मैं यह नहीं कह रही कि हम लोग अत्यन्त परिवर्तित एवं उन्नत लोग हो गए हैं। एक प्रकार से हमारा पतन ही हुआ है क्योंकि हम पैदल नहीं चल सकते । परमात्मा ने हमें यह टांगे चलने के लिए दी हैं परन्तु हम चल नहीं सकते । पैदल चलने से बचना चाहते हैं। यही कारण है कि इतनी अधिक कारें हैं। मैं जानती हूं कि कुछ परिवारों में लोगों के पास पांच-पांच कारें हैं क्योंकि परिवार में पांच सदस्य हैं। विशेषकर स्पेन में । मैं हैरान थी इतनी अधिक कारें हैं और हर एक कार में केवल एक व्यक्ति चलता है। अब प्रदूषण की समस्या उत्पन्न हो गई है क्योंकि हमने स्वयं पर निर्भर रहने की आदत भुला दी है। अब धुएं से पीड़ित क्वालालम्पुर एवं अन्य सभी स्थानों की दशा को देखें । ये धुएं से पीड़ित हैं। मैंने तो यह सब नहीं किया । परन्तु वे लोग अल्लाह से प्रार्थना कर रहे हैं कि हमें जल दो । जब वे इतने बेवकूफी भरे कार्य कर रहे हैं तो परमात्मा उन्हें जल क्यों देंगे? अब वहां धुंआ ही धुंआ है। क्यों? क्योंकि उन्होंने सारे पेड़ काट दिए हैं। पेड़ों को वे क्यों काटना चाहते हैं? पैसा बनाने के लिए । उनकी लकड़ी भारत आ रही है क्योंकि भारत ने भी अपने पेड़ काट दिए हैं। पागलों की तरह से यदि आप कार्य करते रहेंगे तो प्रदूषण होगा ही, अर्थात् विध्वंसकारी शक्तियां गतिशील होकर आपको रोकेंगी । इसके लिए आपको देवी से प्रार्थना नहीं करनी चाहिए । ये शक्तियां कार्य करेंगी और हर जगह कार्य कर रही हैं।

तो यदि आपको किसी चीज की आवश्यकता है तो प्रयत्न कीजिए कि हस्तकला की वस्तुएं ही खरीदें । आपके वस्त्र भी आवश्यक नहीं कि बहुत अधिक हों, परन्तु जो हों हाथ से बने हों । कम से कम इतना तो सहजयोगी कर ही सकते हैं। उन्हें चाहिए कि स्विस बैंकों में धन न रखें। अब इस स्विस बैंक का बुरी तरह से पर्दाफाश होगा । उनसे मैं एक अन्य बात पर भी रुष्ट हूं । उन्होंने यहूदियों को धन देने का वचन दिया था परन्तु अब वे उन्हें धन नहीं देना चाहते। मृत्यु के पश्चात क्या वे इस धन को अपने साथ ले जायेंगे? इन सब अपराधों का दण्ड मिलेगा । इसी कारण मैं बहुत प्रसन्न हूं कि इस वर्ष में ऐसा हुआ । इसके विषय में मैंने सम्मेलनों में भी बात चीत की । चीन के सम्मेलन में भी मैंने स्विस बैंक की बात की । बहुत से दण्डाधीशों तथा विधि मन्त्रालय के मुख्याधिकारियों से भी मैंने बातचीत की । मैंने उन्हें बताया कि क्यों न एक सम्मेलन बुलाकर हम यह कहें कि इस तरह का व्यापार (बैंकिंग) मूर्खता है। सभी प्रकार के दुष्ट लोग इस प्रणाली का अनुचित लाभ उठाकर पैसा बनाने का प्रयत्न कर रहे हैं। बहुत से लोगों ने वहां अपना धन गंवा दिया है। मेरी समझ में नहीं आता कि वहां धन रखने की क्या आवश्यकता थी ! मृत्यू के पश्चात् उनके बच्चों को कुछ भी नहीं मिला ।

लालच ही समस्या है, मानव के अन्दर यह आन्तरिक दोष है। वह लालची हो जाता है क्योंकि वह धर्माच्युत हो गया है। वह सोचता है कि वस्तुओं से उसे सुख प्राप्त हो सकता है। वस्तुओं से उसे सुख प्राप्त नहीं हो सकता, फिर भी वह चीजें खरीदता जाता है और इकट्ठी करता जाता है। मैं कहूंगी कि तुम्हारी मां भी ऐसा करती है। मैं भी चीजें खरीदती हूं परन्तु मैं हस्तकला की चीजें खरीदती हूं। ताकि कल यदि मुझे उपहार देने पड़ें या ये चीजें बेचनी पड़े - जो गहने आपने मुझे दिए हैं, इनका भी मैं नहीं जानती कि मैं क्या करूंगी । मैं इन्हें बेच रही हूं। गहनों का मैं क्या करूं? मैंने बहुत से आश्रम आदि खरीदने हैं। अपने पारिवारिक गहने भी मैं बेच रही हूं क्योंकि पारिवारिक वस्तुओं पर भी मैं धन खर्च करती हूं। इसके विषय में जरा सोचें, यह सब चीजें किस लिए हैं? इस सबसे हमें क्या खुशी मिलती है? किसी को उपहार देने या प्रसन्न करने के लिए कुछ खरीदना तो समझ में आता है। परन्तु आप तो खरीदते ही चले जाते हैं। किस प्रकार आप यह सब सहन कर सकते हैं ? ऐसा आप नहीं कर सकते ।

दूसरों को देने में अधिक आनन्द मिलता है। वस्तुएं आपको मूलतत्व की सूझबूझ नहीं प्रदान कर सकतीं और मूलतत्व यह है कि आप धर्म हैं। आपके अन्दर धर्म है, वही

आपकी पूरक शक्ति (संयोजकता) है। और यह भौतिकवाद इसके विरुद्ध है क्योंकि यह माफिया, स्विस बैंक तथा धोखेबाज लोगों की सृष्टि करता है। हमारे सम्मुख बहुत से समुदाय हैं जो धोखाधड़ी के लिए जाने जाते हैं, जो भौतिकवादी हैं और जिन्हें अध्यात्मविवेक नहीं है । तो सहजयोगियों के लिए मैं कहूंगी, निसन्देह: आपने सभी मन्त्रों का उच्चारण किया और मुझे वह सब करना चाहिए । परन्तु आपको भविष्य में कोई ऐसी चीज नहीं खरीदनी चाहिए जो हस्तरचित न हो, इसका प्रयत्न करें। कम से कम कुछ कढ़ाई या कुछ अन्य हाथ का, काम इस पर होना चाहिए । अन्य चीजें हमारे लिए अच्छी नहीं हैं, हमारे स्वास्थ्य के लिए भी हानिकर हैं तो सहजयोगियों को चाहिए कि वे पैदल चलें, पैदल चलना और प्रकृति को देखना उनके लिए आवश्यक है। प्रकृति में क्या निहित है? आपमें से बहुत से लोग नहीं जानते। मान लो मैं इस फूल का नाम पूछूं तो आपमें से कितने लोग जानते हैं? इसका बहुत सुंदर नाम है; (Kiss Me Quick) "मुझे तुरन्त चूमो" । वानस्पतिक नाम के अतिरिक्त इसका यह नाम भी है। आप सभी कुछ सीखें । छोटी छोटी चीजों का ज्ञान भी आपको होना चाहिए । यह कढ़ाई कहां से आई? यह साड़ी कहां से आई? मैं कहूंगी की भारतीय पुरुष इसके विषय में कुछ नहीं जानते । वे कुछ भी नहीं जानते परन्तु पश्चिमी पुरुषों के साथ भी यही समस्या है। आप उन सब चीजों में दिलचस्पी लीजिए जिनकी तरफ आपने ध्यान नहीं दिया । उदाहरणार्थ भारतीय पुरुष खाना बनाना नहीं जानते । एक बार मेरे पति ने कहा कि वे खाना बनाना जानते हैं। मैंने पूछा क्या बनाएंगे तो उन्होंने कहा कि चपातियां । परन्तु उनसे कुछ नहीं बना । चपातियों की शक्ल आस्ट्रेलिया और अमेरिका जैसी थी । उन्होंने कहा कि मैं हार मानता हूं। मैं तो जहाजरानी कर रहा था और जहाज रानी का मतलब है जहाजरानी । परन्तु आप लोग सूक्ष्म चीजों को देख सकते हैं जिसे हम कहते हैं सूक्ष्म दृष्टि । पैदल चलते हुए प्रकृति को देखें । पेड़ों से, पशुओं से प्रेम करें, तो आप आश्चर्य चकित रह जाएंगे कि समाचार पढ़ने के अतिरिक्त बहुत सी चीजें देखने योग्य हैं। समाचार पत्रों में पढ़ने योग्य क्या रखा है? आप घंटों अखबार पढ़ते चले जाते हैं और अगले दिन इसे भूल जाते हैं। देवी के बारे में कहा है कटाक्ष-कटाक्ष निरीक्षण । हर कटाक्ष में देवी सभी कुछ जानती हैं। किसी पुरुष, स्त्री या किसी अन्य चीज पर जब वे दृष्टि डालती हैं तो जान जाती हैं कि उसकी स्थिति क्या है। आप यदि मेरे बच्चे हैं तो आपको भी वैसा ही करने का प्रयत्न करना चाहिए क्योंकि मैं तो जंगलों में दौड़ जाया करती थी । इस प्रकार के सभी स्थानों पर मैं जाया करती थी और इस सुन्दर पृथ्वी मां, जिसने इन सुन्दर चीजों की सृष्टि की है, का आनन्द लेती थी। क्या आपने देखा है कि रूसी लोगों द्वारा बनाई गई इस पृष्ठभूमि का रंग भी वही है जो सामने के दृश्य का है। उन्होंने वही रंग उपयोग किए हैं। यही वास्तविक सामूहिकता है। अब आप प्रकृति में देखें । यह कितनी मिलती जुलती है। इसमें कोई भद्दापन या शोर नहीं है। यह अत्यन्त सुन्दर है। लाल होते हुए भी मेल के लिए इसमें हरा रंग है।

यह पृथ्वी सभी कुछ जानती है, सभी कुछ समझती है, सभी कुछ करती है। परन्तु हम पृथ्वी मां के लिए क्या करते हैं? हम बनावटी चीजों के पीछे, मशीनों के पीछे भागते रहते हैं और अब कम्प्यूटर आ गए हैं। आपने किसी को पत्र लिखने हैं तो यह ठीक है। इसके अतिरिक्त तो यह पागलपन है। कम्प्यूटर हमारे मस्तिष्क को पूर्णतया: शून्य कर देंगे । पक्षाघात हो जायेगा हमारे दिमागों को । हम 2+2 भी नहीं सोच सकेंगे। तो कोई भी चीज यदि आप उपयोग करना चाहते हैं तो इसकी मर्यादाएं भी होनी चाहिएं। मर्यादाओं से बाहर न जाएं । आप यदि तैरना शुरू करते हैं तो तब तक तैरते चले जाते हैं जब तक बीमार न पड़ जाएं । आप यदि घुड़सवारी शुरु करते हैं तो तब तक आप घुड़सवारी करते हैं जब तक घोड़े से गिर न जाएं । जिस प्रकार लालच की कोई सीमा नहीं होती उसी प्रकार ऐसे जीवन की भी कोई मर्यादा नहीं होती। इस प्रकार की मूर्खताओं का यही कारण है। मुझे यह पसन्द है। मुझे केवल इसी का शौक है। आप मानव हैं। आपको ऐसा नहीं कहना चाहिए । इसके विपरीत आपको कहना चाहिए कि मुझे यह सीखना चाहिए, इसके विषय में जानना मेरे लिए आवश्यक है। ऐसा होना आवश्यक है अन्यथा आपका व्यक्तित्व बौना रह जाएगा । अन्ततोगत्वा लोग धन के चक्कर में ही समाप्त हो जाते हैं। मैं नहीं समझ पाती । मुझे तो दो सौ नोट भी गिनने नहीं आते । पैसे के बारे में मुझे कोई ज्ञान नहीं है। मेरा गणित अच्छा है परन्तु जो भी पैसा आप देते हैं। वह सीधा उनके पास चला जाता है और वो अपने हिसाब से उसका उपयोग करते हैं। परन्तु यदि कोई पूछे कि फलां चीज के लिए कितना पैसा आया तो मुझे कुछ पता नहीं क्योंकि धन में मेरी कोई दिलचस्पी नहीं है। पैसे में दिलचस्पी लेने के लिए क्या रखा है? परन्तु पैसा मुझे मिल जाता है। मैंने अपना एक गहना बेचा तो अपनी लागत से सौ गुणा पैसा मुझे मिला। आप कह सकते हैं कि चैतन्य लहरियों के कारण ऐसा हुआ। जो चाहे आप कहें। पैसे के पीछे यदि आप दौड़ेंगे तो इसके शिकंजे में फंस जायेंगे ।

तो लालच से मुक्ति पाने का क्या उपाय है? प्रयत्न द्वारा दूसरों को देकर उसका आनन्द लेना । किसी अन्य को कुछ दें, अपनी चीजें उनके साथ बांटें और फिर देने के आनन्द का अनुभव करें। ग्रेगोर आज यहां नहीं हैं, मुझे उसकी

याद आ रही है। एक बार मैं एक साड़ी की दुकान पर गई और एक साड़ी मुझे पसन्द आई । परन्तु महंगी होने के कारण मैंने उसे नहीं खरीदा । बाहर आ गई । आप हैरान होंगे मेरे जन्मदिन के अवसर पर उसने वही साड़ी मुझे भेंट की। मैं आनन्द से भर गई। अगले ही दिन जाकर उस दुकान से वह साड़ी खरीद लाया था और जन्मदिन के उपहार के रूप में मुझे भेंट कर दी । यह छोटी-छोटी चीजें लोगों को देने से आप महान आनन्द प्राप्त कर सकते हैं। अपने पर खर्च करने से यह आनन्द प्राप्त नहीं होता । मुझे याद नहीं आता कि अपने जीवन काल में मैंने अपने लिए कुछ खरीदा हो, कभी नहीं । मैं यदि खरीददारी के लिए जाऊ तो प्यास लगने पर कभी अपने लिए कोकाकोला तक नहीं खरीदा । लोग जानते हैं कि मैं अपने लिए कुछ नहीं खरीदती । वास्तव में कुछ नहीं । परन्तु आप सब लोग मुझे इतना कुछ देते हैं कि मेरी समझ में नहीं आता कि उसका क्या किया जाये ! अब मैंने यह निर्णय किया है कि 75 वर्ष की आयु के पश्चात मुझे आप लोगों से कुछ भी नहीं लेना चाहिए । परन्तु आप लोगों को प्रसन्न करने के लिए कुछ लेना भी पड़ सकता है। ये लोग कह रहे हैं कि केवल राष्ट्रीय या अन्तर्राष्ट्रीय उपहार स्वीकार कर लें। ठीक है। परन्तु इससे अधिक कुछ नहीं । सभी देशों को लाने की भी जरूरत नहीं । आखिर राष्ट्रीय या अन्तर्राष्ट्रीय क्या होता है। आप सभी अन्तर्राष्ट्रीय लोग हैं। मेरे लिए कोई उपहार लाने की क्या आवश्यकता है? मेरे पास तो इन्हें देखने का भी समय नहीं है। अन्य चीजों में मै इतनी व्यस्त हूं क्योंकि संसार में इतनी अधिक समस्यायें हैं। अत: मेरी राय है कि इन सब बातों से ऊपर उठकर हम स्वयं देखें कि हम क्या कर रहे हैं। **मुझे विश्वास है कि आपमें से किसी का पैसा स्विस बैंकों में नहीं है। परमात्मा का धन्यवाद । अपनी आवश्यकता से अधिक कभी न कमाएं । उसकी कोई आवश्यकता नहीं ।** जो भी आपको प्राप्त होता है ठीक है। निसन्देह: कोई रचनात्मक कार्य यदि आप कर रहे हैं, कोई कलाकृति आदि की सृष्टि आप कर रहे हैं तो ठीक है। अनावश्यक वस्तुएं आप मत खरीदिए । बेकार में चीजों को खरीदते जाना या पैसे को इधर-उधर छुपाते फिरना, इसकी कोई आवश्यकता नहीं । ईमानदार बनकर, समस्याओं से पूर्णत: ऊपर उठकर आपको बहुत सन्तुष्टि होगी ।

मैं आपके साथ सहमत हूं कि माफिया की बहुत बड़ी समस्या है। माफिया को केवल सरकार ही वश में कर सकती है क्योंकि यह बहुत अधिक कर देते हैं। अब उदाहरणार्थ इस गरीब देश में, मैं इसे गरीब ही कहूंगी क्योंकि अधिकतर लोग करों की वजह से परेशान हैं। व्यक्ति को 265 प्रकार के कर देने पड़ते हैं। इटली के लोग अपनी कला के लिए प्रसिद्ध हैं। वे सुन्दर सुन्दर वस्तुएं बनाते हैं परन्तु करों के कारण वे ऐसा नहीं कर पाते । सभी को मूर्ख बनाकर केवल रूपरेखाकार (Designers) ही पैसा बनाते हैं। वे लोगों को बहुत बेवकूफ बनाते हैं। एक बार मेरे पति कैरो गए और वहां से मेरे लिए एक गुलुबन्द लेकर आए । आकर कहने लगे यह रूपरेखाकारों (Designers) का है। मैंने कहा मुझे तो यह भारतीय लगता है। यह भारतीय चीज है। और हैरानी की बात यह थी कि इसके एक कोने पर लिखा हुआ था "भारत में बना"। उन्होंने इस पर 25 पौंड खर्चे थे । भारत में इसे दो पौंड में खरीदा जा सकता है। तो विशिष्ट वर्ग की सृष्टि कराना एक अन्य चीज है। आप मेरे चश्मों को देखें । ये मेरे दामाद ने खरीदे थे । वह कहने लगे कि यह सर्वोत्तम हैं। मैं नहीं जानती थी कि चश्मों में इतनी कौन सी विशेषता होती है! एक बार मै उन्हें पहनकर अमेरिका की एक दुकान पर गई तो सभी लोग मुझे मैडम मैडम कहकर पुकारने लगे । मैंने सोचा मुझमें ऐसी कौन सी विशेषता है! यह लोग मुझे मैडम क्यों पुकार रहे हैं? ओह! आप नहीं जानती? यह कार्टियर है। मैंने पूछा कि यह कार्तिये कौन है? मैं इसके विरोध में कार्तिकेय को खड़ा कर देती हूं । कितनी मूर्खतापूर्ण चीजें हो रही हैं! लोग मेरे लिए "पाथेक फिलिप्स" नामक घड़ी ले आए । यह समय पर चलती ही न थी । मैंने कहा यह क्या है? यह कभी समय पर चलती ही नहीं है। हो सकता है मेरी चैतन्य लहरियां उस पर कोई जादू कर रही हों । तो मैंने यह घड़ी उनमें से एक को दे दी । मैंने कहा इसे पाथेक फिलिप्स को दिखाओ । श्रीमाताजी इससे उनके अहम् को चोट पहुंचेगी । मैंने कहा क्यों? क्योंकि वे स्वयं को सर्वोत्तम मानते हैं। मैंने कहा जो भी हो इस घड़ी को उनसे बदल लो । तब मैंने अपनी बेटी को कहा कि वह उसे ले ले । मैं तो कोई सीधी सादी चीज ले लूंगी । यह घड़ी भी रूपरेखाकारों की थी । अब यह रूपरेखाकार जेलों में है। रूस से आते हुए मैं इनमें से कुछ से मिली । वे एकदम बेकार लोग थे । कोई भी विचार यह कहीं से ले लेते हैं और उसे बहुत ऊंचे दामों पर बेचते हैं, और यदि आप बेवकूफ हैं तो आप इसे ले लेते हैं। क्या आपने देखा कि यह कार्तिये है? सहजयोगी सर्वसाधारण लोग हैं । अब ये लोग भी माफिया ही हैं और आपका अनुचित लाभ उठा रहे हैं। मैंने यह बात अपनी पुस्तक में भी लिखी है। कि यह उद्यमी आपको मूर्ख बनाने का प्रयत्न कर रहे हैं। आप साधारण वस्त्र पहनें । साधारण, हाथ से बने वस्त्र पहनने कहीं अच्छे होंगे बजाए उन वस्त्रों के जिनसे आप अटपटे दिखाई दें । ऐसे वस्त्रों से तो केवल आपके अहम् की ही सृष्टि होती है। तो लोगों की आदत होती है। मान लो मेरे पास

खाना खाने के कुछ बर्तन हैं। यह चाहे अच्छे न हों परन्तु लोग आकर पूछेंगे कि यह कहां से लिए । मैं नहीं जानती । मेरे विचार से किसी ने मुझे दिए थे । नहीं नहीं आप पता लगाइये क्योंकि यह बहुत अच्छे हैं। अगले दिन जाकर वह पूरे बाजार में वैसे बर्तन खोजेंगे । सहजयोग इसके बिल्कुल विपरीत है। मेरे विचार से आप सहजयोग पर निर्भर हैं। एक बार मेरे पति को एक चाय सैट पसंद आया । लन्दन में बहुत बड़ी-बड़ी दुकानें हैं । मैं वहां गई । "बाप रे बाप"। उसकी खोज में हम घूमते रहे । किसी ने कहा इसे देने के लिए हमें छः महीने लगेंगे, किसी सात महीनें और किसी ने आठ महीनें। आप हमें इसका आर्डर दे दें। मैंने विचार ही छोड़ दिया । तब सर सी. पी. ने कहा कि इन फैक्टरियों को क्या हो गया है? मैंने कहा इनके पास कुछ नहीं है। यह सभी कुछ निर्यात कर रहे हैं। जब मैं आस्ट्रेलिया गई तो हैरान थी कि विज्ञापन के लिए उन्होंने यह चाय सैट बहुत कम कीमत पर उपलब्ध कराए । आस्ट्रेलिया में आधी कीमत पर मुझे यह चाय सैट मिले ।

यदि आप में लालच नहीं है तो आपको हर वांछित चीज आराम से मिल जायेगी । अत्यन्त आराम से । परन्तु यदि आपमें लालच है तो परमात्मा आपको नचाते हैं । ठीक है! यह बात इतनी सहज है। किसी चीज का यदि आपको लालच नहीं है तो वह आपको मिल जायेगी । लालची प्रवृत्ति ने हमें दास बनाया हुआ है। इसके मैं एक हजार एक उदाहरण दे सकती हूं कि यदि आप कुछ भी नहीं मांगते, किसी चीज की इच्छा नहीं करते तो आपको आवश्यकता की हर चीज मिल जाती है। जिस भी चीज की आपको जरूरत होती है वह आपको मिल जाती है। परन्तु यदि आप इच्छा किए चले जाते हैं तो चीजों के पीछे पागलों की तरह दौड़ते रहते हैं । यह ले लो और जाओ । और तब चीज भी नदारद हो जाती है। इसीलिए कहा गया है कि निर्लिप्सा विकसित करो । कोई चीज यदि उपलब्ध है तो ठीक है और यदि नहीं है तो भी ठीक है। तब आप हैरान होंगे कि आपका चित्त अत्यन्त सूक्ष्म हो जाएगा । अब, मेरे विचार में, आपमें से किसी ने भी यह सुन्दर फूल नहीं देखे । इतनी सुन्दर कढ़ाई (Embroidery) है! क्या आप मुझे बता सकते हैं कि इस कलाकृति में कितने हाथ हैं । चौदह, अठाइस, इस ओर चौदह इस और अठाइस । तो आप किसी चीज को ध्यान से नहीं देखते और आपका चित्त महामाया बन जाता है। परन्तु यह कोई स्पष्टीकरण नहीं है। आपका चित्त यदि स्पष्ट है, सहज है तो आप वस्तु को केवल चित्त से स्पष्ट देख सकते हैं। चित्त स्वयं आपको वहां ले जाता है जहां आपने पहुंचना है। आप जो खरीदना चाहते थे वही वस्तु आपको मिल जाती है। यह कालीन कहां से आए, क्या आप मुझे बता सकते हैं? अधिकतर, यह रूस से आए हैं। रूस में मैंने कालीनों का यह कारखाना देखा । निर्यात की उन्हें समझ नहीं है। मैंने उनसे पूछा कि एक कालीन का मूल्य क्या है । उन्होंने कहा केवल बीस डालर । डाक्टर से मैंने पूछा कि अब क्या करें । हमें बहुत से कालीन खरीदने हैं। मैंने उनसे पूछा कि निर्यात के लिए इसका मूल्य क्या है? दो सौ डालर । मैंने कहा भारत में तो इसके विपरीत है! उन्हें यदि कोई चीज निर्यात करनी होती है तो उसका मूल्य कम होता है। मैंने इसका समाधान खोजा और बीस सहजयोगियों से जाकर एक एक कालीन खरीदने के लिए कहा । रूस के लोगों को वे बीस डालर में कालीन देते हैं।

अतः आप लोगों को समाधान खोजने चाहिए, समस्याएं नहीं । लालच एक समस्या है। बहुत बड़ी समस्या । इससे छुटकारा कैसे पाया जाए? कोई भी चीज खरीदते हुए हमें सोचना चाहिए कि यह वस्तु में किसके लिए खरीदूं । हां यह तो मेरे उस मित्र के लिए ठीक रहेगी । इस प्रकार से यदि आप अपने मस्तिष्क को शिक्षित करते हैं तो, आप हैरान होंगे, लालच दौड़ जाएगा और आपको आनन्द प्राप्त हो जायेगा । जिस प्रकार आप मुझे चीजें भेंट करना चाहते हैं और मैं आपको, इसी प्रकार अन्य लोगों के विषय में भी सोचें । ये सब भी बहन भाई हैं । कुछ देश अन्य देशों से मित्रता बनाते हैं। देने से लालच समाप्त होता है और आपकी इच्छाएं पूर्ण हो जाती हैं । यह इतना सुगम मन्त्र है। इतने चमत्कार देखने के बाद भी, आश्चर्य की बात है, आप नहीं समझ पाते कि हमारी जरूरतें पूरी कर दी जाएंगी । परन्तु यह वास्तविक जरूरत होनी चाहिए । इकठ्ठा करने की इच्छा नहीं । यह नाटक (स्विस बैंक लांड्री) बहुत अच्छा था । मैंने इसका आनन्द लिया । मैं जानती हूं कि मेरा देश इससे दुःखी है।

दूसरा नाटक जो इंग्लैंड के लोगों ने किया, वह दर्शाता है, कि पीलग्रिमस प्रोगैस एक अत्यन्त पुराना नाटक है जिसे मैंने बहुत समय पूर्व पढ़ा था । परन्तु इन्होंने जो दर्शाया वह वास्तविक तीर्थ-यात्रा थी । इन्होंने यह दर्शाया कि किस तरह से एक साधक गलत चीजें दर्शाता है। इन्होंने यह भी भली-भांति बताया कि उत्थान मार्ग की ओर बढ़ते हुए, सहजयोगी भी किस तरह भिन्न खाइयों में गिरता है। यह जानना आपके लिए आवश्यक है कि यदि आप सहजयोगी हैं तो आपको सावधान रहना होगा तथा अहम् तथा प्रति अहम् की बुराइयों से बचना होगा । पश्चिमी देशों में प्रतिअहम् की अपेक्षा अहम् की समस्या अधिक है। **अहम् को दूर करने का मात्र एक ही तरीका है कि आप स्वीकार कर लें कि आपमें अहम् है। आप यदि जानते हैं कि आपमें अहम् है तो अहम् समाप्त हो जाएगा । मात्र यह जानना आवश्यक**

है कि आपमें अहम् है। किसी चीज का अहम्; लोगों में तुच्छ चीजों का अहम् होता है। एक महिला बहुत अहंकारी थी । मैंने उसके विषय में पूछा तो मुझे बताया गया कि क्योंकि यह गुड़ियां बनाना जानती है इसलिए इसे बहुत अहंकार है । तो छोटी-छोटी चीजों का भी लोगों को अहंकार है। यह बात मेरी समझ में नहीं आती । यह सारी रूपरेखाकारिता भी अहम् पर आधारित है तथा आपको प्रदर्शन करने के लिए यह सब खरीदने पर बाध्य करती है। अत: नम्र बनने तथा समझने का प्रयत्न करें कि यह सारी लौकिक वस्तुएं हम अपने साथ नहीं ले जाएंगे। मैं इनका त्याग करने के लिए नहीं कह रही हूं और न यह कह रही हूं कि आप सन्यास ले लें । परन्तु आप इतना अवश्य जान लें कि आपके मुकाबले इन चीजों का मूल्य कुछ भी नहीं है। जब अहम् आता है तो यह मूर्खता भी आ जाती है। आप सोचते हैं कि कोई अच्छा वस्त्र पहनकर आपने अन्य लोगों को बहुत प्रभावित कर दिया है। आपके वस्त्रों से प्रभावित होने वाले लोग भी एक तरह से मूर्ख ही हैं। एक बार मैंने एक अंगूठी पहनी थी । उसे पहनकर मैं कुछ खरीददारी के लिए एक दुकान पर गई तो वहां सभी लोग मेरे सम्मुख नतमस्तक हो गए । मैंने सोचा कि यह लोग पहले मेरा कभी इतना सम्मान नहीं करते थे अचानक कैसे बदल गए हैं! उस दुकान पर एक महिला मुझे जानती थी । वह पूछने लगी कि क्या आपकी अंगूठी का नग वास्तविक है? मैंने कहा, हां । यह हमारे परिवार में चला आ रहा है। तो आपका परिवार बहुत धनी है। मैंने कहा नहीं यह हमारे पुरखों का है। मैंने तो इसे केवल पहना हुआ है। हे परमात्मा ! यह वास्तविक है, इसकी कीमत क्या होगी? मैंने कहा मैं इसकी कीमत के विषय में कुछ नहीं जानती । क्या तुम मेरे लिए एक मंगा सकती हो? छोटी छोटी चीजों को देखकर वे प्रभावित हो जाते हैं। हमारे अन्दर महानतम चीज तो हमारी आत्मा है। इस पर यदि आप गर्वित होंगे तो मूर्खतापूर्ण कार्य नहीं करेंगे । आप सभी लोग आत्मसाक्षात्कारी हैं और तीर्थ यात्रियों की अवस्था से बहुत ऊपर उठ चुके हैं।

अब महानतम बात यह है कि आप जानते हैं कि आप आध्यात्मिक लोग हैं और अपनी आध्यात्मिकता से एक प्रकार से मुझ पर भी प्रभुत्व जमाते हैं। आप सब यदि सामूहिक रूप से किसी चीज की इच्छा करें तो मैं इसे टाल नहीं सकती । आपको प्रसन्न करने के लिए मुझे यह स्वीकार करनी पड़ती है। आपकी इच्छा के कारण मैं बहुत से कार्य कर रही हूं । परन्तु इसका मुझ पर कोई प्रभाव नहीं होता । तो बच्चे जो चाहते हैं मैं उन्हें करने देती हूं । परन्तु अहम् का काबू में होना अत्यन्त आवश्यक है। एक अन्य बात जो मैं आपको बताना चाहती हूं और जिसे मैं कल नवरात्रि पूजा के कारण नहीं बता पाऊंगी । मैं सहजयोग में विवाहित लोगों से विशेषकर महिलाओं से बातचीत करना चाहती हूं । मुझे लगता है उनमें से कुछ अत्यन्त रोबीली और मूर्ख हैं। मेरे विचार से विवाह मधुमास है। मधु सार तत्व है और चांद (Honey Moon) शान्ति है। अब यदि महिलाएं झगड़ालू हैं, व्यंग्यात्मक हैं, लड़ाकी हैं तो पुरुषों के लिए पूरा नरक है। इसकी अपेक्षा यदि महिलाएं सार तत्व को जानती हैं तो उन्हें पति को प्रसन्न रखते हुए परिवार में शान्ति लानी चाहिए । आपके पति किस प्रकार प्रसन्न होते हैं, आपको यह समझना चाहिए । दूसरों को किस प्रकार प्रसन्न करें, आत्मसाक्षात्कारी लोगों का यह एक गुण होता है। हम अपने पतियों के लिए क्या करती हैं? क्या हम उन्हें प्रसन्न करने का प्रयत्न करती हैं? सर्वप्रथम उनकी पसन्द जान लें । मेरे पति (अच्छा हुआ वे चले गए) कहा करते थे कि तुम अपने बालों में फूल मत लगाओ । परन्तु महाराष्ट्र में सभी महिलाएं अपने बालों में वेणियां लगाती हैं। परन्तु जिस दिन से उन्होंने कहा तब से मैंने अपने बालों में वेणी नहीं लगाई । कोई बात नहीं । वे नहीं जानते थे कि मैं क्या हूं। इसलिए उन्होंने ऐसा कहा । परम्परा वादी परिवार से होने के कारण उन्होंने मुझे चूड़ियां पहनने के लिए कहा । मैंने सदा अपनी कलाइयों में चूड़ियां पहनीं हैं । इससे उन्हें प्रसन्नता मिलती है तो ठीक है। पति को प्रसन्न करने के लिए छोटे-छोटे कार्य किए जाते हैं । तब वो भी सोचते हैं कि मैं अपनी पत्नी के लिए क्या करूं? परन्तु शुरुआत महिला से होनी चाहिए क्योंकि महिलाएं समाज के प्रति जिम्मेदार हैं । पाश्चात्य संस्कृति यह नहीं बताती कि उनका क्या कार्य है। अर्थशास्त्र, राजनीति, धनार्जन, पुरुषों के कार्य हैं। मैं मानती हूं कि इसमें उन्होंने बहुत गड़बड़ की है। परन्तु आपका कार्य समाज को बनाना है। और इसके लिए आपको अपने बच्चों को व अपने पति को प्रसन्न रखना होगा। हर वक्त रौब जमाते रहना आपका कार्य नहीं है। छोटी-छोटी बातों द्वारा पति के रौब को भी निष्प्रभावित करते रहना आपका कार्य है। मैं आपको एक उदाहरण देती हूं । मेरे पति के कार्यालय में एक व्यक्ति थे । पति के मामले में मैं कभी दखलंदाजी नहीं करती । परन्तु उस व्यक्ति ने मेरे पति की संस्था को छोड़कर एक अन्य संस्था में नौकरी कर ली क्योंकि वहां उन्हें अधिक वेतन मिल रहा था । परन्तु उन्हें लगा कि नई संस्था बेकार है। इसलिए वे जहाजरानी निगम में वापस आना चाहते थे । परन्तु मेरे पति नियमाचरणों के मामलों में बहुत कठोर हैं। उन्होंने उसे निगम में रखने से इन्कार कर दिया । वह मेरे पास आया और सहायता करने के लिए प्रार्थना की । मैंने कहा यदि मैं उनसे कहूंगी तो वे बिगड़ जायेंगे । फिर भी मैं जानती हूं कि इस कार्य को कैसे करना है। मैंने अपने पति को बताया कि वह व्यक्ति मेरे पास आया

था । हां, तो अब क्या तुम मुझे इसके बारे में दुखी करोगी? नहीं नहीं मैं ऐसा कुछ नहीं करूंगी। फिर भी आप सोचें कि वह मेरे पास क्यों आया । उन्होंने पूछा क्यों आया? क्योंकि वह समझता है कि मैं आपसे अधिक उदार हूं । तुरन्त मुकाबला शुरु हो गया और उस व्यक्ति को नौकरी मिल गई। लन्दन में भी उस व्यक्ति ने मेरे पति की काफी सहायता की थी । तो जब भी हम अपने पतियों को वश में करना चाहते हैं, हमें यह कार्य अत्यन्त सहज ढंग से करना चाहिए । मूल बात पर अपनी अंगुली रखें । यदि छोटी छोटी चीजों के लिए आप पति पर रोब जमाओगी तो उसका कोई लाभ न होगा । आपका विवाह किसलिए हुआ है? मूर्खता या मधुमास के लिए? पश्चिम में विशेष कर इटली में, महिलाओं के विषय में हमारे बहुत बुरे अनुभव हैं। इंग्लैण्ड की लड़कियों ने भी मुझे बहुत कष्ट दिये । अब हमने उन्हें वर्जित कर दिया है। इसमें मैं कुछ नहीं कर सकती । शीलांग की एक लड़की का विवाह अमेरिका के एक व्यक्ति से हुआ । शीलांग के विषय में सोचें जहां रोज तीस कत्ल होते हैं। उस लड़की को अमेरिका जाने का अच्छा अवसर मिला । निःसन्देह अमेरिका भी कोई महान स्थान नहीं है। परन्तु उस लड़की ने अत्यन्त बचकाने ढंग से बर्ताव करना शुरू कर दिया । उसके पति ने मुझे बताया कि श्रीमाताजी उसे तो पर-पीड़न में आनन्द मिलता है। जब भी मैं उसे टेलीफोन करता हूं वह इतने व्यंग्यात्मक रूप में बात करती है कि मैं हैरान हो जाता हूं! मैंने कहा शीलांग की महिला का ऐसा आचरण ! मुझे विश्वास नहीं होता । उस व्यक्ति ने मुझे सभी कुछ बताया । कोई भी पुरुष इस प्रकार की बातों को नहीं सुनना चाहेगा । परन्तु वह लड़की समझती रही कि मित्रता में वह ऐसी बातें कर रही है। विवाहित जीवन में यह सब नहीं चलता । पुरुष नहीं चाहता कि उसकी पत्नी घोड़े पर बैठ कर चाबुक चला रही हो । उसके विवाह का अभिप्राय क्या है? प्रसन्नता, आनन्द, माधुर्य। ये बात करनी आवश्यक थी क्योंकि बहुत सी महिलायें समझती हैं कि वे कोई महान चीज हैं। कुछ के पास थोड़ा-सा धन है और कुछ के पास नौकरी । परन्तु आपका पहला कार्य समाज को तथा अपने पति को प्रसन्न रखना है। यह प्रथम कार्य है। स्त्री यदि पुरुष को प्रसन्न नहीं रख सकती तो वह हमारे लिए बेकार है। वह बेकार सहज योगिनी है। दफ्तर में काम करने वाले पुरुष के लिए आवश्यक है कि वह अपने अफसर को प्रसन्न रखे, यदि वह ऐसा नहीं कर पाता तो वह बेकार है, तो उसे नौकरी से निकाल दिया जाता है। इसी प्रकार पत्नी को अत्यन्त प्रेम पूर्वक पति के विषय में सोचना चाहिए, क्योंकि यह उसका कार्य है। इसी के लिए उसका विवाह हुआ है। अन्यथा उसे चाहिए कि विवाह न करे । किसी को भी समझाना कठिन कार्य है। क्योंकि पुरुष आक्रामक प्रवृत्ति तथा क्रोधी स्वभाव के होते हैं। परन्तु मैंने अभी अभी आपको बताया है कि किस प्रकार उनके क्रोध को काबू करना है । फिल्मों में मैंने अत्यन्त रोमांचक दृश्य देखें हैं। यह कभी घटित नहीं होते । कोई भी फिल्मी चरित्रों जैसा नहीं होता । तो आपको भी चाहिए कि उनसे फिल्मी नायकों जैसा होने की आशा न करें । आपको प्रेम करना होगा, सर्वप्रथम अपने पति को हृदय में उतारना होगा । यह आपका कर्तव्य है, इसके अतिरिक्त आप क्या करते हैं? शीलांग की इस लड़की के विषय में जान कर मुझे बहुत आघात पहुंचा। उस लड़के ने मुझे कहा कि "श्रीमाताजी आप चाहे मुझे जान से मार दें परन्तु उस लड़की को मैं नहीं बुलाऊंगा!" यह सत्य है कि वह लड़की आनन्ददायिनी नहीं है।

पुरुषों से मुझे यह कहना है कि यदि आपकी पत्नी ऐसी है तो उसका कारण जानने का प्रयत्न कीजिए । उसकी क्या समस्या है? क्यों वह रौब जमाती है? क्या आप भी यह सोचते हैं कि वह रौब जमाती है? अधिकतर पति बातचीत करते हुए कहते हैं कि पत्नियां रौब जमाती हैं? क्यों पत्नियां आप पर रौब जमाती हैं? आपमें ऐसी कौन सी कमी है जो वह ऐसा कर रही हैं? अन्तर्दर्शन यदि आप करें तो आप जान जाएंगे कि पत्नी को आप बहुत कम समय देते हैं। एक महिला अपने पति से तलाक लेना चाहती थी । मैंने पूछा क्यों? क्योंकि वह सदा काम पर ही गया हुआ होता है। मेरे लिए उसके पास कोई टाइम ही नहीं । मैंने कहा यदि तुम उसे तलाक दे दोगी तो फिर तो वह तुम्हें कभी मिलेगा ही नहीं । क्या तुम उसे तलाक देना चाहती हो । कम से कम कुछ समय तो वह तुम्हें देता है। तलाक यदि हो गया तो वह कभी भी तुम्हारे साथ न होगा । तलाक की बात मेरी समझ में नहीं आती । महिलाओं को ऐसी मूर्खतापूर्ण बातें नहीं करनी चाहिए । इसी कारण से यदि अपने पति को तलाक देना चाहती हो तो यह हास्यास्पद है। पुरुषों के लिए भी आवश्यक है, कि वे पत्नियों के लिए कुछ समय निकालें। उनकी ओर कुछ ध्यान दें और उनकी पसन्द की कुछ वस्तुएं उन्हें दिलवाएं । मैं अब एक बार फिर तुम्हें अपना उदाहरण दूंगी। मेरे पति कभी मेरे लिए फूल नहीं लाए । आप सब मेरे लिए फूल लाते हैं परन्तु वे तो मेरे जन्मदिन पर भी मेरे लिए फूल नहीं लाए । मैंने महसूस किया कि इस व्यक्ति को फूलों की समझ ही नहीं है। वे नहीं जानते कि गुलाब क्या है और कोई अन्य चीज क्या है। इसलिए वे फूल नहीं लाते कि कहीं वे कुछ गलत न ले जाएं । गुलाब की जगह कहीं कैक्टस ही न ले जाएं । एक दिन उन्होंने स्वीकार किया कि मुझे फूलों का ज्ञान नहीं है। गुलाब के अतिरिक्त मैं कुछ नहीं जानता और

गुलाब में भी वे भ्रम में पड़ जाते हैं। तो अज्ञान के वश आपके पति कोई कार्य नहीं करते तो कोई बात नहीं परन्तु पुरुषों को चाहिए कि वे अपनी पत्नियों की पसन्द को समझें। वह क्या चाहती है । पुरुषों की अपनी ही एक शैली होती है। एक बार फिर मैं अपना उदाहरण दे रही हूं । मेरे पति मंहगी चीजें खरीदने के आदी हैं। मैं उनसे कह चुकी हूं कि वे मेरे लिए कुछ न खरीदा करें । तुम्हें पसन्द नहीं आती? नहीं नहीं मुझे पसन्द आती हैं परन्तु इतनी महंगी चीजें आपको नहीं खरीदनी चाहिए । स्काच हाऊस से वे मंहगी स्वेटरें खरीदना चाहते हैं। एक स्वेटर ढाई सौ पौंड की होती है और मेरे पास न जाने कितनी पड़ी हैं। मैंने कहा कि यह स्वेटरें मैं स्विटजरलैण्ड से मंगा लूंगी । वहां पर यह बहुत सस्ती हैं। फिर वे सदा मेरे लिए कश्मीरी कोट लाना चाहते हैं। मेरे पास कम से कम दस कोट हैं फिर भी वह सदा कश्मीरी कोट ही देना चाहते हैं। और यह मैं अपनी बेटियों और नातिनों को देती जा रही हूं । क्या करूं । उनके मन में कोई बुराई नहीं है। परन्तु वे कुछ जानते ही नहीं । भारत में एक बार पूजा में जाने से पूर्व वो मेरे लिए एक साड़ी खरीदने के लिए गए । मेरा एक भतीजा उनके साथ गया । दुकान पर जाकर कहते हैं कि आपके पास जो सबसे महंगी साड़ी है वह मुझे दो । दुकानदार ने भी यह समझ लिया कि कोई बिल्कुल अन्जान व्यक्ति आ गया है। एक साड़ी लाकर उन्होंने दिखाई और कहा यह सबसे महंगी साड़ी है और इसकी कीमत है 45000 रुपये । ठीक है, ठीक है, मेरे पास एक कार्ड है क्या आप इसे स्वीकार करेंगे? और वे साड़ी खरीद लाए । यह इतनी भारी थी मानो जिरह बख्तर हो! कहने लगे कि तुम पूजा के लिए इसे अवश्य पहनो । इसे पहनकर मैं एक विशालकाय योद्धा की भांति चल रही थी । आपकी मां का एक नाम है "अति सौम्या-अति रौद्रा"। वे अत्यन्त सौम्य हैं और अत्यन्त रौद्र हैं । उस साड़ी को पहनकर मैं नहीं जानती कि मैं क्या लग रही थी ! अपनी कुर्सी से मैं चिपकी हुई बैठी थी । इतना सारा वजन उठा कर मेरी समझ में नहीं आ रहा था कि खड़ी कैसे होऊं ? घर आकर मैंने उसे संभाल कर एक ट्रंक में रख दिया । उन्होंने पूछा तुम इसे पुनः कब पहनोगी? मैंने कहा कि वह साड़ी किसी विवाह के अवसर पर पहनने के लिए रख दी है। इसे फिर कभी पहनूंगी। वायदा करके वह साड़ी मैंने रख दी, क्योंकि उन्हें साड़ियों का ज्ञान ही नहीं है। वो यह भी नहीं जानते कि असली क्या है और नकली क्या है। पर, कोई बात नहीं तुम्हें उनका हृदय देखना होगा कि किस प्रकार वो दे रहे हैं और कितने प्रेम से । बेचारे कुछ नहीं जानते उनके लिए सूटों के कपड़े हमेशा मैं खरीदती हूं । एक बार कहने लगे कि इस बार मैं खरीदूंगा । मैंने कहा ठीक है। इतना बेकार कपड़ा वो ले के आए कि उनके दफ्तर के लोगों ने कहा कि "सर यह आपको पसंद तो नहीं है।" उन्होंने वो सूट फैंक दिया और कहने लगे कि अब मैं कभी खरीदने नहीं जाऊंगा । तुम जाकर मेरे लिए खरीद लाओ । महिला को यदि इस चीज का ज्ञान हो कि पुरुष पर कौन सा रंग फबता है तो बहुत अच्छी बात है, क्योंकि लोगों की पसंद भी पुरुषों के लिए महत्वपूर्ण है। एक बार मैंने अपनी बैठक को गुलाबी और काले रंग मिलाकर रंग करवाया । यह बहुत सुंदर रंग है, गर्मजोशी का रंग । कहने लगे यह क्या रंग तुमने करवा दिया? तुम्हें कोई और रंग करवाना चाहिए था मैंने कहा, ठीक है कल हमारे यहां पार्टी है, इसके पश्चात मैं यह रंग बदलं दूंगी । अगले दिन मेहमान आए और कहने लगे, क्या रंग है! क्या यह आपने बनाया है? मेरे पति मेरी ओर देखने लगे । मैंने कहा क्या मैं इस रंग को बदल दूं? नहीं, नहीं । पुरुष जनता की राय की बहुत चिंता करते हैं, अतः तुम्हें देखना चाहिए कि तुम उनके लिए किस प्रकार की राय कायम करवाती हो, ताकि वह तुम्हारी प्रशंसा कर सकें। यह सब विधियां हैं। यह छोटी-छोटी बातें हैं फिर भी आपको समझना होगा । पुरुष कभी-कभी नाराज हो जाते हैं, परन्तु कोई बात नहीं । वास्तव में किसी और पर यदि वह नाराज होंगे तो भी आकर वो तुम पर बरस पड़ेंगे, यह अच्छी बात है क्योंकि यदि वह किसी अन्य से ऐसा बर्ताव करेंगे तो पिटेंगे। तुम कम से कम उन्हें पीटोगी तो नहीं । पुरुषों के विषय में यदि आप थोड़ी सी बातें जान लें तो सारा कार्य हो सकता है। निःसंदेह कुछ अत्यन्त बेतुके पति-पत्नियां भी होते हैं। उनके लिए सहज योग में तलाक का प्रावधान है। तो मैं आपसे बताना चाहती थी कि आपको बहुत अच्छी गृहणियां और बहुत अच्छी गृहलक्ष्मियां बनना है। यह मैं आपको इसलिए बता रही हूं क्योंकि मेरा गृहलक्ष्मी चक्र मुझे परेशान कर रहा है। सभी डॉक्टरों ने मुझे इसके विषय में बताया है। इसका कारण यह है कि सामूहिक रूप से गृहलक्ष्मियां ठीक नहीं है। क्योंकि वह अच्छी गृहणियां नहीं हैं। अब स्विस महिलाओं को ही लें। मैं सहमत हूं कि वह बहुत अच्छी हैं, परन्तु वे अत्यधिक सफाई पसंद हैं। सफाई के पीछे स्विस महिलाएं पागल हैं। आप पांच मिनट भी उनसे बातचीत नहीं कर सकते । उनके साथ यदि आप बैठें हैं तो भी वे झाड़-फूंक करती ही रहती हैं। सफाई, सफाई, सफाई ! स्विस महिलाएं इस मामले में अति कठिन हैं। अभी मैं इलित्रिया में थी, किसी ने मुझे बताया कि इलित्रिया की महिलाएं स्विस महिलाएं कहलाती हैं। तो घर यदि थोड़ा सा अव्यस्थित भी है तो कोई बात नहीं । भारत की कोई महिला ऐसा नहीं करेगी, मेहमान बैठे हैं और गृहणी हूवर (सफाई मशीन) ले कर खड़ी है। और यदि कुछ टूट जाए ! भारत में यदि थरमामीटर

टूट जाए तो कहते हैं, बहुत अच्छा हुआ, अब बुखार ही नहीं चढ़ेगा । परन्तु पश्चिम में यदि थोड़ी सी कॉफी बिखर जाए तो तुरन्त वो सभी मेहमानों के सामने ही सफाई मशीन या कुछ अन्य चीज सफाई के लिए ले आएंगे । यह आवश्यक नहीं है, यह अत्यन्त सूक्ष्म प्रकार का भौतिकवाद है। मेहमान जब बैठे हुए हैं तो उनकी उपस्थिति में यह सब करने की आपको क्या आवश्यकता है। परन्तु पश्चिमी महिलाएं इस बात को समझती ही नहीं । भारत में यदि किसी घर में आप जाएं तो उनकी रंग योजनाएं भिन्न-भिन्न होती है। दक्षिण भारत की रंग योजना भिन्न है, सभी की अपनी पसन्द है। घर में घुसते ही पश्चिमी महिलाएं कह उठेंगी, क्या रंग योजना है! आपने कितनी अच्छी चीज खरीदी है! हे परमात्मा! सामने-सामने वे तुरन्त आलोचना करने लगेंगी ।

तो दूसरी बात यह है कि सदैव दूसरों की भावनाओं का ख्याल रखें। महिलाएं अन्य लोगों की भावनाओं का पूरा ध्यान रखने के लिए होती हैं। वे क्या सोचते हैं । किसी भारतीय घर में यदि वे जाती हैं तो वहां बना हुआ खाना वे बड़े आनन्द से खाती हैं फिर भी ये दर्शाने का प्रयत्न करती हैं कि वो लोग बहुत निम्न हैं। मैं कहती हूं कि यह पश्चिमी संस्कार है। यदि किसी ने कोई कपड़े पहने होंगे तो वे उस पर टिपण्णी करेंगी । अच्छे भारतीयों को ऐसा करते आप नहीं पाएंगे । आधुनिक भारतीयों को मैं नहीं जानती कि उनके रुझान कैसे हैं। परन्तु एकदम से वे ऐसी बातें कह देते हैं जिससे चोट पहुंचती है। महिलाओं को ऐसा नहीं करना चाहिए। इसके विपरीत सदैव प्रशंसा करें, इसमें क्या हानि है? किसी चीज की प्रशंसा करके आपका व्यापार कम नहीं होता। कितनी अच्छी चीज है! कितनी अच्छी साड़ी है! कितने अच्छे कपड़े हैं! ऐसा कहने में क्या नुकसान है। आप वास्तव में अपने माधुर्य का आनन्द लेंगे । ऐसा कहना झूठ बोलना नहीं है। आवश्यकता से अधिक ईमानदारी भी जरूरी नहीं । आपको यदि कोई चीज अच्छी नहीं लगती तो यह कहना आवश्यक नहीं कि यह मुझे पसन्द नहीं है। यह शब्द ही सहजयोग से चला जाना चाहिए कि मुझे यह पसन्द है और मुझे यह पसन्द नहीं । मैं यदि ऐसा कहूं तो कितने लोग सहजयोग में रहेंगे? अत:- मुझे पसन्द है मुझे पसन्द नहीं है को त्याग दिया जाना आवश्यक है। पसन्द करने या न करने वाले आप कौन हैं?

आपकी आत्मा और हृदय के विषय में क्या है? तो एक बार फिर से वही चीज आती है कि महिलाओं का बहुत बड़ा हृदय होना चाहिए, बहुत सुन्दर हृदय । आपकी गरु एक मां हैं। अत: आपको बहुत अच्छी माताएं और बहुत अच्छी पत्नियां बनना होगा और आपका हृदय अत्यन्त विशाल होना चाहिए ताकि यह सारा स्वार्थ समाप्त हो सके । आपके संकुचित हृदय के कारण यह बना हुआ है। आपका हृदय यदि विशाल हो जाए तो सारा स्वार्थ धराशायी हो जाएगा । मैंने यह सब इसलिए कहा क्योंकि मुझे विवाहित महिलाओं के विषय में बहुत सी शिकायतें प्राप्त हुई हैं, कुछ भारतीय महिलाओं के विषय में भी । इसलिए मैं आपको बता रही हूं। रूसी महिलाओं की बहुत सराहना हो रही है। वे अत्यन्त सन्तुष्ट आत्माएं हैं जिनकी जरूरतें बहुत कम हैं तथा जो लालची नहीं हैं। आश्चर्य की बात है! साम्यवाद ने उनका इतना हित किया है। साम्यवाद की अतिशयता ने उन्हें एक ऐसे क्षेत्र में धकेल दिया है जहां उनका आधिपत्य विवेक ही समाप्त हो गया है। उनमें आधिपत्य भाव नहीं है। उनकी सरकार ने कहा तुम यह फ्लैट ले लो और उनकी देखभाल करो । उन्होंने कहा कि हमें नहीं चाहिए, हम वैसे ही ठीक हैं। सरकारी नौकरों को कहा गया कि तुम अपनी कारें ले सकते हो, परन्तु उन्होंने कहा कि हमें नहीं चाहिए। क्योंकि कार का स्वामित्व इतनी बड़ी सिरदर्दी है। वे ऐसे लोग नहीं हैं जो स्वामित्व के विषय में जागरूक हों। नि:सन्देह अब उनमें भी कुछ अटपटे लोग हैं। मुझे उनका नाम भूल गया है जो वित्तमंत्री थे । जिनेवा में उन्होंने कुछ रहस्य की बातें जान ली और बहुत सारे तथाकथित सुधार लेकर लौटे । अत: अब लेनिनग्राद और मास्को बहुत मंहगे हो गए हैं। यह सारा स्विटजरलैण्ड का प्रभाव है। फिर भी वहां के लोग बहुत अच्छे हैं। वहां से तथा रोमानिया से आई हुई महिलाओं का बहुत सम्मान होता है। अब सभी लोग रूस, रोमानिया या कीव की लड़कियां ही मांगते हैं। परन्तु इस बार वे नहीं आई। उनके न आने का हमें खेद है। उनकी कमी हमें खल रही है।

अंत में मुझे आपको बताना है कि अरुण आप्टे ने एक सुन्दर पुस्तक लिखी है। आप सबको खरीदनी चाहिए । इस पुस्तक में आप सब भारतीय संगीत के विषय में जान सकेंगे। कहा जाता है कि इस संगीत का प्रार्दुभाव ओंकार से हुआ । यह अत्यन्त विवेकशील संगीत है। जो संगीतज्ञ मेरे सम्मुख पाश्चात्य संगीत गा रहे थे वह ठीक था परन्तु इसमें तालएक्य का अभाव था । इसमें माधुर्य न था । वे सोचते हैं कि वे अपने हृदय के माध्यम से गा रहे हैं। अस्वाभाविक रूप से वे प्रभाव उत्पन्न करना चाहते हैं। कई हिस्सों में - एक शब्द और फिर दूसरा शब्द - गाने की कोई आवश्यकता नहीं है। इसमें न माधुर्य है और न ही प्रसार । जबकि रूसी लोकगीत माधुर्यमय थे । परन्तु चिन्ता न करें, अमेरिका के लोग, इस क्षेत्र पर भी हमला कर रहे हैं। संगीत का अर्थ है कि यह आपको प्रसन्न करे, आपका मनोरंजन करे, न कि यह आपको उदास कर दे । यह भावनाएं यदि आपमें हों तब आप इस

प्रकार कहने का प्रयत्न करें । तब आप कहें कि मुझे यह समस्या है परन्तु मैं इस पर काबू कर लूंगा । आप क्योंकि सहजयोगी हैं अतः आपको विजय दर्शानी होगी । संगीत में अपनी विजय प्रकृति को दर्शाना होगा । मैं अन्य लोगों की बात नहीं कर रही, वे तो रोते, चिल्लाते और गाते रहते हैं। परन्तु इसमें माधुर्य नहीं होता । यह केवल टुकड़ों में होता है। आर्केस्टा भी कभी आश्चर्यचकित नहीं करते । कें-कें-कें करता रहता है। परन्तु भारतीय आर्केस्टा माधुर्यमय है। यह मन्द समीर की तरह से बहता है। दोनों में यह अन्तर बहुत खराब है। तो गाने वाले संगीतज्ञों से मैं अनुरोध करूंगी कि गाने का यह अभिप्राय नहीं कि इसमें ऐसे शब्दों का प्रयोग हो जिन्हें कोई न समझ सके । संगीत में शब्द स्पष्ट होने चाहिए और इनमें माधुर्य होना चाहिए । भारतीय रागों में माधुर्य है परन्तु योरोपियन संगीत में शब्द हैं तो बोल नहीं हैं। अतः आप लोग धुन आदि का आनन्द लेते हैं। आप भाषा जानते हैं या नहीं इससे कोई अन्तर नहीं होता । तो पाश्चात्य संगीत में जब आप माधुर्य का मिश्रण कर सकेंगे तो यह कितना भिन्न हो जाएगा! यह पुस्तक आपको यह सब सिखाएगी । आप इसे खरीदें और समझें कि संगीत किस प्रकार आपको रोगमुक्त करके आनन्द प्रदान कर सकता है। संगीत के मूल को, इसके सारतत्व को जानें और तब आप इसका पुष्पीकरण करें। मुझे विश्वास है कि यदि भारतीय संगीतज्ञ पाश्चात्य संगीत को अपना लें तो इसकी स्थिति बहुत बेहतर हो जाएगी । मुझे समझ में नहीं आता, यह लोग अत्यन्त प्रसिद्ध हैं और लोग सोचते हैं कि यह बहुत अच्छा कमाते हैं। अमेरिका में कोई भी इस प्रकार से कमा सकता है। परन्तु इसे शुद्ध संगीत बनाने के लिए आपके पास भारतीय संगीत का आधार होना आवश्यक है। तब इसे आप मनचाहे ढंग से विस्तृत कर सकते हैं। भारतीय संगीत को समझने के लिए कृपया आप यह पुस्तक खरीदें । इसे पढ़ें और आपको भारतीय संगीत का सार पता चल जाएगा । अंत में, आज नवरात्रि का चौथा दिन है और मुझे इन्होंने कुछ ऐसे नाम दिए हैं जो वास्तव में भयंकर हैं। परन्तु यह वह लोग होंगे जिन्होंने बहुत कष्ट उठाया है और राक्षसों का वध करने के लिए मां से प्रार्थना कर रहे हैं। अब एक प्रकार से यह सब स्वाभाविक रूप से मारे जाएंगे, केवल यदि आप लोग विवेक से कार्य लें । आप लोग ही इस कार्य को कर सकते हैं। अपनी जरूरत से अधिक चीजें यदि आप इकट्ठी न करें, इन चीजों को बचाकर यदि आप स्वाभाविक चीजें और पृथ्वी से प्रेम करें तो मुझे विश्वास है यह सब कार्यान्वित हो जाएगा । पृथ्वी मां स्वयं इसे कार्यान्वित करेंगी । आप भूचालों को जानते हैं। अब कोई भी चर्च नहीं जाता । मैं कुछ नहीं करती । यह पृथ्वी मां है। मैंने कुछ नहीं किया । नष्ट हुई कलाकृतियों का मुझे खेद है। अब आप देखें, कि प्रकृति किस प्रकार कार्य करती है! इन्डोनेशिया के ऊपर के मुसलमान लोग धुएं से पीड़ित हैं। मैंने यह सब नहीं किया । आप यदि कुछ गलत करने लगते हैं तो यह लौटकर आप पर पड़ता है। हर क्रिया की प्रतिक्रिया है। तो आपकी मुखाकृतियां सहज होनी चाहिए । आप सहज होने चाहिएं । आपको विकृत लोगों जैसे नहीं होना चाहिए । आप सहज हैं और आपको सहज स्वभाव होना चाहिए । मुझे खेद है कि मैंने इतना अधिक समय लिया । कल मैं इन सब चीजों के बारे में बात नहीं कर पाऊंगी । आपको सोचना चाहिए कि हमारी मां हमें प्रेम करती है। वो चाहती है कि हमारा परिवार बहुत अच्छा हो तथा हम अपने बच्चों की देखभाल कर सकें । इसीलिए मैंने सभी स्त्री-पुरुषों को शिक्षा दी है। पत्नीभक्त हो जाना अच्छा है। इसमें कोई हानि नहीं है। पत्नीभक्त का यह भी अभिप्राय नहीं कि आप दब्बू हो जाएं । परन्तु पत्नी को प्रसन्न करने में क्या हानि है? इसका अभिप्राय यह भी नहीं है कि पत्नी आपको रौब दे । मूर्खतापूर्ण चीजों की आज्ञा आपको नहीं देनी चाहिए । महिलाओं को भी यह समझना आवश्यक है कि उसका परिवार उसके माता पिता और श्रीमाता जी से अधिक महत्वपूर्ण है, क्योंकि मैं खुशहाल परिवार को देखकर ही खुश हूं। आप सबको हार्दिक धन्यवाद ।

सहजयोग - पूर्ण शान्ति का एकमात्र स्रोत

(हिन्दुस्तान टाइम्स-दिल्ली 7-04-1997)

"व्यक्ति यदि मानसिक शान्ति तथा मानव एकता चाहता है तो उसके लिए सहजयोग एक मात्र मार्ग है," यह शब्द कहे सहजयोग विज्ञान की प्रतिष्ठाता डॉ. निर्मला देवी ने। डॉ. निर्मला देवी ने सहजयोग का संदेश विश्व के बहुत से देशों में दिया है। अन्तर्राष्ट्रीय एकता संस्थान द्वारा दिल्ली में आयोजित किए गए एक उत्सव के अवसर पर भाषण देते हुए उन्होंने यह बात कही थी । भूतपूर्व राज्यपाल श्री जी.सी. सक्सेना और श्री बी.सत्यनारायण रेड्डी भी इस अवसर पर उपस्थित थे । **डॉ. निर्मला देवी ने कहा कि विश्व शान्ति के लिए लोगों में सामूहिक चेतना का होना अत्यन्त महत्वपूर्ण है और सामूहिक चेतना केवल आत्मसाक्षात्कार के पश्चात ही आ सकती है।** उन्होंने सहजयोग के चिकित्सकीय

लाभों के विषय में तथा विश्व के भिन्न देशों में इसकी लोकप्रियता के विषय में भी बताया । उन्होंने कहा कि पूरे विश्व के सहजयोगी एक दूसरे की समस्याओं से परिचित हैं तथा वे बहुत से चमत्कारिक कार्य करने में सक्षम भी हैं। अन्तर्राष्ट्रीय एकता संस्थान के महासचिव श्री आर.एन.अनिल ने घोषणा की कि इस वर्ष का एकता पुरस्कार अन्तर्राष्ट्रीय समिति के कार्य में योगदान के लिए डॉ. निर्मला देवी को दिया जायेगा। अन्तर्राष्ट्रीय सहज योग अनुसंधान एवं स्वास्थ्य केन्द्र, नई मुम्बई, के निदेशक डॉ. उमेशराय ने सहजयोग के चिकित्सकीय लाभों, विशेषकर उन बीमारियों में जिनका इलाज आधुनिक चिकित्सा प्रणाली के पास नहीं है, के विषय में बताया । उन्होंने कहा कि आधुनिक चिकित्सा प्रणाली के पास बहुत से मनोदैहिक रोगों का कोई इलाज नहीं है, जिसके कारण रोगी को पूरा जीवन औषधियों पर निर्भर रहना होता है।

भिन्न अन्य सम्बन्धित रोगों के साथ-साथ सहजयोग उच्च तनाव, मिर्गी, अनिद्रा, मधुमेह, माईग्रेन, श्वासदमा आदि रोगों में अत्यन्त लाभकारी है। डॉ. राय ने बताया कि गहन अनुसंधान तथा अनुभव ने यह प्रमाणित कर दिया है कि सहजयोग अभ्यास से मनोदैहिक रोगों का इलाज कहीं अधिक प्रभावशाली ढंग से किया जा सकता है। मिर्गी रोगियों के विषय में बताते हुए उन्होंने कहा कि पारम्परिक औषधियों से 40% रोगी ठीक नहीं हो पाते । इसके विपरीत सहजयोग अभ्यास से 80% मिर्गी रोगी ठीक हो जाते हैं। उच्च तनाव एवं हृदय रोगों के इलाज में सहजयोग अभ्यास के लाभों के विषय में उन्होंने विस्तारपूर्वक बताया । डॉ. निर्मला देवी ने वर्ष 1970 में सजहयोग की खोज की थी और शनैः शनैः यह विश्व के बहुत से देशों में लोकप्रिय होता जा रहा है। रोगियों के इलाज के लिए मुम्बई में एक संस्थान की स्थापना की गई है जहां ब्रह्माण्डीय चैतन्य लहरियों से रोगों का इलाज किया जाता है। आत्मसाक्षात्कार का उनका कार्यक्रम अब विश्व के 65 से भी अधिक देशों में चल रहा है।

एक योगी की अनुभूति

न्यूयार्क कार्यक्रम समापन होने पर सामान बांधा जा रहा था । एक योगी मेरे पास आए और सहायता के लिए मुझसे कहा । हम उसकी कार तक दौड़कर गए और 'मैटा माईंड ऐरा' की बीस प्रतियां उठाई क्योंकि श्रीमाताजी ने उन्हें चर्च के पीछे, जहां वे अतिथियों से भेंट कर रही थी, मंगवाया था।

इस प्रकार मुझे एक छोटे कमरे में श्रीमाता जी का सामीप्य प्राप्त करने का मौका मिला । तभी एक महिला श्रीमाता जी से मिलने आई परन्तु उस योगी को जो कि एक डाक्टर था, श्रीमाता जी ने अपने समीप बुलाया । जब वह लौटा तो मैंने उससे पूछा कि क्या हुआ? उसने बताया कि उस महिला की अंगुली कट जाने से उसकी मध्यमा अंगुली की संवेदना समाप्त हो गई थी और अंगुली के सिरे पर जलन हो रही थी । श्रीमाता जी ने अपना चित्त उस पर डाला और अंगुली तुरन्त ठीक हो गई । मैंने स्वयं को धन्य महसूस किया । आज तक मैंने साक्षात् में कभी श्रीमाता जी को देखा नहीं था और अब लगभग पूरी रात श्रीमाता जी के इतना समीप रहने का अवसर मुझे प्राप्त हो गया है।

जुनेटीन्थ (JUNETEENTH) क्या है?

प्रथम जनवरी 1863 को राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन ने एक स्वतन्त्रता घोषणा पर हस्ताक्षर किए । जिसके अनुरूप उन्होंने यूनियन से सम्बन्ध विच्छेद करने के इच्छुक राज्यों के दासों को स्वतन्त्र कर दिया । परन्तु दासों के मालिकों ने यह समाचार उनसे छिपाकर रखना चाहा । 19 जून 1865, को ढाई वर्ष पश्चात् जब तक संघ की सेनाएं गनवेल्सटन, टेक्सास नहीं पहुंची तब तक दास लोग अपनी स्वतन्त्रता के विषय में न जान सके । आज जुनेटीन्थ, अफ्रीकन अमेरीकी लोगों की स्वतन्त्रता का प्रतीकात्मक उत्सव है। यह उनका मुक्ति दिवस है। यह एक दिवस है, एक सप्ताह है और कुछ क्षेत्रों में एक माह है जिसमें सभी प्रकार के उत्सव होते हैं।

श्रीमाता जी का सन्देश

ईसा मसीह पूजा 1997 (गणपति पुले)

ईसा मसीह के जन्मदिन के इस शुभ अवसर पर मैं आप सबको मुबारकबाद देती हूं और नववर्ष में आपकी समृद्धि की कामना करती हूं । यह लोग जो नागपुर अकादमी से आए हैं इन पर मैं हैरान हूं कि इतने कठिन भारतीय संगीत को इतनी सुगमता से इन्होंने पकड़ लिया । कुछ लोग तो केवल दो माह पूर्व ही आए हैं। कल्पना करें कि किस प्रकार संगीत के विद्यार्थी अपना पूरा पूरा जीवन शास्त्रीय संगीत सीखने में लगा देते हैं और किस प्रकार इतनी जल्दी इन लोगों ने इसे सीखा है। ये लोग कहते हैं कि ऐसा सहजयोग के कारण हुआ । परन्तु यह तो वास्तविक चमत्कार है। यहां तक की भारतीय संगीतज्ञ भी आज आश्चर्यचकित हैं। जिस प्रकार महान् उस्तादों की तरह से ये गा रहे थे, मेरी समझ में नहीं आता कि वे किस प्रकार इतना सीख पाए ! मैं जानती हूं कि मेरे परिवार में बहुत अधिक संगीत है और जो लोग संगीत में

दिलचस्पी रखते थे वे प्रात: काल बहुत जल्दी उठकर तीन घंटे और सांयकाल भी तीन घंटे इसका अभ्यास करते थे । जबकि ये लोग उन देशों से आए हैं जहां भारतीय संगीत का बिल्कुल ज्ञान नहीं है, फिर भी इतने जल्दी इन्होंने इसे पकड़ लिया है। संभवत: अपने पूर्व जन्मों में ये भारत में रहे हैं या ये अत्याधिक प्रतिभावान हों । इसका वर्णन मैं नहीं कर सकती । वास्तव में यदि यह सहजयोग के कारण से है तो मैं अवश्य कहूंगी कि सहजयोग चमत्कारों का सृजन करता है-आन्तरिक एवं बाह्य चमत्कार । अभी तक मैंने बाह्य चमत्कार देखे थे परन्तु अब यह आन्तरिक चमत्कार है कि जिन लोगों ने कभी भारतीय संगीत नहीं गाया, कभी भारतीय संगीत नहीं सुना इतना अच्छा गा रहे हैं । परमात्मा आपको धन्य करें ।

<u>एक बालक की अनुभूति :-</u> 'जब मैं ध्यान करने के लिए बैठता हूं तो तीव्र शीतल लहरियों के कारण मुझे बहुत अच्छा लगता है। मेरी इच्छा करती है कि मैं सारा दिन ये शीतल लहरियां लेने के लिए बैठा रहूं । मुझे लगता है कि मेरी आत्मा मेरे सारे चक्रों को शुद्ध कर रही है। तब मुझे कोई चीज अपने सहस्रार की ओर जाते हुए महसूस होती है। जब तक सम्भव होता है मैं इन शीतल लहरियों का आनन्द लेता हूं । ध्यान से उठने पर अपने मस्तिष्क से मैं कहता हूं, "अगली ध्यान धारणा होने तक मैं प्रतीक्षा नहीं कर सकता ।"

नानक चुघ
कक्षा 5
सहज पब्लिक स्कूल
तालन

सूफी धर्म एवं सहजयोग

गंगा-यमुनी तहजीब तथा इस्लामी तालीम के गढ़ के रूप में विख्यात लखनऊ शहर ने इस्लामी तालीम समूह द्वारा आयोजित "आत्मसाक्षात्कार के माध्यम से कयामा का आगमन" संगोष्ठी में हाल ही में सूफी धर्म एवं सहजयोग का सम्मिश्रण देखा ।

विश्व के भिन्न देशों से मुस्लिम पेशेवरों का मिश्रित यह समूह लोगों को प्रेरणा देने का गंभीर प्रयत्न कर रहा है कि मानव के सूक्ष्म शरीर में ही मोक्ष प्राप्ति का मार्ग है। इन्होंने कुरान में वर्णित 'सात स्वर्गों' की तुलना सहजयोग में श्री माताजी श्री निर्मला देवी द्वारा बताए गए सात चक्रों से करने का प्रयत्न किया ।

तुर्की के सुप्रसिद्ध सूफी विद्वान हुसैन ताउप (HUSSAN TAUP) ने जो कि इस्ताम्बुल से आए थे, सम्मेलन का शुभारम्भ चक्रों (चेतना) के सात स्वर्गों का विस्तारपूर्वक वर्णन करते हुए किया । इनका वर्णन पैगम्बर मोहम्मद ने भी किया है।

उन्होंने चेतना की हर स्थिति का वर्णन किया । उनके अनुसार सबसे महत्वपूर्ण स्थिति वह है जब परमात्मा मनुष्य से प्रसन्न हो जाता है। तब परमात्मा मानव के माध्यम से देखता और सुनता है। अन्तिम स्थिति में मानव परमात्मा की इच्छा से आच्छादित हो जाता है।

यह वह अवस्था है जिसमें मानव को शान्ति प्राप्त हो जाती है तथा सर्वशक्तिमान परमात्मा से उसका योग हो जाता है। जीवन पर्यन्त मुल्ला, प्रचारक एवं इमाम रहे श्री ताउप इस सम्मेलन की प्रेरणा शक्ति थे ।

आस्ट्रेलिया में मेलबोर्न हस्पताल में कार्यरत पाकिस्तानी डॉ. अमजद अली ने चक्रों की इस्लामी और सूफी व्याख्या की । प्रथम चक्र मूलाधार सूफी धर्म में कलाबिया (QALABIYA) और इस्लाम का अलाम-ए-फानी (ALAM-E-FANI) है। इसी प्रकार स्वाधिष्ठान चक्र सूफी धर्म में नफासिया (NAFSIYA) है और इस्लाम में नासौत (NA-SOUT) है, नाभिचक्र सूफी धर्म की कालदिया (QALDIYA) और इस्लाम का ला-हौत (LA-HOUT) है। अनहद् सूफी धर्म में सिरिया (SIRRIYA) और इस्लाम में साहौत (SA-HOUT) है: विशुद्धि सूफी धर्म में रूहिया (RUHIYA) तथा इस्लाम में मलखौत (MALAKHOUT) है : अगन्य सूफी धर्म में खाफिया (KHAFIYUA) और इस्लाम में जबरौत (JAB-ROUT) है तथा सहस्रार सूफी धर्म में हकीकते (HAQUIQUATE) और इस्लाम में लाहौत (LAHOUT) है।

डॉ. अमजद ने विस्तारपूर्वक बताया कि किस प्रकार इस्लाम में मानव पुनर्उत्थान के समय इन 373 चक्रों के महत्व की व्याख्या की है।

अल्जीरिया में जन्मे वायुयानी इंजीनियर श्री जमैल, जो अब पेरिस में काम कर रहे हैं ने कहा कि लड़ाई 'मुस्लिम कहलाने' और 'मुस्लिम होने' के बीच है। 'परमात्मा नहीं चाहते कि उनके बच्चे दुख उठाएं।' जिस दिन मानव स्वयं की स्थिति समझेगा वही कयामत पुनर्उत्थान तथा निर्णय का दिवस होगा । आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी हस्पताल में कार्यरत पाकिस्तानी डॉ. जफर राशिद ने कहा कि कोई भी धर्म अलग-थलग होने के लिए नहीं है। धर्मों का जब आयोजन किया गया और इससे जब मानव को आत्मसाक्षात्कार प्राप्त करने के अवसर से वंचित किया गया तब समस्या आरम्भ हो गई ।

सूफी शब्द की परिभाषा देते हुए उन्होंने कहा कि इसका उद्भव सफाई से है अत: मानव को चाहिए कि पापों से स्वयं को मुक्त करने के लिए गहन प्रयास करें ।

17.02.1997
टाइम्स ऑफ इंडिया
नई दिल्ली

नवरात्रि पूजा

5-10-1997

कबैला (इटली)

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन

आज नवरात्रि का छठा दिन है। भिन्न उद्देश्यों से देवी के बहुत से अवतरण हो चुके हैं। मां के भक्त महान सन्तों ने अन्तर्दर्शन द्वारा यह जान लिया कि देवी ने उनके लिए क्या किया है। उस दिन मैंने आपको बताया था कि धर्म मानव की अन्तर्जात संयोजकता है और इन संयोजकताओं की संख्या दस है। यह संयोजकताएं हमारे अन्दर पहले से ही स्थापित हैं परन्तु जब हम धर्म से हटते हैं तो सारी समस्याएं खड़ी हो जाती हैं। धर्म को छोड़ना मानवीय गुण नहीं हैं। देवी ने हमारे अन्दर बहुत सा कार्य किया है यद्यपि हमें इसका ज्ञान नहीं हैं। कहा जाता है 'या देवी सर्व भूतेषु'- जिनका सृजन आपने किया है अर्थात् मानव, उनके साथ आप क्या करती हैं? किस रूप में आप मानव के अन्दर विद्यमान हैं। अब आप अन्तर्दर्शन करके देखें कि क्या आपमें देवी के गुण हैं या नहीं? क्योंकि ये आपको देवी ने, शक्ति ने प्रदान किए हैं। जैसे 'या देवी सर्व भूतेषु शान्ति रूपेण संस्थिता- बहुत महत्वपूर्ण है-अर्थात हे देवी मानव में आप शान्ति रूप में विद्यमान हैं। क्या आपको ऐसे लोग मिलते हैं जो अन्दर और बाहर से शान्त हैं? बहुत कठिन बात है, परन्तु देवी ने यह गुण आपको प्रदान किया है। उन्होंने आपको वह शान्ति प्रदान की है जो आपको प्राप्त करनी थी ।

आप क्योंकि मानव धर्मों से च्युत हो गए हैं अत: देवी द्वारा दी गई यह शान्ति आपको अपने उत्थान द्वारा, कुण्डलिनी को जागृति द्वारा प्राप्त करनी होगी । व्यक्ति पहले से ही उत्तेजित है या किसी से प्रतिशोध लेना चाहता है, किसी को चोट पहुंचाना चाहता है या किसी को कष्ट देना चाहता है। कभी-कभी तो वह इन चीजों का आनन्द लेता है। सहजयोगी होकर भी लोगों को दूसरों को चोट पहुंचाने और दु:खी करने में मजा आता है। तो दूसरी बात जो कही गई, 'या देवी सर्व भूतेषु प्रीति रूपेण संस्थिता'। प्रीति अर्थात् प्रेम का गुण-मानव को प्रेम का गुण प्रदान किया गया है। परन्तु इस गुण का मानव में अभाव है क्योंकि उसमें तो ईर्ष्या रूपी दुर्गुण हावी हैं। अब मान लो मैं किसी व्यक्ति को कुछ तोहफा देती हूं और किसी को कुछ और । सहजयोग में भी लोग ईर्ष्या करते हैं। अत्यन्त आश्चर्य की बात है! जब देवी ने आपको प्रेम का गुण प्रदान किया है, किस प्रकार आप ईर्ष्या कर सकते हैं? फिर भी मानव में ईर्ष्या रूपी मूर्खता आम बात है। परन्तु सहजयोगी बनकर आपको ईर्ष्या नहीं करनी चाहिए क्योंकि देवी ने तो आपको प्रेम का गुण प्रदान किया है। उसी गुण का प्रदर्शन होना चाहिए । परन्तु इसके विपरीत आप ईर्ष्या करते हैं। इसका अर्थ यह है कि आप श्री माताजी द्वारा आशीर्वादित सहजयोगी नहीं हैं। नहीं, आप यदि आशिर्वादित हैं तो आपमें ईर्ष्या हो ही नहीं सकती । और यह ईर्ष्या उस सीमा तक चली जाती है कि हम कबैला से हैं और तुम अलबैला से; समाप्त । यह दोनों तो एक दूसरे के इतने समीप हैं जैसे दो नासिकाएं, परन्तु फिर भी ईर्ष्या है। इस बात की भी ईर्ष्या होगी कि श्री माताजी मेरे देश में क्यों नहीं आतीं । आप उस देश में क्यों नहीं जा सकते ।

तो मेरा, तेरा के अज्ञान से इसका उद्भव है। इतनी भयंकर रूप से ईर्ष्या हममें आ जाती है कि हमें इस चीज का ज्ञान ही नहीं रहता कि मां ने तो हमें प्रेम की शक्ति दी है, प्रेम करने की अथाह शक्ति । अशुभ शक्ति हमारी हो ही नहीं सकती । धर्म की, प्रेम करने की मंगलमय शक्ति का अर्थ है कि यह लालच, वासना और ईर्ष्या रहित होनी चाहिए । परन्तु मानव मस्तिष्क में इस प्रकार धूर्तता विकसित हुई है कि किसी के प्रति ईर्ष्यालु होने पर भी यह गर्व करता है । जैसा मैंने आपको बताया इसी ईर्ष्या से लालच जन्म लेता है। यह सत्य बात है, क्योंकि आप यदि ईर्ष्या करते हैं तो दूसरे व्यक्ति जैसी ही चीज आप खरीदना चाहते हैं और इस प्रकार दूसरों से मुकाबला शुरू हो जाता है । किसी की नौकरी यदि आपसे अच्छी है तो आप उसका मुकाबला करना चाहते हैं। यह सारी चीजें विध्वंसक हैं परन्तु देवी की शक्तियां रचनात्मक हैं। उनकी दी गई सभी शक्तियां पूर्णत: रचनात्मक हैं। सन्तों ने कहा है 'या देवी सर्व भूतेषु क्षमा रूपेण संस्थिता।' क्षमा, हार्दिक क्षमा कोई आपके प्रति कठोर है, किसी ने आपका अनुचित लाभ उठाया है, आपको कष्ट दिया है, परन्तु आपमें क्षमा करने की महान शक्ति है। क्या हम क्षमा की इस शक्ति

का उपयोग करते हैं। महसूस करने के लिए देवी आपको निद्रा प्रदान करती है,'या देवी सर्व भूतेषु निद्रा रूपेण संस्थिता', जब आप थके हुए होते हैं, सो नहीं सकते तो वह आपको सुला देती है, आपको आराम पहुंचाती है। तो वह आरामदायिनी है क्योंकि वे पराअनुकम्पी नाड़ीतन्त्र (PARASYMPATHATIC NERVOUS SYSTEM) के माध्यम से कार्य करती है। अनुकम्पी नाड़ीतन्त्र (SYMPATHETIC NERVOUS SYSTEM) आपको उत्तेजित कर सकता है, अवनत कर सकता है परन्तु परानुकम्पी आपको आराम पहुंचाता है, आपके हृदय को, आपके शरीर को आराम प्रदान करता है और पूर्णत: शान्त होकर आप अपनी मां की गोद में सो जाना चाहते हैं। परन्तु कुछ लोग सदा यही सोचते रहते हैं कि उन्हें क्या प्राप्त करना है वे सो नहीं सकते । आपको यदि नींद नहीं आती तो निश्चित रूप से आपमें कोई कमी है। जब आप नहीं सो पाते तो मैं भी नहीं सो सकती। सामूहिक रूप से जो भी कुछ घटित हो रहा है उसका प्रभाव मुझ पर पड़ता है, सामूहिक रूप से यदि कोई गलत कार्य आप करते हैं तो इसका असर मुझपर होता है। आप इसलिए नहीं सो सकते क्योंकि आप ऐसी वस्तुओं के बारे में सोचते रहते हैं जो मूल्यहीन हैं। सहजयोग में इस स्थिति से ऊपर उठने का एक ही उपाय है-निर्विचार समाधि में चले जाना । परन्तु जब आपका अहं कार्यशील है (यह बच्चा बहुत दंगा करता है, इसे मैंने सदैव इधर-उधर भागते हुए देखा है, अच्छा होगा इसे समझा दें) आपने देखा होगा कि भारत में बच्चे पूर्णत: शान्त रहते हैं। क्यों? क्योंकि बच्चे को साधने की जिम्मेदारी मां संभाल लेती है। आपने बहुत से कार्यक्रम देखे हैं। क्या कभी किसी बच्चे को इधर-उधर दौड़ते हुए देखा है? कल भी यह बच्चे यहां पर दौड़ रहे थे। इसका कारण यह है कि माताएं बच्चों का ठीक प्रकार से पालन-पोषण करने की जिम्मेदारी नहीं लेतीं। यद्यपि आपकी आयु काफी है फिर भी जो आपके, आपके समाज के और आने वाली इस पीढ़ी के हित में है वह मुझे बताना पड़ता है। इस नई पीढ़ी में यदि अब भी आप ठीक से आचरण नहीं कर रहे हैं, यदि आपका आचरण सहज नहीं है तो किस प्रकार आप अन्य लोगों को प्रभावित कर सकते हैं? तो मां (श्रीमाताजी) को यह सब बताना पड़ रहा है।

सबसे दिलचस्प गुण जो मां ने आपमें भर दिया है वह है, 'या देवी सर्व भूतेषु भ्रान्ति रूपेण संस्थिता।' वो आपको भ्रम में डाल देती हैं क्योंकि कभी कभी भ्रम का सामना किए बिना बच्चे बात को समझते नहीं हैं। उन्हें भ्रम का सामना करना होगा । वो आपको गलती की एक सीमा तक जाने देती हैं जहां आप जान जाते हैं कि आप खो गए हैं। उनका महामाया की यह भूमिका निभाना अत्यन्त महत्वपूर्ण है। सभी धर्मों में इसका वर्णन किया गया है कि हम भ्रम जाल में फंस जाते हैं। तो वे कौन से भ्रम हैं जिनमें हम फंसते हैं। हमें अहम् का भ्रम है। पुरुषों को यह भ्रम है कि वे अत्यन्त शक्तिशाली हैं और कुछ भी कर सकते हैं तथा इसके लिए उन्हें दण्ड नहीं मिलेगा । महिलाएं भी उसी प्रकार आचरण करती हैं। वे नहीं समझ पाती कि यह मां का दिया हुआ भ्रम है ताकि हम अपनी गलतियों को जान सकें। यदि आप किसी को बताएं कि आप गलती कर रहे हैं, ऐसा मत कीजिए तो उनकी समझ में नहीं आता और वे गलती किए चले जाते हैं। तो मां (महामाया) कहती है बहुत अच्छा, बहुत बढ़िया, बड़ी अच्छी बात है, करते चले जाओ; समुद्र में कूद पड़ो ! जब आपको महसूस हो जाएगा कि आप भ्रमित हैं तभी आप वापस आ सकेंगे । बिना किसी समस्या के आप वापस नहीं आ सकते । आपमें से बहुत से लोग जिद्दी हैं, अपने ही विषय में चिंतित है। आपको जो भी कुछ बताया जाए आप नहीं समझेंगे। मानसिक स्तर पर आपको समझाने की जितनी भी कोशिश की जाए सब व्यर्थ है। परन्तु भ्रम मस्तिष्क से ऊपर है। कठिन लोगों का यह बहुत अच्छा इलाज है। मां की स्थिति में जब आप होते हैं तो, स्वाभाविक है कि आप नहीं चाहते कि आपका बच्चा बर्बाद हो । महामाया इसे अपनी जिम्मेदारी मानती हैं और सोचती हैं कि अब इन्हें परमात्मा से योग प्राप्त हो गया है और अब यह सम्बन्ध टूटना नहीं चाहिए तथा हर समय यह आर्शिवादित तथा प्रसन्न रहने चाहिएं । यह सब हमारे अन्त: स्थित है, बचपन से ही हमारे अन्दर इसकी रचना है, परन्तु हम यह भूल जाते हैं। धीरे-धीरे हम इसे खोने लगते हैं। हो सकता है बन्धनों के कारण हो या अहम् के कारण हो या ये भी हो सकता है कि वे भूल जाते हो कि वे आत्मसाक्षात्कारी हैं। मैं आप लोगों से बात कर रही हूं जोकि आत्मसाक्षात्कारी हैं, उन लोगों से नहीं जो खो चुके हैं या सहजयोग की खोज में हैं। जिस प्रकार आपका पोषण हुआ है जितने प्रेम, माधुर्य, स्नेह तथा करुणा से आपको बताया गया है, इसके बावजूद भी आप यदि नहीं समझते तो आप भ्रान्ति में चले जाते हैं। उदाहरणार्थ यह भी कहा गया है, 'या देवी सर्व भूतेषु लज्जा रूपेण संस्थिता।' लज्जा, मैं नहीं जानती कि इसका वर्णन किस प्रकार किया जाए । यह संकोच नहीं है। यह शरीर के विषय में, एक प्रकार से, शर्म है। अब सौन्दर्य प्रतिस्पर्धाएं होती हैं, भारत में भी सौन्दर्य प्रतिस्पर्धाएं होने लगी हैं। लज्जा रूपेण संस्थिता का अर्थ है कि आपमें, विशेषकर महिलाओं में शरीर की शर्म होनी चाहिए । बचपन में आप देखते हैं कि महिलाएं बहुत शर्मीली होती हैं, छोटी-छोटी लड़कियों को देखें, वे कितनी शर्मीली हैं! धीरे-धीरे यह शर्म लुप्त हो जाती है। परन्तु आरंभ में तो

वे मुझसे भी शर्माती हैं। मेरे सम्मुख आकर वे सिर झुकाए रखती हैं और नमस्ते तक नहीं कहतीं । अत्यन्त मधुर। अटपटे वस्त्र पहने हुए लोग उन्हें अच्छे नहीं लगते । मुझे याद है किसी पत्रिका में मेरी नातिन ने एक महिला को तैराकी वेशभूषा पहने हुए देखा । वह कहने लगी, यह तुम क्या कर रही हो? अच्छा होगा कि तुम अपने कपड़े पहन लो नहीं तो मेरी नानी आकर तुम्हें जोर से मारेंगी । उस चित्र को वह इस प्रकार कह रही थी । फिर उसने निक्कर पहने एक पुरुष का चित्र देखा । कहने लगी यह व्यक्ति तो पूरी तरह निर्लज्ज लगता है। अब इसे बहुत कष्ट भुगतना पड़ेगा । पत्रिका उसने बन्द कर दी और नौकरानी से कहा कि इसे जला डालो । मैं इसे देखना नहीं चाहती । इतनी सी लड़की भी जानती थी कि यह गलत है। परन्तु आजकल जिस प्रकार से शरीर प्रदर्शन हो रहा है, मुझे लगता है कि यह रूपरेखाकार (Designers) खत्म हो जाएंगे या दिवालिया हो जाएंगे क्योंकि आजकल लोग इतने कम वस्त्र पहनते हैं। वस्त्रों पर इतना स्थान ही नहीं होता कि कोई कलाकार अपनी कला का प्रदर्शन उन पर कर सके । जापान के लोग अब तो अमेरिकन बन गए हैं परन्तु बहुत समय पूर्व मैंने उनसे पूछा था कि किस प्रकार वे इतने बड़े बड़े वस्त्र (KEAMONAS) पहनते हैं। यह बहुत महंगे हैं और इनको पहनने में समय भी बहुत लगता है। तो उन्होंने उत्तर दिया कि देखिए परमात्मा ने एक सुन्दर शरीर बनाया है, यह उसकी कला है, इसे सजाने के लिए हमें अपनी कला का उपयोग करना चाहिए । अत: शरीर को सजाने के लिए हमें वस्त्रों पर कलाकारी करती हैं। मुझे यह बात अच्छी लगी क्योंकि भारत में भी ऐसा ही है। महिलाओं को साड़ी पहननी पड़ती है जोकि अत्यन्त कलात्मक ढंग से बहुत सुन्दर बनाई जाती है। शरीर को सजाने और इसका सम्मान करने के लिए ऐसा किया जाता है। परन्तु मुझे लगता है कि पागल अमेरिका के लोगों के प्रभाव में आकर यह सब समाप्त हो गया है। वे लोग बिल्कुल पागल हैं। उनसे सीखने के लिए कुछ नहीं है, वे केवल दो सौ वर्ष के हैं और हम उनकी तरह से आचरण करने लगते हैं! हम यह भी नहीं देखते कि उनके देश का क्या हाल हो रहा है, वे कैसे लोग हैं, किस प्रकार रहते हैं और उनके विचार क्या हैं! उनके जीवन का क्या लक्ष्य है। सभी कुगुरूओं ने इन पागल लोगों का अनुचित लाभ उठाया है। यदि उनके पास मस्तिष्क होता तो वे कभी इन कुगुरूओं को स्वीकार न करते । उनके पास मस्तिष्क केवल कम्प्यूटर, टेलीविजन तथा मशीनों को चलाने के लिए है। परन्तु अपने शरीर का रखरखाव करना वे नहीं जानते ।

भारत में एक सौन्दर्य प्रतिस्पर्धा की गई जिसका विरोध बहुत से विवेकशील लोगों ने किया क्योंकि यह शरीर को बेचकर धनार्जन करने जैसा है। इसमें और वेश्यावृत्ति में क्या फर्क है। शरीर को बेचकर यदि आपको धन मिलता है तो यह वेश्यावृत्ति है। आपको अपना शरीर नहीं बेचना चाहिए । देवी ने आपको ऐसा करने की आज्ञा नहीं दी है। भिन्न अवसरों पर आप अच्छे-अच्छे वस्त्र धारण करें। उस दिन मैंने एक महिला को अत्यन्त सुन्दर साड़ी भेंट की जिसे हम 'पैठनी' कहते हैं। पुस्तक विमोचन के उत्सव पर वह महिला आई तो मैंने उससे पूछा कि तुमने वह साड़ी क्यों नहीं पहनी? वह कहने लगी कि आज कोई विवाह तो नहीं है, इस अवसर पर मैं पैठनी कैसे पहन सकती हूं । यह तो विवाह के लिए उपयुक्त है। तो शुभ अवसर, स्थान आदि पर ही उत्सव मनाया जा सकता है। उदाहरणार्थ भारत में पति-पत्नी जब मन्दिर में पूजा करने जाते हैं तो देवी के सम्मुख प्रस्तुत होने के लिए वे आवश्यक वस्त्र-आभूषण पहनते हैं। इस कार्यक्रम के लिए यहां आने वाले लोगों की कल्पना कीजिए जो हिप्पियों की तरह से पटसन के कपड़े पहन कर आ जाते हैं! मेरा क्या होगा? मैं आपको बता दूं कि मैं तो हवा में ही लुप्त हो जाऊंगी । अत: व्यक्ति को शरीर का सम्मान होना चाहिए, 'लज्जा रूपेण संस्थिता' में देवी ने यही कहा है। अब आप कह सकते हैं कि लोग नदी में स्नान कर रहे हैं तथा उसका औचित्य भी बता सकते हैं। परन्तु आप लोग सन्त हैं, आत्मसाक्षात्कारी लोग हैं, आपको इन लोगों की ओर नहीं देखना चाहिए जो आत्मसाक्षात्कारी नहीं हैं तथा दुराचरण कर रहे हैं। आपको सन्तों की तरह आचरण करना चाहिए ।

देवी ने आपको बहुत से गुण प्रदान किए हैं। एक अन्य है, क्षुधा रूपेण संस्थिता । देवी ने आपको भूख प्रदान की है, हमें खाना खाना चाहिए । आजकल पतला होने का फैशन है जिसके कारण बहुत से रोग पनप रहे हैं। अनोरेक्सिया (ANOREXIA) आदि, क्योंकि महिलाएं बहुत कम खाती हैं। अपने खाने की वस्तुओं को आप परिवर्तित कर सकते हैं, परन्तु शरीर की देखभाल ही आपका केवल उद्देश्य नहीं है। केवल शरीर ही महत्वपूर्ण नहीं है, आपकी आत्मा अधिक महत्वपूर्ण है। वह आपको कुण्डलिनी प्रदान करती है और वही आपको उत्थान की विधि बताती है। परन्तु हर समय शरीर के विषय में चिन्तित रहना मेरी समझ में नहीं आता, विशेष कर महिलाओं का, जो कि शक्तियां हैं! एक अन्य चीज यह है कि महिलाएं फैशन के पीछे दौड़ती हैं; फैशन पागलपन है। युवावस्था में भी मैं इसी प्रकार का ब्लाऊज पहना करती थी । परन्तु भारत में भी फैशन का आरम्भ हुआ, ब्लाऊज की बाजुओं की लम्बाई घटती-बढ़ती रही। मुझे तो यह सब बेवकूफी लगी । क्यों इस प्रकार पैसा बर्बाद किया

जाये, क्यों न आप परम्परागत, प्रचलित वस्त्र पहनें । फैशन के अनुसार क्यों आप बाजुओं के आकार को घटाते-बढ़ाते रहें? यह फैशन है। फैशन कौन बनाता है? देवी? क्या देवी फैशन बनाती है? फैशन किसने बनाये हैं? भूखे और लालची लोगों ने, जो आपको बेवकूफ बना रहे हैं, यह कार्य किया है। और आप फैशनों के पीछे दौड़ने का प्रयत्न कर रहे हैं!

अब उदाहरण के रूप में मैंने आपको कहा था कि आप अपने बालों में तेल अवश्य लगायें, कम से कम शनिवार को काफी सारा तेल लगायें और फिर सिर को धो दें। परन्तु आप ऐसा नहीं करते, और आपके बाल झड़ने लगते हैं। मेरी समझ में नहीं आता । आपके पास समय का अभाव है फिर भी अपनी देखभाल करने के लिए आप लगे रहते हैं, आपके बाल झड़ जाते हैं, आंखें कमजोर हो जाती हैं, दांत गिरने लगते हैं और बहुत शीघ्र आप बूढ़े हो जाते हैं। पुरुषों के साथ भी ऐसा ही है। आज कल पुरुष सौन्दर्य गृह में जाते हैं। इतने अधिक पैसे की बर्बादी केवल मूर्खता है! इसकी कोई आवश्यकता नहीं । अच्छे स्वस्थ जीवन के लिए आपको व्यायाम करना होगा और ध्यान धारणा भी । आप यदि ध्यान धारणा करते हैं तो आप शान्त हो जाते हैं, और यह शान्ति, आपको बहुत शक्ति प्रदान करेगी । इतनी शक्ति सोचने में बर्बाद हो जाती है, और आप सोचते क्या हैं? आप यदि किसी व्यक्ति से पूछें ये आप क्या सोच रहे हैं? सभी कुछ, परन्तु सभी कुछ का क्या अर्थ है? आप इतना अधिक क्यों सोचते हैं? इतना अधिक सोचने की क्या आवश्यकता है? हर चीज के विषय में सोचते रहना मानवीय आदत है। अब मैं यदि इस पर चित्त डालूं तो पहले मैं देखूंगी यह सब कितना अच्छा है और केवल इसका आनन्द लूंगी! कलाकार को कला का आनन्द! बस कुछ नहीं बोलूंगी; व्यक्ति के अन्दर का आनन्द ही महत्वपूर्ण है। परन्तु किसी अन्य से यदि आप पूछेंगे तो वह कहेगा यह ठीक नहीं है, वह ठीक नहीं है। यह चमत्कार नहीं है आदि-आदि । कला का आनन्द समाप्त हो जायेगा, जिस आनन्द की खोज हम कर रहे हैं वह हमें प्राप्त न हो सकेगा । हम आनन्द की खोज कर रहे हैं और उसे प्राप्त करने का एक साधन जब हमें मिलता है फिर भी हम उसे प्राप्त नहीं करते, क्योंकि सोचना प्रतिक्रिया है। हर चीज की प्रतिक्रिया जीवन को दयनीय बना देती है। यह सोचने वाले के जीवन को तथा अन्य लोगों के जीवन को भी दयनीय बना देती है। मैं आपको एक उदाहरण देती हूं। भारी वर्षा और बर्फ की समस्या के बावजूद भी हमने यह सभी कुछ बनवाया, मैंने सोचा कि यह बहुत अच्छा कार्य है। अब इटली में बहुत से सोचने वाले लोग हैं और यही कारण है कि वहां उन्नति नहीं होती। हमने तीन साल पूर्व प्रार्थना पत्र भेजा था, तीन साल तक उन्होंने बैंक में हमारा पैसा बन्द रखा । पहली बार उन्होंने कहा कि ठीक है आप ऐसा कर सकते हैं। इस पर सत्तर लोगों के हस्ताक्षर थे, फिर उन्होंने कहा कि नहीं, आप इसे तांबे में परिवर्तित कर दें। मैंने पूछा क्यों? तो कहने लगे ताम्बा सौन्दर्य की दृष्टि से ठीक है। परन्तु वे मूर्ख लोग यह भी नहीं जानते कि तांबा वैसा ही लगेगा जैसे वे लगते हैं। एक महीने के पश्चात् वे वही रंग करेंगे । यह उनका सौन्दर्य बोध है! अब मैंने उनसे कह दिया है कि अब हमें आपकी जमीन नहीं चाहिए, आप इसे अपने पास रखें और हमारा पैसा हमें वापिस कर दें । इतनी छोटी-सी चीज के लिए, क्यों? क्योंकि उनकी एक समिति है जिसको सारी बेवकूफियां हमें सहनी होंगी । कुर्सियों पर बैठकर वे बहस करते रहते हैं, इसका परिणाम क्या है? किसी भी चीज की उन्नति नहीं होती, शक्ति का पूर्ण अभाव है। हो सकता है उन्हें कुछ रिश्वत की जरूरत हो जो वे मेरे से नहीं कह पा रहे! जो भी कुछ हो मेरी समझ में नहीं आता कि एक बार 'हां' कह कर वही कार्यालय 'नहीं' कैसे कह देगा ! तीन साल गुजर गये हैं। तो मैं जो कहने का प्रयत्न कर रही हूं वह यह है कि अधिक सोचना अहम् की निशानी है। उन्हें किसी भी चीज का समाधान नहीं मिलता । किसी भी समाधान तक वे नहीं पहुंचते क्योंकि वह सब तो बहस ही करते रहते हैं, सोचते रहते हैं। कोई भी समाधान उनके पास नहीं है।

सहजयोगियों के लिए अपने अन्तस के अन्तर्दर्शन करना आवश्यक है। अन्तदर्शन-अन्दर झांकना है। अन्दर झांकना, मैं क्यों सोच रहा हूं? क्या सोच रहा हूं? सोचने की क्या आवश्यकता है? और आप निर्विचार हो जायेंगे । अपने मस्तिष्क को मूर्ख मत बनने दें । ये मस्तिष्क एक बन्दर की तरह से है और जब यह कार्य करने लगता है तो आपको इधर से उधर कूदने पर विवश कर देता है। कोई निश्चय यदि आप करते हैं और और इसे प्राप्त नहीं कर सकते तो आप सबसे अधिक दु:खी व्यक्ति बन जाते हैं। बेवकूफी भरी चीजों के विषय में सोचते-सोचते मैंने लोगों को सूखते हुए देखा है। आप देख सकते हैं कि इस सोच से क्या उपलब्धि होती है, विश्वस्तर पर भी? चांद पर जाने की क्या आवश्यकता है? इतने लोग मर रहे हैं, मंगल पर जाने की क्या आवश्यकता है? वहां उन्हें क्या मिल जाएगा ? क्योंकि इसकी उन्हें आदत पड़ गई है; पहले वह भारत आये फिर गये, आदि-आदि । शान्त हो कर वे बैठ नहीं सकते । अपने घर पर भी वे शान्त हो कर नहीं बैठ सकते, विशेषकर पुरुष। रेलगाड़ी में यात्रा करते हुए गाड़ी यदि दो मिनट के लिए भी रुकी तो पुरुष अवश्य बाहर निकलेंगे। गाड़ी चलने लगती है, पत्नियां चिन्तित हो जाती हैं, तब पुरुष कूद कर ऊपर आते हैं। यह

तो बन्दर से भी गया गुजरा मस्तिष्क है। मेरे विचार से बन्दर भी ऐसा नहीं करेंगे । वे किसी एक स्थान पर स्थिर नहीं रह सकते । ध्यान धारणा करते हुए आपको एक ही स्थान पर टिक कर बैठना चाहिए । इधर-उधर कूदते नहीं रहना चाहिए। महिलाओं के साथ और समस्याएं हैं। खाना बनाते हुए ध्यान धारणा करेंगी। उनके पास समय ही नहीं है। इनके मित्र हैं। उल्टी-सीधी चीजों से घर को भरने के लिए वे खरीददारी करने जाएंगी परन्तु अन्य किसी कार्य के लिए उनके पास समय ही नहीं है। वे अत्यन्त पराक्रमी हैं और व्यापार करना चाहती हैं। सभी कुछ वे करना चाहती हैं परन्तु ध्यान-धारणा के लिए उनके पास समय नहीं है। अत: टिक जाना अत्यन्त आवश्यक है। स्वयं में स्थिर हो जाइए । किसी ने मुझ से कहा श्री माताजी, यदि हम स्थिर हो गए तो बहुत मोटे हो जाएंगे । कोई बात नहीं परन्तु स्थिर हो जाइए । ध्यान धारणा न करने के लिए सभी प्रकार के बहाने हैं। हां, श्री माताजी मैं ध्यान धारणा करती हूं, परन्तु आधुनिक युग में यह कार्य बहुत कठिन है। हमारे जीवन में द्वेष है, समस्याएं हैं, परन्तु आप आश्चर्यचकित होंगे कि जब-जब भी मेरे परिवार या सहजयोग में कोई विपत्ति होती है, तो मैं स्वत: ही निर्विचार हो जाती हूं क्योंकि परम चैतन्य ही समस्याओं का समाधान करेंगे ।

परम चैतन्य ही जब सभी समस्याओं का समाधान करते हैं तो मैं क्यों सोचूं! समस्याओं को भूल जाइए । परम चैतन्य को इनकी चिंता करने दीजिए । परम चैतन्य पर यदि आप निर्भर नहीं होंगे तो यह आपकी सहायता नहीं करेगा और न ही समस्याओं का समाधान करेगा, तब अपने मस्तिष्क के साथ आप गोल-गोल घूमते रहेंगे और इनके हल सोचेंगे । निश्चित रूप से आप को जानना होगा कि आप परमात्मा के प्रेम की सर्वव्यापी शक्ति से जुड़े हुए हैं। प्रेम मूर्ख नहीं है। प्रेम ही सोचता है, प्रेम ही सत्य है, प्रेम ही आनंद है । यह सब आप के अंदर बना हुआ है और अब तो आपको आत्मसाक्षात्कार प्राप्त हो गया है। इसीलिए स्वयं को विकसित करने के स्थान पर आप व्यर्थ की चीजों के पीछे क्यों दौड़ते रहते हैं? इस प्रकार बहुत से सहजयोगी खो जाते हैं। हाल ही में मुझे बताया गया कि हमने लगभग 100 सहजयोगी खो दिए हैं क्योंकि वे किसी अन्य सहजयोगी का अनुसरण करने लगे थे जिसने चीजें देखनी शुरु कर दी थीं। तो वे लोग भी उसी की तरह से चीजें देखना चाहते थे । आप यदि किसी चीज को देखते भी हैं तो इसका अर्थ है आप वहां उपस्थित नहीं हैं। साधारण सी बात है कि यदि मैं पर्वत की चोटी पर हूं तो मैं वहां हूं परन्तु यदि मैं वहां से दूर हूं तब मैं उसे देख सकती हूं। किसी चीज को जितना अधिक आप देखते हैं उसका अर्थ है कि आप उतना ही अधिक उससे दूर हैं। क्या आपने यह बात समझी? अत: सूक्ष्म अवस्था तो वह है जिसमें आप स्वयं वह चीज बन जाएं । किस प्रकार आप अपने को देख सकते हैं? यह तथ्य सहजयोगियों को अवश्य समझ लेना चाहिए । कोई भी व्यक्ति जो देख सकता है, नहीं श्री माता जी, उसने आपके चहूं ओर प्रकाश वृत्त देखे, वह चीजों को देख सकता है। तो आप किस प्रकार चीजों को देख सकते हैं? आप क्योंकि वहीं हैं इसलिए किस प्रकार आप देख सकते हैं? तो सहजयोग के आरम्भ में कुछ लोग जो बहुत लोकप्रिय थे, वे आपको वश में करने और मूर्ख बनाने का प्रयत्न करते हैं और तब आपको सहजयोग से बाहर फेंक दिया जाता है। अब निर्णय का समय है। भिन्न छलनों (परीक्षाओं) में से आपको गुजरना होगा । मार्ग में बहुत से प्रलोभन हैं। एक एक कदम करके आप विनाश की ओर जा रहे हैं। अब क्योंकि आप आत्मा बन गए हैं तो आध्यात्मिक जीवन में आपको बढ़ना चाहिए । यदि आप पतन की ओर जा रहे हैं तो कौन आपकी सहायता कर सकता है? मैंने आपको बताया था कि यह बहुत ही अच्छा समय है, निर्णय का समय है और इस समय हमें सावधान रहना होगा कि हम स्वयं अपने न्यायाधीश हैं। कोई आपको नहीं बताएगा कि आपमें कहां पकड़ है। आप स्वयं महसूस कर सकते हैं कि आपके कौन से चक्र पकड़ रहे हैं। मैं आपकी समस्याओं को दूर करने का कितना भी प्रयत्न करूं, आपके उत्थान के लिए कितना भी कुछ करूं, इस तरह से आप सुदृढ़ नहीं होंगे क्योंकि आप यही सोचेंगे कि श्री माताजी मेरी समस्याओं को दूर कर देंगी । जो पत्र मुझे मिलते हैं उनमें से 99 प्रतिशत उन सहजयोगियों के होते हैं जो किसी न किसी कष्ट से परेशान हैं। मैं हैरान हूं, यह सब शक्तियां आप में पहले से ही जागृत की जा चुकी हैं, यह आपमें विद्यमान हैं-इनका उपयोग कीजिए ।

कोई कहेगा कि फलां व्यक्ति मुझे परेशान कर रहा है, पत्नी मुझे परेशान कर रही है, पति मुझे परेशान कर रहा है। सब को क्षमा कर दीजिए, क्षमा कर दीजिए, आपकी क्षमाशक्ति दुर्बल है। संतो ने जितना वर्णन किया है उससे कहीं अधिक सत्य की शक्ति आपको प्राप्त हो गई है। देवी की स्तुति गाने वाले संतों से कहीं अधिक सत्य का ज्ञान आपको है। आप यदि केवल इतना सोचें कि मेरा स्तर क्या है तो आपका पतन न होगा, आप इतने अधिक अवनत न होंगे । समस्या बस इतनी है कि आपको यह जानना होगा कि आपका उत्थान आध्यात्मिक है। धर्म से भी कहीं अधिक संतुलित रूप में यह गुण आपके अंदर बैठा दिए गए हैं। त्यागने या अवनत होने की शक्ति आपमें हो सकती है परन्तु यह आध्यात्मिक

शक्तियां जो आपके अंदर हैं वे कभी नष्ट न होंगी । मुझे याद है कि पहली बार जब मैं अमेरिका गई तो एक भद्र पुरुष से मिली । अगले दिन वह व्यक्ति मेरे पास आया और कहने लगा कि, "श्री माताजी, मैं परिवर्तित हो गया हूं, मैं परिवर्तित हो गया हूं, मैं परिवर्तित हो गया हूं।" क्या हुआ! मैं अपने चाचा से घृणा करता था, उनसे बात तक नहीं करता था, इतना नाराज़ था मैं! परन्तु कल में उनसे मिला, जाकर उन्हें गले लगा लिया, उन्हें चूमा और कहा मैंने आपको क्षमा कर दिया है, पूरी तरह क्षमा कर दिया है। अब इसके विषय में दोष भाव मत आने दीजिए । वह मेरी ओर देखने लगा । **कुंडलिनी की जागृति के पश्चात् आपके अंतर्निहित यह गुण उभर के आते हैं तब आत्मा के प्रकाश में प्रकाशित आप की उदारता एवं अन्य गुण विश्व के सम्मुख प्रमाणित कर देंगे कि सहजयोग सत्य है।** कल के सुंदर नाटकों में यही बात दर्शाई, परंतु आपके अंदर यह केवल मानसिक संतोष ही नहीं होना चाहिए कि मुझे आत्मसाक्षात्कार प्राप्त हो गया है, मैं ऐसा हूं। यह केवल मानसिक स्तर की ही बात नहीं होनी चाहिए, यह तो एक अवस्था है जिसे प्राप्त करने के लिए आपको वास्तव में ध्यान-धारणा करनी होगी । **हर सुबह व शाम ध्यान के लिए समय निकालें । जितना अधिक आप ध्यान-धारणा करेंगे, उतना ही अच्छा है। स्वयं को बहानों से संतुष्ट मत करें। सभी कुछ अनावश्यक है, आपका उत्थान ही महत्वपूर्णतम है।**

यदि आप विश्व को इस कलियुग से बचाना चाहते हैं तो,

मेरे विचार से आज मैंने आपको यह बात भली-भांति समझा दी है, आपके अंदर कौन से गुण स्थापित किए जा चुके हैं। यह धर्म नहीं हैं, गुण हैं। यह आपके अंत: स्थित हैं। परन्तु आप ने अपना चित्त किसी विपरीत चीज पर लगाया हुआ है, अन्यथा यह सब गुण तो आपके अंदर स्थापित किए जा चुके हैं । यह आपके अंदर है और इन्हें आप स्वयं के अतिरिक्त कोई भी नष्ट नहीं कर सकता । आप ने ही यदि इन्हें नष्ट कर दिया तो फिर कोई आपकी सहायता नहीं कर सकेगा । परमात्मा आपको धन्य करें।

महिलाओं की भूमिका

जून 1988
शुडि कैम्प

कल हमने बहुत अच्छा ध्यान किया और सबने परम चैतन्य की शीतल लहरियों का अनुभव किया । मैंने आपको बताया था कि हमें समझना है कि यह इतिहास में महानतम् क्षण है: इसमें आपका जन्म हुआ और इसमें आप यहां उच्चतम कार्य - परमात्मा का कार्य कर रहे हैं। आप लोगों को विशेष रूप से इस कार्य के लिए चुना गया है और अब आप यह जान लें कि आप सन्त हैं। आपको सारे आशीर्वाद प्राप्त हैं परन्तु आप इन आशीर्वादों में खो भी जाते हैं। आशीर्वादों में खोकर आप इस प्रकार आचरण करने लगते हैं जो किसी सन्त को शोभा नहीं देता । इतने वर्षों के पश्चात् अब मैं एकादश रुद्र पूजा के लिए सहमत हुई हूं । मैं जानती हूं कि यह भयानक कार्य था क्योंकि मुझे इस बात का भी ज्ञान है कि अभी तक भी बहुत से सहजयोगी अधकचरे हैं, कुछ सहजयोग से अनुचित लाभ उठा रहे हैं, कुछ सहजयोग से धन बना रहे हैं और कुछ सत्ता या शोहरत आदि प्राप्त कर रहे हैं।

अत: अब इस शक्ति को (एकादशरुद्र) स्वतन्त्र कर दिया गया है और यह एक प्रकार से अति भयानक शक्ति है और इससे आपको बहुत सावधान होना होगा । नि:सन्देह यह आपकी उन सभी लोगों तथा बुराईयों से रक्षा करती है जो आक्रमण करके आपका नाश करने का प्रयत्न करती है। यह आपके लिए हर संभव सुरक्षा करना चाहती है परन्तु यदि आप दुराचरण करेंगे तो यह आपको भी दंडित कर सकती है। हाल ही में भारत में घटित एक घटना मैं आपको सुनाती हूं। एक सहजयोगिनी दूसरे सहजयोगिनी के पास गयी क्योंकि उसके बाग में बहुत से कटहल लगे हुए थे । जाकर उसने कहा, "तुम मुझे सब्जी बनाने के लिए एक कटहल दे दो ।" दूसरे ने कहा, "आज नहीं, फिर कभी मैं तुम्हें कटहल दूंगी, आज मैं कटहल नहीं देना चाहती । बस ।" उसके पास बहुत से कटहल थे । उस सहजयोगिनी को बहुत बुरा लगा क्योंकि अपने घर आने वाले भले अतिथियों के लिए वह सब्जी बनाना चाहती थी । बाजार में कटहल पर कोई ज्यादा पैसे

खर्च नहीं होते । वे कटहल उसे अच्छे लगे थे इसलिए उसने मांगे थे । अगले दिन दूसरी महिला के बाग में, अन्य कहीं नहीं, बहुत भयानक तूफान आया। उसके सारे कटहल गिर गए और पेड़ भी उखड़ गए । उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या करे ! वह उस सहजयोगिनी के पास आई और कहने लगी,"मुझे दु:ख है कि मैंने तुमसे यह बातें कहीं, मेरे साथ इस प्रकार की त्रासदी हुई है, आप कृपा करके किसी अन्य विपदा से मुझे बचा लो। मैं बहुत स्वार्थी थी।" उसने कहा,"नहीं, मैंने श्री माताजी से कुछ नहीं कहा । मैंने तो उन्हें बताया भी नहीं । मैं घर वापस आई और सब कुछ भूल गई । श्री माताजी को तो मैंने कुछ भी नहीं बताया, मेरे मन में कोई दुर्भावना भी नहीं थी । मैं तो पूर्णत: क्षमाशील थी। यह सब कैसे हो गया ?"

यह घटना एकादश रुद्र पूजा के पश्चात् घटित हुई थी और वह चिंतित थी कि उसका पूरा बाग ही एक दिन उखड़ जाएगा। उसने मुझे पत्र लिखा जिसमें बताया कि,"श्री माताजी यह घटना घटित हुई है, मैंने ऐसा किया क्योंकि यह मेरा पूर्वजन्मों का कुसंस्कार है और मैंने एक कटहल बचाने का प्रयत्न किया...।" वे सारे टूटे हुए कटहल उसे भिखारियों और नौकरों को देने पड़े । कोई भी उससे यह कटहल खरीदने को तैयार न था । फिर उसका सारा धन चला गया । उसका सभी कुछ समाप्त हो गया । मैं जानती हूं कि यह कुछ भयानक है। परन्तु नकारात्मकता का नाश किस प्रकार किया जाए? आज मैं देख रही हूं कि नकारात्मकता बड़े सूक्ष्म तरीकों से सहजयोग एवं सहजयोगियों को बहुत अधिक चोट पहुंचा रही है। आस्ट्रेलिया के विषय में आपने सुना होगा कि वहां क्या घटित हुआ । एक स्त्री को सुधरने के लिए उसके पति ने आस्ट्रेलिया भेजा, वहां एक अन्य स्त्री, किसी अन्य की पत्नी थी, वह अपने पत्नीपन के प्रति बहुत जागरूक है। उसने इस नकारात्मक महिला को पकड़ लिया और इसी प्रकार की नकारात्मक महिलाओं का झुण्ड बन गया । वहां सहजयोग की सारी चैतन्य लहरियां समाप्त हो गयीं । मेरे जन्मदिवस पर आस्ट्रेलिया से किसी ने एक फूल तक नहीं भेजा । नि:सन्देह उन्होंने मेरी पूजा की, पूजा का कर्मकाण्ड उन्होंने किया । परन्तु यह सब अपने अपने परिवार में बैठकर किया । वह स्त्री कहने लगी कि हम अपने परिवार में पूजा कर रहे हैं। आपका कौन सा परिवार है? आश्रम का छोटा सा परिवार या आपका अपना परिवार और इस प्रकार सभी कुछ नष्ट हो गया । आस्ट्रेलिया के लोगों की सारी चैतन्य लहरियां समाप्त हो गईं ।

वहां के अगुवा को तब मुझे मुम्बई बुलाना पड़ा । वह अपनी चैतन्य लहरियों से भी परेशान था । मेरे सम्मुख वह कांपने लगे । मेरे सामने उसके हाथ कांपने लगे । कहने लगा,"मैं संवेदनशील हूं।" मैंने कहा,"नहीं, यह संवेदनशीलता नहीं है, यह भूत है। आपको यदि इस प्रकार का कोई कष्ट या दर्द होता है तो इसका अर्थ है कि आप भूत हैं। आप संवेदनशील नहीं हैं। गलतफहमी के शिकार न होइये। इस प्रकार मत सोचिए । अपने विषय में गलत विचार मत बनाइये।" मैंने कहा,"अब तुम मेरे सामने बैठो।" मैंने उसके अन्दर से भूत भगा दिया । तब उसने स्वीकार किया, "मुझ पर स्काटलैण्ड के लोगों का हमला हुआ था।" स्काटलैण्ड के लोगों का क्यों? "क्योंकि वह स्काटलैण्ड से गई थी।" मैंने कहा,"भूतों की कोई राष्ट्रीयता नहीं होती। उनकी कोई जाति नहीं होती । उनका कोई धर्म नहीं होता। वे तो भूत हैं। अत: उन्हें स्काटलैण्ड वाले मत कहो। वे रूसी भी हो सकते हैं, इटली के भी हो सकते हैं। वे भारतीय भी हो सकते हैं। वे कुछ भी हो सकते हैं।" परन्तु इस प्रकार के एक झुण्ड से पूरा आस्ट्रेलिया, पूरा न्यूयार्क पकड़ में आ गया ।

तो किस प्रकार नकारात्मकता रेंग कर अन्दर प्रवेश कर जाती है और जेम्स जैसा सन्त व्यक्ति भी चोट खा गया। केवल चोट ही नहीं खाई, वह तो पूरी तरह से नष्ट हो गया था । उसने स्वीकार किया कि,"श्रीमाताजी, मैं जानता हूं कि मुझे क्या हुआ था।" परन्तु मैंने खोज निकाला कि दोष उसकी पत्नी का था। उसका भूतकाल बहुत ही खराब था, वह अत्यन्त तीव्रग्राही (Allergic) थी । सभी प्रकार के दोष उसमें थे । मैंने उससे बताया कि तुम्हें आस्ट्रेलिया से बाहर जाना होगा । इसलिए महापूजा एक प्रकार से, मुल्तवी कर दी गई है। मैं चाहती हूं कि यह पूजा हो परन्तु उस आश्रम से कोइ भी सहजयोगी उसमें सम्मिलित नहीं होना चाहिए । मेरे आश्चर्य की सीमा न रही जब उन छह भयानक महिलाओं ने जिन्होंने इस स्त्री के साथ यह समूह बनाया था, मुझे एक पत्र लिखा कि उस स्त्री ने हमें ऊंचा उठाया है। और चैतन्य लहरियां इतनी खराब थीं कि मुझे लगा कि पूरी चैतन्य लहरियां बहकर उनसे लड़ने लगी हैं। मैं वह पत्र न पढ़ सकी। परन्तु उन महिलाओं को ऐसा लगा कि उनका उत्थान हो गया है।

अत: सहजयोग में बहुत सी चीजें आपको भ्रमित कर सकती हैं परन्तु अब आप सावधान रहें। स्वयं को धोखा देने का प्रयत्न न करें। अपने मूल्य को समझें । जैसा कि मैंने कल आपको बताया था कि आप लोग योगी हैं, सन्त हैं: आपको किसी भी मूर्खतापूर्ण और घटिया चीज के सम्मुख घुटने नहीं टेकने । कोई भी व्यक्ति जो इस प्रकार के कार्य करता है उन्हें आप बता दें कि आप योगी हैं। कल मैंने आपको बताया था कि एक योगी के लिए पूरा विश्व ही उसका परिवार है।

यूरोप में, इंग्लैण्ड और अमेरिका में विशेषरूप से मैंने

पाया है कि महिलाएं हावी हो गई हैं। और कहानियां सुनाकर कि किस प्रकार परिवार की देखभाल करनी है, किस प्रकार बच्चों की देखभाल करनी है, किस प्रकार कार्य करने हैं, वे पुरुषों को वश में करना जानती हैं। कभी कभी तो इस पर बहुत हैरानी होती है और आप लोग इसमें खो जाते हैं। मैंने इस प्रकार के बहुत से लोग देखे हैं। इसके कारण बहुत सी समस्याएं खड़ी हो गई हैं। मैंने महिलाओं से अनुरोध किया है कि वे सुधर जाएं और इस बात को समझ लें कि वे पत्नियां हैं। यदि वे न सुधरीं तो सहजयोग के सभी वरदान वापस ले लिए जाएंगे । तब उनपर सभी तरह के कष्ट टूट पड़ेंगे; मेरे कारण नहीं परन्तु एकादश रुद्र के कारण । **जिस प्रकार आप अपने सभी दोष भूतों के सिर मढ़ देते हैं, मुझे भी इसके लिए देवी देवताओं को जिम्मेदार ठहराने दें। मैं कोई जिम्मेदारी नहीं लेती । यदि आप गैर जिम्मेदार हैं तो वे आप पर गहन चोट करेंगे और आप कैंसर या किसी अन्य गम्भीर चीज से समाप्त हो जाएंगे । तब आप मुझे दोष न दें।** आज यह स्थिति है। मैं कुछ सहजयोगिनियों को जानती हूं जिन्होंने मेरे सम्मुख अपनी गलतियों को स्वीकार किया कि वो ऐसा करती रहीं, वैसा करती रहीं, परिवारों के विषय में बातें करती रही आदि आदि। उन्हें आघात पहुंचा । यह चीज समझी जानी आवश्यक है क्योंकि मेरे विचार में पश्चिमी देशों की महिलाओं के पास विवेक नहीं है। वे विवेकशील नहीं हैं। मैं इसी साधारण समीकरण पर पहुँची । कुछ लोग विवेकशील हैं और पकड़े हुए होने पर भी वे संवेदनशील हैं परन्तु यहां की महिलाएं आक्रामक हैं। विवेकशील नहीं हैं।

भारतीय महिला विवेकशील है वह बात को समझती है। वह जानती है कि यह आदि शक्ति हैं। उसका पति यदि कोई गलत कार्य कर रहा है तो वह कहती है,"मैं दस दिन के लिए उपवास करूंगी। क्या तुम स्वयं को सुधार लोगे ?" यदि तुम नहीं सुधरे तो मैं घर से चली जाऊंगी। भारत में महिलाओं ने ही सहजयोग को सफल बनाया है। वह अत्यन्त बुद्धिमान हैं। यहां बहुत आक्रामक होने के कारण महिलाओं में बुद्धि का अभाव है। वे बात को नहीं समझतीं । वे नहीं समझती कि मैं कौन हूं। वे नहीं समझती कि हमारा मूल्य क्या है। सभी बेवकूफी भरी चीजें उनके लिए महत्वपूर्ण हैं। आप सभी नहीं परन्तु आपमें से कुछ । बुद्धि के अभाव के कारण आप विवेकहीन महिलाओं के सम्मुख झुक जाती हैं। वे आपको सभी प्रकार की उल्टी-सीधी बातें बताती हैं। वे बातें बहुत अच्छी करती हैं। मैंने देखा है कि यहां पर केवल महिलाएं ही बोलती हैं। पुरुष नहीं बोलते । वे कभी बात नहीं करते । बच्चे की मृत्यु के हालात में, मैं नहीं समझ पाती, किस प्रकार वह बात कर पाती है! केवल स्त्री ही बात करेगी और पिता खिन्न होकर चूहे की तरह से चुपचाप बैठा रहेगा। इंग्लैण्ड तथा अन्य कई अन्य स्थानों पर मैंने सहजयोगियों को बताया कि आप लोग बिल्कुल अकर्मण्य हैं। यदि आप इसी तरह से आचरण करते रहे तो एक दिन यह भयानक महिलाएं तुम्हें नष्ट कर देंगी । महिलाओं को यह समझना चाहिए कि वह करुणा एवं सहनशीलता के गुण के कारण महिलाएं हैं । वे इस पृथ्वी मां की तरह से हैं। परन्तु यहां तो उनका अहम् इतना विकसित है, इससे सावधान रहें। आज अमेरिका क्यों नष्ट हो रहा है? अपनी महिलाओं के कारण।

मैं आपको यहां पर विवाहित बहुत सी भारतीय लड़ाकयों का उदाहरण दे सकती हूं। वे अपने पतियों को मार्ग पर लाई। उन्होंने सब कुछ ठीक किया । शनैःशनैः वे पुरुषों को ठीक प्रकार से सहजयोग में ले आईं । पश्चिम की यह बहुत बड़ी कमी है। मुझे समझ नहीं आता कि यहां के पुरुषों को क्या हुआ है।? दोष भाव के कारण वे गुलामों की तरह से हो गए हैं। भारत में स्थिति इसके विपरीत है विशेषकर उत्तरी भारत में, वहां पर स्त्रियों पर बहुत रौब जमाया जाता है। एक सहजयोगिनी थी जिसका पति एक डॉक्टर था । बाद में वह सहजयोगी बन गया । उसे पक्षाघात हो गया । पति को पक्षाघात होने पर उसकी पत्नी ने काम करके धनार्जन शुरू कर दिया । जब पत्नी धनार्जन करने लगी तो उसने स्वयं को अत्यन्त अपमानित महसूस किया और अपनी पत्नी पर और अधिक रौब जमाया । मेरे पास आकर उसकी पत्नी ने बताया,"जब मैं नहीं कमाती थी तो ज्यादा अच्छा था...." और वह एक एक पाई अपने पति को देती थी, फिर भी पति महाशय हर समय उस पर रौब झाड़ते थे। "तुमने यह कार्य क्यों नही किया? तुमने वह कार्य क्यों नहीं किया?" वह कहने लगी,"इन्होंने पहले कभी ऐसा नहीं किया था। ज्यों ही ये ठीक हो जाएंगे मैं धनार्जन बंद कर दूंगी क्योंकि मेरी कमाई को मेरे पति सहन नहीं कर सकते।"

तो मैं आप सभी लोगों से अनुरोध करूंगी कि सहजयोगिनियों को भी सहजयोग का ज्ञान वैसे ही होना चाहिए जैसे पुरुषों को है। केवल सुन्दर वस्त्र पहनकर मुस्कराना ही महत्वपूर्ण नहीं है। सहजयोग में आपको भी वैसे ही ज्ञान होना चाहिए जैसे सहजयोगियों को है। बच्चे उत्पन्न करने का अर्थ यह नहीं कि आपने कोई महान् उपलब्धि प्राप्त कर ली है। कोई भी बच्चों को जन्म दे सकता है: कुत्ते, बिल्लियां सभी कोई । इस स्थिति के लिए कुछ हद तक आपके पति भी जिम्मेदार हैं। तो बच्चे उत्पन्न करके, उनकी देखभाल करके, हर समय अपने पतियों पर रौब जमाकर आपने कोई विशेष उपलब्धि नहीं प्राप्त कर ली । सहजयोग के विषय में आप कितना जानती हैं? मैं जानती हूं कि कुछ महिलाओं को पैरों के चक्र तक का ज्ञान नहीं है। सहजयोग के विषय में वे

कुछ नहीं सीखना चाहती । सहजयोग का उपयोग वे केवल अपने पतियों पर रौब झाड़ने के लिए करना चाहती हैं। व्यक्ति को इस कमी का सामना करना चाहिए । सहजयोग का आपको कितना गहन ज्ञान है।

आपमें से अधिकतर लोगों में बहुत सी समस्याएं हैं। मैंने देखा है कि ज्यों ही आप अपने हाथ किसी की ओर करते हैं तो आपको लगता है, ओह मैं यहां पर पकड़ रहा हूं। यह नियमित भूत बाधा का चिन्ह है और मैंने लोगों को यह कहते देखा है कि वे संवेदनशील हैं। यह अत्यन्त भ्रमित करने वाली बात है। मैं बहुत संवेदनशील हूं, सहजयोग में मैं बहुत ऊंचा हूं। यह ऊंचा होने का तरीका नहीं है। आपको पूर्णत: कुशल होना होगा । आपका स्वास्थ्य बिल्कुल ठीक होना चाहिए और सहजयोग का ज्ञान पूर्ण होना चाहिए । आपमें से कितने लोगों ने Advent-अवतरण पढ़ी है? आइये देखें। आपमें से कितने लोगों ने एडवेन्ट पूरी पढ़ीहै (ईमानदारी से हाथ उठाएं)। बहुत बढ़िया ।

अब मैं जो कहने का प्रयत्न कर रही हूं वह यह है कि आपको खोज निकालना होगा कि सहजयोग क्या है? आपकी गुरु एक महिला है। वे सारे ज्ञान की स्रोत हैं। वे सारे ज्ञान की सागर हैं। तो क्यों आप पिछड़े रहें? सभी दिशाओं में हम पूरी तरह से समान होना चाहते हैं, पुरुषों के समान, यहां तक कि वेशभूषा में भी । तो सहजयोग के ज्ञान में क्यों नहीं । आपमें से कितनों ने अन्य लोगों को आत्मसाक्षात्कार दिया है? अपने हाथ उठाइये । मैं केवल महिलाओं से पूछ रही हूं। बहुत अच्छा । तो यह चीज है जिसके विषय में व्यक्ति को गर्वित होना चाहिए । व्यक्ति को ज्ञान होना चाहिए कि मानसिक तथा भावनात्मक रूप से वह कितना सहजयोग जानता है। आपमें से कितनी अपने पतियों पर प्रभुत्व जमाती हैं। सावधान रहें। मेरे विचार से केवल यही सहजयोगिनी ईमानदार है। मैं जानती हूं कि आप सभी रौब जमाती हैं और कभी कभी तो उन्हें दबा देने का प्रयत्न करती हैं। मैं अब आपसे इसलिए अनुरोध कर रही हूं कि आप शक्ति हैं। पुरुष के पीछे आप ही शक्ति हैं। आप ही लोग उन्हें महान् बना सकती हैं। आप लोग ही सहजयोग को सक्षम शक्ति बना सकती हैं। आप इस पृथ्वी मां की तरह से हैं जिसे सारी सुन्दर चीजें, यह सारे फल प्रदान करने होते हैं। यह सब कहां से आते हैं? यह सब पेड़ । यह पृथ्वी मां अत्यन्त साधारण दिखाई पड़ती हैं। परन्तु यह जो कुछ हमें प्रदान करती है उसे देखिए, उन सुन्दर वस्तुओं को देखिए ।

अत: अच्छी सहजयोगिनी बनने के लिए अच्छी पत्नी होना आवश्यक है, स्वयं को सदा आगे लाने वाली रौबीली पत्नी होना नहीं । मैंने सदा यह महसूस किया है, परन्तु इन दिनों जो 3-4 मामले मेरे सामने आये हैं, उनसे घटनाक्रम को देख कर मुझे बहुत आघात लगा है। वे मुझे अगुआ या किसी भी अन्य चीज को चोट पहुंचा सकती हैं। पुरुषों की अपेक्षा महिलाओं पर काबू पा लेना भूतों के लिए आसान है। बहुत अधिक आक्रामक (दायीं ओर को) जब आप हो जाती हैं तो आपको बाईं ओर की बाधा हो जाती है। इसका कारण यह है कि भावनात्मक स्वभाव के कारण आप भूतों की तरह चलती हैं और भूत आपको अन्य लोगों की अपेक्षा अधिक पकड़ते हैं। आप हैरान होंगे कि चरित्रभ्रष्ट यौन जीवन व्यतीत करने वाली महिलाएं पुरुषों से कहीं अधिक पतित होती हैं। विवाह के पश्चात पुरुष तो ठीक हो जाते हैं, महिलाएं नहीं। उन्हें मानसिक रोग हो जाते हैं, क्योंकि आप समझ लें, आप ही पूरे विश्व की इच्छाएं तथा भावनाएं हैं। आप इतनी महत्वपूर्ण हैं, आपके बिना कुछ भी आरम्भ नहीं हो सकता । पृथ्वी पर अवतरित होकर यदि मैंने सदाशिव से लेकर गणेश तक को एकजुट न किया होता तो वे कुछ भी न कर पाते । यह सत्य है। मैंने महिला, मां, पत्नी तथा भार्या के रूप में यह सब प्राप्त किया है। आपके लिए भी यह कार्य सुगम होना चाहिए, सुगमतम, क्योंकि एक महिला की तरह रहते हुए विश्व भर में इतने बच्चों को मैंने संभाला है। इस सारे कार्य को संभालते हुए अपने परिवार को भी भली भांति चलाया है। पूरा सन्तुलन इसमें लाई हूं और अब इस प्रकार यह प्रभावित हो गया है कि महिला केवल उपासक ही नहीं हो सकती है वह गुरुओं की भी महानतम गुरु हो सकती है।

जब मैंने आप सबको बुनियाद पर खड़ा कर दिया है तो मुझे अब आपको यह बताना है कि विकसित होकर आपने सहजयोग की देखभाल करनी है। आप अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं क्योंकि बुरी महिला या बुरी पत्नी किसी भी बुरे पुरुष की अपेक्षा अधिक हानिकारक होती है। आस्ट्रेलिया में मैंने यह घटित होते हुए देखा है। एक महिला ने पूरे आस्ट्रेलिया को नष्ट कर दिया है और एक अकेली महिला पूरे आस्ट्रेलिया को महान् बना सकती है। वो महिला मैं हूं। महिला होने का मुझे गर्व है। पुरुष बनने से मैं घृणा करूंगी। श्रीकृष्ण को देखें। उन्हें सोलह हजार महिलाओं से विवाह करना पड़ा । उनसे उन्हें विवाह करना पड़ा, शिष्यों के रूप में वे उन्हें न रख सके । वे शक्तियां थी, उनकी शक्तियां थीं । शक्तियों को महिलाएं होना ही था । लोग कह रहे हैं और कह सकते हैं कि श्रीकृष्ण स्त्री-चित्त-चोर थे । परन्तु मुझसे कोई ऐसा नहीं कह सकता क्योंकि मैं एक महिला हूं और एक मां को चुनौती नहीं दी जा सकती । सदैव पिता को ही चुनौती दी जाती है मां को नहीं । महिला के रूप में आप बहुत सी उपलब्धियां प्राप्त कर सकती हैं। उसके लिए आपको यह जानना आवश्यक है कि दूसरों के प्रति अपने पावन प्रेम को किस प्रकार अभिव्यक्त करें, अपनी वास्तविकता दूसरों के सम्मुख किस

प्रकार प्रकट करें और किस प्रकार सहजयोग के लिए अपने पति की सहायता करें ।

विवाह के समय आपने मुझे वचन दिया था कि आप सहजयोग के लिए कार्य करेंगी और अपने पति की सहजयोग करने में सहायता करेंगी । आपका पति जब अन्य सहजयोगियों की देखभाल कर रहा होगा आप उसकी सहायता करेंगी तथा आपके घर आने वाले सभी सहजयोगियों की आप देखभाल करेंगी । अपने घर को आप सहजयोग केन्द्र बनाएंगी, लोगों का अपने घर पर स्वागत करेंगी और सामूहिकता को बढ़ाने में प्रयत्नशील होंगी । इन वचनों के साथ आपका विवाह किया गया था । आप लोग यह सब दिखा सकती हैं। महिलाओं के लिए अदूरदर्शी, क्षुद्र एवं दंभी होना सुगम है। पुरुष को ऐसा बनने में समय लगता है। इन सब सम्भावनाओं के साथ-साथ यदि आपमें पुरुषों पर हावी होने की आकांक्षा भी है तो आप न इधर की हैं न उधर की । तब आप लिंग-विहीन हैं। मेरी समझ में नहीं आता कि ऐसी अवस्था में मैं उन्हें क्या नाम दूं? ऐसे व्यक्ति का नामकरण आप ही करें जो न तो पुरुष है और न महिला । आइये महिला होने पर गर्व करें। इसी प्रकार हम इस विश्व को सबके लिए स्वर्ग बना सकती हैं।

अब विश्व की मुख्य समस्याओं की बात करें। आपने देखा होगा कि इन दिनों मैं राजनीति के विषय में बहुत कह रही हूं और हो सकता है एक दिन उचित समय आने पर आप सबको राजनीति में प्रवेश करना पड़े । मैं अमेरिका में श्री जैक्सन से भी मिलने वाली हूं। देखें क्या होता है। आप यह भी जानते हैं कि इंग्लैण्ड में भी हम कार्यरत हैं। दो वर्ष के अन्दर मैं इन सब नेताओं से मिलने वाली हूं तथा किसी भी विवेकशील एवं सम्माननीय तरीके से हम कोई हल खोज लेंगे, परन्तु आप सबको यह दर्शाना होगा कि आप अत्यन्त सन्तुलित एवं अच्छे परिवार के हैं।

सुनिए क्या आप शान्त हो जाएंगी? ये कौन हैं? आपका बेटा बहुत शैतान है। क्या आप इसे ले जाएंगी? आपको चाहिए कि बच्चों को शिक्षा दें कि श्रीमाताजी के सम्मुख किस तरह से आचरण करना है। आप अवश्य उन्हें सिखाएं। एक बच्चा अन्य सभी बच्चों को बिगाड़ सकता है। सावधान रहें। कभी कभी उनकी पिटाई करें। मेरे विचार से यह आवश्यक है अन्यथा बच्चे कभी सुधरेंगे नहीं । उनके बाएं स्वाधिष्ठान पर दो थप्पड़ पड़ जाने से वे ठीक हो जाएंगे । आवश्यक शिक्षण एवं उचित सूझ-बूझ के साथ हमें समाज एवं परिवार बनाने हैं। मैंने तुम्हें पहले भी बताया था कि पांच वर्ष की आयु तक आप उनकी पिटाई कर सकते हैं। दस वर्ष की आयु तक आप उन्हें शिक्षा दें और सोलह वर्ष की आयु के पश्चात् आप उनसे मित्रसम व्यवहार करें। परन्तु पहली दो बातें यदि आपने न की तो फिर आप कभी उन्हें संभाल न सकेंगी । वे आपके सिर पर चढ़ जाएंगे। इस देश के बच्चों की भी यह समस्या है।

परन्तु आज समस्या उससे कहीं अधिक गंभीर है जितना हम सोचते हैं । हिटलर की शक्ति की तरह से एक नकारात्मक शक्ति सभी देशों की महिलाओं के माध्यम से उठ रही है। महिलाओं के माध्यम से यह भयानक हिटलर तथा मृत जर्मन लोग उत्पन्न हो रहे हैं। अब वे नाजियों की तरह से बनने लगे हैं। अत: महिलाओं को अत्यन्त सावधान रहना है कि वे अपने अन्दर कार्यरत नकारात्मक शक्तियों के सम्मुख झुक न जाएं। उन्हें विनम्र, मधुर एवं त्यागशील बनना है क्योंकि ऐसा बनने की शक्ति उनमें है। केवल स्त्री ही यह सब कर सकती है। पुरुष नहीं कर सकता । पुरुषों में कुछ अन्य प्रकार का माधुर्य होता है परन्तु महिलाओं में वह विवेक है जो पूरे विश्व को सुन्दर बना सकता है।

अब आप क्या कर रहे हैं? शान्त होकर बैठिए। क्या कृपा करके आप शान्त होकर बैठेंगी? सुनिए ! यदि आप शान्त होकर नहीं बैठ सकती तो अच्छा होगा चले जाइये । शान्त होकर बैठिए । कल तुम यहां नहीं थी तो सब लोग शान्ति से बैठे थे। आप उचित व्यवहार करें । सभी लोग मर्यादा सीखें, ठीक है? बच्चों को यहां या कहीं और ले जाएं तो उन्हें सिखाएं कि किस प्रकार व्यवहार करना है। अवश्य उन्हें सिखाएं और बताएं । बच्चों का सीखना अत्यन्त आवश्यक है।

अब हम विश्व की गम्भीर समस्याओं पर आते हैं । मानसिक प्रक्षेपण (दिमागी जमाखर्च) अब स्पष्ट नजर आ गया है (मेरी बात को सुनें और समझने का प्रयत्न करें) । यह अति गंभीर समस्या है कि जब आप बाएं या दाएं को चले जाते हैं तो अति में चले जाते हैं और स्वयं भी समस्याओं में चले जाते हैं और दूसरों के लिए भी समस्याएं उत्पन्न करते हैं। अत: हमें चाहिए कि सभी को मध्य में रखें और मध्य में रहने के लिए हमें ऊपर उठना होगा। अब समस्या यह है कि बहुत से लोग सहजयोग में आ गए हैं। इससे पूर्व यह उपलब्धि कभी न हो सकती थी । इसका मुख्य कारण यह था कि पहले लोगों के मस्तिष्क में प्रवेश करके यह बताना असंभव था कि क्या किया जाए । सभी लोगों ने भरसक प्रयत्न किया।

आज मैं बुद्ध की बात कर रही थी । बुद्ध ने लोगों को यह बताने का भरसक प्रयत्न किया कि व्यर्थ के कर्मकाण्डों से निकलकर मोक्ष प्राप्त कर लें । उन्होंने सभी प्रयत्न किए परन्तु उनकी मृत्यु के पश्चात् लोग कहने लगे कि बुद्ध ने कहा है कि मूर्तियां न बनाओ : तो हम स्तूप बना लेते हैं। तो

स्तूप बनाकर वह उन्हें पूजने लगे । जो उन्होंने कहा था ठीक उसके विपरीत - **कि शुद्धिकरण, अन्तदर्शन और मध्यमार्ग के माध्यम से मोक्ष प्राप्त कर लें** । उन्होंने यहां तक कहा कि परिवार न बनाएं इससे समस्याएं बढ़ती हैं। अपने अन्दर त्याग को अपनाएं ताकि सब कुछ स्पष्ट देख सकें। परन्तु पहले की तरह से उनके अनुयायी मूर्खतापूर्ण चीजों में फंस गए और स्तूप आदि बनाकर उनकी पूजा करने लगे । यही चीज ईसा के जीवन में भी आप देख सकते हैं। महावीर के जीवन में भी देख सकते हैं। यही चीज आप महान् अवतरणों, पैगम्बरों, इस्लाम आदि में भी देख सकते हैं। बार-बार वही घटित हुआ और लोग पथभ्रष्ट हो गए । परन्तु किसने पथभ्रष्ट किया? सभी महान् अवतरणें के सार तत्वों को किसने बिगाड़ा? इसे स्वयं अनुयाइयों ने बिगाड़ा क्योंकि वे आत्म साक्षात्कारी न थे।

अब, गम्भीर समस्या, जो मैं देख रही हूं, यह कि मेरी शिष्याएं कहलाने वाली महिलाएं सहजयोग को बिगाड़ेंगी-अति स्पष्ट है। मैं इसे आज देख रही हूं। यह बात मैं आज स्पष्ट-पूर्णत: स्पष्ट-देख रही हूं । वे सहजयोग को बिगाड़ेंगी क्योंकि वे हावी हो गई है और सोचती है कि उन्हें सहजयोग का ज्ञान है। क्योंकि वे सोचती है कि वे बहुत महान् बन गई हैं। अगुवा की पत्नी स्वयं को अगुवा समझती है। किसी को कोई कार्य करने के लिए यदि बुलाया जाए तो पत्नी सोचती है कि उसके पति पर श्रीमाता जी से कहीं अधिक अधिकार उसका है। आज महिलाएं दोषी हैं और इसी कारण मैं आपको चेतावनी देना चाहती हूं। मैंने यह देखा है। मैं ऐसी दस महिलाएं गिनवा सकती हूं जिन्होंने यह कार्य किया है। और अब ग्यारहवीं बात इस तरह की है।

मैं आपसे ये समझने का अनुरोध करती हूं कि जिम्मेदारी आप पर होगी । जब इतिहास लिखा जाएगा तो जैसे रामायण में लिखा गया है। कि राम की सौतेली मां कैकयी की सेविका ही रामायण की सारी घटनाओं के लिए जिम्मेदार है। वह सब तो घटित होना ही था । परन्तु आज वह मन्थरा, वह कैकयी कहां है? भारतीय लोग उनका नाम नहीं लेते । कोई यदि उनका नाम ले तो वे थूकते हैं। वे समय के अन्तराल में समाप्त हो गई हैं। उस समय उन्होंने सोचा था कि हमने बहुत बड़ा काम किया है। यही सब मैंने आपको बताना है। आप यदि इतिहास के पन्नों में दफन नहीं हो जाना चाहते, क्योंकि हम एक अत्यन्त संकटपूर्ण समय से गुजर रहे हैं, तो हमें बहुत सावधान रहना होगा । हम क्या करना चाहते हैं? हम क्या कर रहे है? मैं वर्तमान क्षण, वर्तमान समय की बात कर रही हूं और कुछ नहीं कहना चाहती कि भविष्य में आपके साथ क्या होगा । आप यदि नर्क में जाना चाहते हैं तो जा सकते हैं। मैं कुछ नहीं कहूंगी कि कौन नरक में जाएगा और कौन स्वर्ग में । परन्तु अपने अन्तर्दर्शन द्वारा आपने यह समझने का निर्णय करना है क्या घटित होने वाला है।

महिलाओं से मुझे विशेष रूप से अनुरोध करना है कि इस आधुनिक काल में केवल वही विश्व की रक्षा कर सकती है। पुरुष नहीं कर सकते । वे पहले अपना कार्य कर चुके हैं। अब रक्षा करने की बारी आपकी है, अपनी सूझबूझ, करुणा, बलिदान, विवेक और अन्तर्जात प्रेम से न केवल अपने बच्चों, अपने पति, अपने परिवार बल्कि पूरे विश्व की। आप सब लोगों के लिए अपना कर्त्तव्य करने का यह बहुत अच्छा अवसर है। हमारी कुछ बहुत अच्छी सहजयोगिनियों के इस मामले में बहुत अच्छे अनुभव हैं। कुछ ने वास्तव में अखण्ड आनन्द की स्थिति प्राप्त की है। वास्तव में कुछ ने यह स्थिति पाई है। वो यदि आ रही होती हैं तो मैं महसूस कर लेती हूं कि वे आ रही हैं। पूरा वातावरण उनकी प्रतीक्षा करता है, पूरा ब्रहमाण्ड पूर्ण सम्मान से झुककर उनके आगमन की प्रतीक्षा कर रहा है। इतनी उच्च महिलाएं भी हैं। हमें चाहिए कि उन्हें अपना आदर्श बनाएं, मूर्ख, बेकार, अहंकारी महिलाओं को नहीं । उन्हें बहुत महान् समझा जाना चाहिए । मुझे आपको यही बताना है कि आपके अन्दर महान् शक्ति है। सहजयोग केवल आप तक और आपके बच्चों तक ही सीमित न हो जाए । अत: अपनी गहनता को स्पर्श करें।

आज की समस्या यह है कि महिलाओं ने अपना मूल्य खो दिया है, अपनी गहनता खो दी है। यह आज की मूल समस्या है। महिलाएं स्पर्धात्मक, धन लोलुप, सफलता तथा अन्य मूर्खतापूर्ण चीजों की ओर दौड़ने वाली हो गई है। उत्थान उनका लक्ष्य नहीं है। अत: आपको बहुत सावधान रहना होगा । यह मूल समस्या आपको देखनी चाहिए और मैं सभी सहजयोगियों से अनुरोध करूंगी कि सावधान रहें। एक ही महिला स्वर्ग की सीढ़ी भी हो सकती है और पतन का मार्ग भी । परन्तु महिलाओं ने ऐसी अवस्था प्राप्त कर ली है कि वे हिटलर की तरह से आदेश देने लगी हैं और इसमें केवल ग्यारह वर्ष लगे हैं। ऐसी स्त्रियां अब मंच पर दिखाई पड़ती हैं। धर्मपरायणता, सद्चरित्र और विनम्रताविहीन स्त्री स्त्री नहीं है। करुणा उसका आभूषण है। काश मैं विलियम ब्लेक की तरह लिख सकती, काश उसने पश्चिमी महिलाओं तथा उनके सौन्दर्य के विषय में लिखा होता, और यह भी कि उन्होंने क्या प्राप्त करना है। मैं जानती हूं कि एक बार जब महिलाएं अपनी शक्ति को जान जाएंगी तो वे इस विश्व को सुन्दर विश्व बना देंगी । परन्तु यह कार्य वे अपनी दुर्बलताओं से, पुरुषों की तरह से पतन के गर्त में जाते हुए नहीं कर सकती ।

इस कार्यक्रम में हम दो उपलब्धियां प्राप्त कर सकते हैं। कल मैंने आपको अन्तर्दर्शन के विषय में बताया था और

आज यह कि समस्या कहां है। समुद्र में चलने के योग्य जितनी भी बड़ी नाव आप बना लें, उसमें छेद कर देने पर वह नाव डूब जाएगी । चाहे जितनी अच्छी आंखे आपकी हों, उनमें एक छिद्र हो जाने पर आप आकाश को नहीं देख सकते और अपनी सूक्ष्म विधियों से आपकी आंखों में यह सुराख कर देने की कला इन महिलाओं के पास है। सौन्दर्य का पूर्ण दृश्य प्रकट करने की कला भी उनके पास है।

भारत में एक बात से मैं बहुत प्रसन्न होती हूं कि यहां पर अधिकतर पुरुष आकर मुझे बताते हैं,"मेरी पत्नी मुझे सहजयोग में लाई, उसी ने मुझे सहजयोग के विषय में बताया, उसी ने मेरे लिए और सहजयोग के लिए इतना कार्य किया।" महिलाओं के प्रति इतना सम्मान! जो यहां आई हैं उनमें से भी कुछ धीरे-धीरे अपने पतियों को सहजयोग में लाई हैं। नि:सन्देह कुछ भारतीय महिलाएं भी बहुत तुच्छ हैं। जब वे विदेश आती हैं और यहां के तौर तरीके देखती हैं तो वे और अधम हो जाती हैं। परन्तु अन्तर्जात रूप से भारत में महिलाओं का दृष्टिकोण भिन्न है: उसे परिवार में धर्म स्थापित करना पड़ता है। अपने परिवार में उसे परिवार के सौन्दर्य की स्थापना करनी होती है, अपने बच्चों को सारी अच्छाई और धर्मपरायणता उसे देनी होती है; उसे विनम्र होना होता है, अपनी आवाज ऊंची नहीं करनी हो तो, ऊंची आवाज करने वाली स्त्री बच्चों को बिगाड़ती है: वह बच्चों को धृष्ट होना सिखाती है। एक प्रकार से उसे अपने पति की आज्ञा का पालन करना होता है ताकि बच्चे भी उसकी आज्ञा का पालन करें । यह चीजें कार्य करती हैं। वहां का समाज यहां की अपेक्षा कहीं अच्छा है । तो महिलाओं की स्वतन्त्रता का यह आन्दोलन उस गुप्त कार्य का चिन्ह है जो चल रहा है। भावनात्मक होने के कारण महिलाएं फरेबी होती हैं। बड़ी चतुराई से, चालबाजी से वे इस प्रकार के कार्य करती हैं।

परन्तु आप सब मेरी तरह से बन सकती हैं। यदि आपमें इच्छा है तो आप पुरुषों से भी अधिक मेरी शक्तियां प्राप्त कर सकती हैं। परन्तु स्वयं को महत्वपूर्ण दर्शाने के अपने तुच्छ स्वप्नों और विचारों से आपको बाहर आना होगा। यदि आप अपने पर जिम्मेदारी ले लें कि हम सब भी वह कर सकती हैं जो श्रीमाता जी कर रही हैं तो मुझे विश्वास है कार्य हो जाएगा । सर्वप्रथम आपको खाना बनाना सीखना है। घर का कार्य पुरुष को कभी न करने दें। वे आप पर पूरी तरह से निर्भर हो जाएंगे । बहुत बढ़िया खाना बनाएं। कुशल रसोइया बनें। पति घर वापस आ जाएगा । मैं आपको रहस्य की बात बता रही हूं। एक साक्षी की तरह से पति को समझने का प्रयत्न करें। कभी कभी वह बिना बात नाराज हो जाता है। साक्षी की तरह से उसे देखें । वह भी आपका एक अन्य बच्चा है। वह एक बड़ा बच्चा है जिसकी देखभाल आपने करनी है। करुणामय एवं सतर्क बनें । हैरानी की बात है कि आप लोगों ने अभी तक यह विधियां नहीं सीखीं ! संभवत: आपकी माताओं ने इसके विषय में नहीं बताया ।

नि:सन्देह हम एक आदर्श जाति, आदर्श परिवार और पूर्ण आदर्श बनने वाले हैं। हम विश्व को दिखा देंगे कि लोग जो भी विधियां हम पर उपयोग करते रहें हमें उसकी चिन्ता नहीं । हमें आगे बढ़ते चले जाना है। श्री गणेश की तरह से रस्सियों तथा जंजीरों से बंधा हुआ विशालकाय हाथी चलता ही चला जाता है। इसी प्रकार हम सब सहजयोगियों को कार्य करना है। परन्तु सहजयोग की महिलाओं को यह कार्यान्वित करना है। उन्हें देखना है कि वे अपने पुरूषों को शक्ति प्रदान करती है। किसी पति को यदि मैं दुर्बल पाती हूं तो मुझे पता चल जाता है कि इसकी पत्नी दोष ढूंढने वाली, प्रभुत्व जमाने वाली है जो स्वयं को बहुत ऊंचा समझती है। किसी पुरुष को यदि में बहुत सशक्त देखती हूं तो जान जाती हूं कि इसके पीछे कोई महिला है। यह विद्युत प्रकाश और बल्ब की तरह से है। यदि विद्युत ठीक प्रकार से दौड़ रही है तो बल्ब जलता है बिल्कुल वैसे ही । परन्तु यदि आपकी एकाकारिता इन मूर्ख, अहंकारी महिलाओं से है तो आप खो जाएंगे, समाप्त हो जाएंगे ।

आप यदि मुझे पहचान जाएं, यदि आप ये समझ जाएं कि मैं क्या कह रही हूं और जो आपका कार्य है उसे करें तो तुरन्त आप देख लेंगे कि श्रीमाता जी हमारी जड़ों को दृढ़ करने का प्रयत्न कर रही हैं। क्योंकि आप ही वृक्ष की जड़ें हैं। पूरा पोषण आपने ही प्रदान करना है। सभी सहजयोगियों के प्रति आपको मां और बहन जैसा होना है। लड़ाई-झगड़ा नहीं करना है और न ही कठोर शब्द कहने हैं। यह स्त्री का कार्य नहीं है, उसे बहस में नहीं पड़ना है, शान्त होकर देखना है। उनके यदि कोई चक्र पकड़ भी रहें हो तो पत्नियों के रूप में आप उन्हें ठीक कर सकते हैं। बिना बताए आप यह कार्य कर सकते हैं, आप यह कार्य कर सकते हैं। आज यद्यपि समस्याएं बहुत भयानक, आघात पहुंचाने वाली तथा विध्वंसक लगती हैं फिर भी चाबियां आज की महिलाओं के हाथ में है। यदि वे अपनी गरिमा और अपने महत्व को समझने का निर्णय कर लें, घटिया लोकप्रियता के पीछे दौड़कर स्वयं को सस्ता न बनाएं तो वे सभी समस्याओं का समाधान कर सकती हैं। मैं यदि इतनी बड़ी समस्याओं का एकमात्र कारण खोज सकी हूं और इस कारण को आप यदि दूर कर दें तो मुझे पूर्ण विश्वास है कि हम सहजयोग को संभाल सकेंगे । हम पूरे विश्व को संभाल सकते हैं और मानवता की पूरी तरह से रक्षा होगी क्योंकि यही आपकी इच्छा है।

परमात्मा आपको धन्य करें ।

श्री आदि शक्ति पूजा

कबैला

06-06-1993

आदि शक्ति क्या है?

आज आप पहली बार मेरी पूजा करने वाले हैं। अभी तक सदा मेरे तत्व या एक भाग की पूजा होती रही है। हमें स्पष्ट रूप से समझना है कि आदि शक्ति क्या है। जिस प्रकार आप कहते हैं यह सदाशिव, सर्वशक्तिमान परमात्मा की शुद्ध इच्छा है। परन्तु सर्वशक्तिमान परमात्मा की इच्छा क्या है? आप देखें कि आपकी इच्छाओं का उद्भव कहां से है। यह न तो परमात्मा के प्रेम से है और न ही आम प्रेम से : इनका उद्भव भौतिक पदार्थों के प्रेम से या सत्ता प्रेम से है। इन सभी इच्छाओं के पीछे प्रेम है। बिना प्रेम के आप किसी चीज की इच्छा नहीं करते तो आपका यह सांसारिक प्रेम, जिसके लिए आप अपना इतना समय व्यर्थ गंवाते हैं, आपको संतोष प्रदान नहीं करता । क्योंकि आपका प्रेम सच्चा नहीं है। यह तो कुछ समय के लिए आपका प्रेमोन्माद है जिससे आप तंग आ जाते हैं और फिर यह उन्माद एक से दूसरी चीज के लिए परिवर्तित होता रहता है।

तो आदि शक्ति परमात्मा के दिव्य प्रेम का अवतार है, परमात्मा का शुद्ध प्रेम है। अपने प्रेम में उन्होंने क्या इच्छा की। परमात्मा ने इच्छा की कि वह मानव की सृष्टि करें जो आज्ञाकारी हो, भव्य हो और देवदूतों सम हो । आदम और ईव का सृजन करने के पीछे भी यही विचार था । तो देवदूतों को स्वतन्त्रता नहीं होती क्योंकि उनका सृजन ही इस प्रकार से किया गया होता है। उनके कार्य नियत होते हैं, वे नहीं जानते कि वे क्यों कार्य कर रहे हैं। पशुओं को भी इस बात का ज्ञान नहीं होता कि वे क्यों कार्य नहीं कर रहे हैं। प्रकृति के बन्धन में होने के कारण वे किए चले जाते हैं। सर्वशक्तिमान परमात्मा के पाश में वे बंधे होते हैं। कहा जाता है कि भगवान शिव पशुपति हैं अर्थात् सभी पशु उनके वश में हैं। पशुओं में सभी इच्छाएं होती हैं । परन्तु वे पश्चात्ताप नहीं करते, उनमें अहम् नहीं होता, वे यह नहीं सोचते कि यह कार्य गलत है और यह ठीक । अहम् न होने के कारण उन्हें कर्म की समस्या नहीं होती, क्योंकि वे स्वतन्त्र नहीं हैं ।

इस बिन्दु पर आदिशक्ति का पदार्पण होता है, आदिशक्ति जो कि शुद्ध प्रेम है । एक पिता के विषय में सोचें जिसने अपना सारा प्रेम एक ही व्यक्तित्व में उंड़ेल दिया हो : तो उसके पास क्या बाकी बचा? कुछ नहीं, वह मात्र देख रहा है। वह क्या सोचता है। वह तो बस अपनी इच्छा का, अपने प्रेम का तमाशा देख रहा है। देख रहा है कि किस प्रकार यह कार्यान्वित हो रहा है । देखते हुए वह अत्यन्त सावधान है क्योंकि उसे इस बात का ज्ञान है कि जिस व्यक्तित्व की सृष्टि मैंने की है वह प्रेम एवं करुणा के अतिरिक्त कुछ भी नहीं और करुणा इतनी श्रेष्ठ है कि यह कोई चुनौती या किसी प्रकार का प्रश्न सहन नहीं कर सकती और न ही यह अपना अपमान, पतन या प्रतिष्ठाहीनता सह सकती है। इस मामले में वह बहुत सावधान तथा जागरूक है। तो उसमें और उसकी प्रेम इच्छा में एक दरार आ गई है।

इस प्रेम की इच्छा ने एक व्यक्तित्व अर्थात् अहम् भी दिया है, और इस अहम् को स्वयं कार्य करना होता है। एक प्रकार से यह इतना स्वच्छन्द व्यक्तित्व बन गया जिसे अपनी इच्छानुसार कार्य करने की स्वतन्त्रता थी । अपने लौकिक जीवन में भी किसी पति-पत्नी को इतना स्वतन्त्र हम नहीं पाते कि बिना तालमेल, बिना सूझ-बूझ, बना एकाकारिता और बिना तारतम्य के वे कोई भी कार्य करने के लिए स्वच्छन्द हों। ये तो चांद और चांदनी, सूर्य और धूप की तरह से है । यह इस प्रकार का तालमेल है जिसमें एक व्यक्ति कोई कार्य करता है और दूसरा उसका आनन्द लेता है। उस सुन्दर दरार में आदिशक्ति ने अपनी योजना परिवर्तित करने का निर्णय किया । वे 'संकल्प-विकल्प करोती' के लिए प्रसिद्ध हैं। किसी भी कार्य का यदि आप बहुत अधिक आयोजन करेंगे तो वे इसमें परिवर्तन कर देंगी । जैसे आज की ग्यारह बजे की पूजा । आदम और ईव की सृष्टि करने पर आदिशक्ति ने सोचा कि यदि वे भी अन्य पशुओं या देवदूतों के समान होंगे तो उसका क्या लाभ होगा । उन्हें इस बात का ज्ञान होना चाहिए कि वे क्या कर रहे हैं और क्यों कर रहे हैं। उन्हें यह समझने की स्वतन्त्रता होनी आवश्यक है कि ज्ञान क्या है। पशुओं की तरह से पाशबद्ध जीवन उनका क्यों होना चाहिए? तो अपनी निरंकुश शक्ति (जोकि उन्हें प्रदत्त थी) के अन्तर्गत आदिशक्ति ही सर्पणी के रूप में आई और आदम और ईव को बताया कि तुम ज्ञान के फल को चखो । जो लोग

सहजयोगी नहीं हैं उनसे यह बात नहीं बता सकते । उन्हें आघात लगेगा । परन्तु यह सर्पणी जो उनकी परीक्षा के लिए उनके पास आई उसने उन्हें बताया कि अच्छा होगा कि आप इस फल को चखें । सर्पणी ने स्त्री (ईव) को बताया, पुरुष को नहीं क्योंकि स्त्री चीजों को सुगमता से स्वीकार कर लेती है। पुरुष को कुछ भी आप बताते रहें वह जल्दी से इसे स्वीकार नहीं करता परन्तु स्त्री स्वीकार कर लेती है। पुरुष विचार-विमर्श करता है, बहस करता है। इसीलिए सर्पणी ने स्त्री को बताया । यह आदिशक्ति (Holy Ghost) वास्तव में स्त्रीलिंग है और इसलिए स्त्री के अधिक समीप रहती है तो सर्पणी के रूप में आकर इसने बताया कि ज्ञान का फल चखो। अब पति को समझाना महिला का कार्य था और यह कार्य महिलाएं बहुत अच्छी तरह से जानती हैं। कभी-कभी तो वे गलत ढंग से, गलत एवं अत्यन्त पापमय चीजें अपने पतियों को समझा देती हैं।

आप जानते हैं मैकबैथ (MACBETH) में क्या हुआ? बहुत स्थानों पर हमने देखा है कि महिलाएं अपने पतियों को गलत दिशा में ले जाती हैं। पत्नी यदि गलत है तो वह पति को भ्रमित कर सकती है और यदि ठीक है तो वह पति को उचित मार्ग पर चला सकती है और वह मुक्ति प्राप्त कर सकता है। आदम का अपनी पत्नी में पूर्ण विश्वास था ।. अत: उन्होंने परमात्मा के इस मादा व्यक्तित्व के पथ प्रदर्शन में ज्ञान के फल को चखा । ईसा, मोहम्मद साहब, गुरु नानक के अनुयायी इस बात को नहीं समझ सकते । उन्होंने केवल उनके दर्शन किए, वे इस बात को नहीं समझ सके । यदि उन्होंने इसे लोगों से बताया होता तो लोगों ने उनकी बात को बिल्कुल न सुना होता ।

अत: उस युग में लोगों के चित्त और प्राप्त करने की शक्ति के अनुसार धर्म एवं उत्थान के विषय में बताया । परन्तु भारत में युग-युगान्तरों से कुण्डलिनी की बात की जाती रही है और लोगों को इस बात का भी ज्ञान था कि कुण्डलिनी हमारे अन्दर आदिशक्ति का प्रतिबिम्ब है। आपको पढ़कर सुनाया गया है कि 'मैं सभी में हूं।' आप समझ लें कि आदिशक्ति प्रेम की - शुद्ध प्रेम एवं करुणा की शक्ति हैं। इसके अतिरिक्त उनमें कुछ नहीं है। उनके हृदय में केवल शुद्ध प्रेम है। परन्तु यह प्रेम अत्यन्त शक्तिशाली है, अत्यन्त शक्तिशाली । यही प्रेम उन्होंने पृथ्वी मां को प्रदान किया है। चाहे जितने भी पाप हम करते रहें, पृथ्वी मां इतनी सारी सुन्दर वस्तुएं उत्पन्न करके अपने प्रेम की वर्षा कर रही है। ये आकाशगंगाएं और सितारे जो आप देखते हैं इनके माध्यम से वे अपने प्रेम सौन्दर्य की अभिव्यक्ति कर रही हैं। यदि आप विज्ञान की दृष्टि से देखें तो विज्ञान में प्रेम नहीं है। इसमें प्रेम का प्रश्न ही नहीं उठता । जो लोग योग की बात करते हैं वो भी प्रेम एवं करुणा की बात नहीं करते ।

जिस व्यक्ति में प्रेम एवं करुणा नहीं है उसमें परमात्मा की शक्ति नहीं हो सकती । परमात्मा की शक्ति में ही सभी कुछ निहित है। इस पृथ्वी पर और अगणित ब्रह्माण्डों में जिस भी चीज का सृजन हुआ है वह देवी मां (आदि शक्ति) के प्रेम के कारण हुआ है। तो आदि शक्ति का प्रेम कभी कभी तो इतना सूक्ष्म होता है, इतना सूक्ष्म कि आप इसे नहीं समझ सकते । मैं जानती हूं आप सब मुझे अत्यन्त प्रेम करते हैं, मेरे प्रति आपमें अगाध प्रेम है। आपसे मेरी ओर आने वाली चैतन्य लहरियां इस प्रकार होती हैं जैसे झील के पानी में लहरें मध्य से चल कर किनारे की तरफ आती हैं और फिर वापस लौट जाती हैं और किनारों पर बहुत सी चमकती हुई बूंदें छोड़ जाती हैं। इसी प्रकार मैं अपने हृदय में आपके प्रेम को, इस चमकते हुए दिव्य प्रेम के सौन्दर्य को गुंजरित करते हुए महसूस करती हूं । अपनी इस अनुभूति का वर्णन आपके सम्मुख करने में मैं असमर्थ हूं। परन्तु पहली चीज जो इससे होती है वह यह है कि इससे मेरी आंखों में आंसू आ जाते हैं, क्योंकि यह करुणा है, 'सांद्र करुणा' सांद्र करुणा; यह आद्र है शुष्क नहीं। पिता की करुणा शुष्क हो सकती है, यह कार्य करो नहीं तो मैं तुम्हें गोली मार दूंगा, परन्तु मां इस प्रकार चोट पहुंचाने वाली कोई भी बात नहीं कह सकती । आपको सुधारने के लिए उसे कुछ कहना पड़ सकता है परन्तु सांद्र करुणा के कारण उसका कहने का ढंग पिता से बिल्कुल भिन्न होगा । दिव्य प्रेम के कारण उसका हृदय ऐसा बना । अत: शरीर का हर अंग और सभी कुछ दिव्य प्रेम से सृजित हुआ, इसका जर्रा-जर्रा दिव्य प्रेम प्रवाहित करता है। चैतन्य लहरियां दिव्य प्रेम के अतिरिक्त कुछ भी नहीं।

जैसा मैं आपको पहले भी बता चुकी हूं कि इस अवतरण को आना ही था, समय आ गया था । दिखाई दे रहा था कि समय आ गया है। परन्तु नियत समय और सहज समय में अन्तर है। नियत समय वह होता है जिसमें आप कह सकते हैं कि रेलगाड़ी फलां समय आयेगी और फलां समय पहुंचेगी । आप कह सकते हैं कि यह मशीन इतने समय में इतनी चीजें बना देगी । परन्तु जीवन्त चीजें जो स्वत: एवं सहज होती हैं उनका समय आप नहीं बता सकते । इसी प्रकार से स्वतंत्रता की इस प्रक्रिया, जिसका आपके पास बाहुल्य है, इसके समय के विषय में भी आप नहीं बता सकते; आप नहीं कह सकते कि फलां समय दिव्य प्रेम के सूक्ष्म ज्ञान को प्राप्त करने के लिए लोग उपलब्ध होंगे । ज्ञान बहुत शुष्क भी हो सकता है। भारत में ऐसे बहुत से लोग हो गये हैं जो ग्रन्थों के अध्ययन में और मन्त्रोच्चारण में बहुत व्यस्त थे । वे इतने शुष्क हो गये कि उनका शरीर कंकाल की तरह से बन गया और वे इतने क्रोधी स्वभाव के हो गये कि किसी व्यक्ति की ओर यदि वे देखते तो वो वह भस्म हो जाता । क्या आप पृथ्वी पर तपस्या करने इसलिए आये हैं कि

किसी को भस्म कर दें? परन्तु वे तपस्वी स्वयं को इसीलिए बहुत महान् मानते थे क्योंकि उनके देखने मात्र से व्यक्ति भस्म हो जाता था ! परहित का कोई विचार उनके हृदय में न था । इस दिव्य प्रेम के माध्यम से पहली उपलब्धि जो हुई है वह है आपका 'हित' । 'हित' अपने आप में अत्यन्त भ्रमित करने वाला शब्द है 'हित' का अर्थ है; जो कुछ आपकी आत्मा के लिए अच्छा है। आप जानते हैं कि आत्मा सर्वशक्तिमान परमात्मा का प्रतिबिम्ब है। आपके अन्तर्निहित आत्मा अपने पूर्ण सौन्दर्य के साथ प्रतिबिम्बित होने लगती है तो आप दाता बन जाते हैं। ग्राही (पाने वाले) नहीं रह जाते, आप दाता बन जाते हैं। आप इतने संतुष्ट हो जाते हैं ! इस अवतरण को ऐसे समय पर आना था जिसे कयामा का वक्त कहा गया है। जैसा कि मैंने कहा आप स्वतन्त्र हैं, और इस स्वतंत्रता में लोग सभी प्रकार के उल्टे-सीधे कार्य कर रहे थे । इससे पूर्व अपनी शक्ति का दुरुपयोग करके लोग भारत, चीन, अफ्रीका आदि स्थानों को विजय करने के लिए निकल पड़े थे। अमेरिका के लोग अमेरिका गये और वहां शासन स्थापित कर लिया ।

इस काल में लोग स्वतन्त्रता को केवल सत्ता प्राप्ति के लिए उपयोग कर रहे थे । वह आदि शक्ति के अवतरित होने का समय न था । वे लोग सत्ता के दीवाने थे, ऐसा नहीं है कि आज ऐसे लोग नहीं हैं। परन्तु उस समय तो वे केवल सत्ता तथा साम्राज्य खोज रहे थे । यह महत्वपूर्ण नहीं है। अत: आत्मसाक्षात्कार का कार्य उस समय नहीं हो सकता था । उस समय तो लोगों को अपनी स्वतन्त्रता के लिए, साम्राज्यवादियों, जो उन्हें दास बनाने में लगे हुए थे, के चंगुल से मुक्ति प्राप्त करने के लिए युद्ध करना था । शनै: शनै: परिस्थितियों में परिवर्तन आया और अत्यन्त सहजता से सभी कुछ परिवर्तित होता गया । यह हैरानी की बात है। मैंने स्वयं यह परिवर्तन आते देखा । आप जानते हैं कि यह सब कार्यान्वित हुआ । मैंने स्वयं भारत के स्वतन्त्रता संग्राम में भाग लिया । साम्राज्यवाद से मुक्ति प्राप्ति के लिए आन्दोलन पूरे देश में फैलता चला गया । लोग स्वतन्त्रता के विषय में सोचने लगे : वे समझने लगे कि साम्राज्य बनाने का कोई लाभ नहीं और अपनी स्थिति में लौट आना ही अच्छा है। मेरे जीवन काल में भी यह सब हुआ । लोग स्वतन्त्रता के लिए बलिदान हुए । भगत सिंह जैसे शहीद सभी देशों में हैं । क्रान्तिकारियों को बाहर निकाल दिया गया । उनसे दुर्व्यव्हार किया गया और उनकी हत्या कर दी गई । इस प्रकार स्वतन्त्रता-प्रेम की परीक्षा हुई और उन्हें (अंग्रेजों को) लगा कि, यह सब जो हम कर रहे हैं, यह मूर्खता है। इस प्रकार उनमें एक भय की भावना उत्पन्न हुई जिसने उनमें दोष भाव (बांई विशुद्धि) को जन्म दिया । अपनी करनियों के लिए उनमें दोष भाव आ गया और उन्होंने अपनी गलती को महसूस किया ।

इसी काल में जातिप्रथा, दासत्व, भेदभाव, ऊंचनीच आदि की समस्याएं भी थी । स्वच्छंदता के कारण इन सारी समस्याओं की सृष्टि हुई । मान लो मैं आपसे बार-बार कहे जाऊं यह कालीन नहीं है, यह कालीन नहीं है तो मस्तिष्क में ये बात बैठ जाएगी कि यह कालीन न होकर कुछ और ही यह सम्मोहन जैसा है जिसके वशीभूत होकर लोगों ने जातिवाद, भेदभाव और स्त्रियों से दुर्व्यवहार करने जैसी कुप्रथाओं का दासत्व स्वीकार किया । अच्छा या बुरा चुन लेने की स्वतन्त्रता के कारण यह सब हुआ। ऐसी परिस्थितियों में उन पर दर्शाया गया दिव्य प्रेम एवं करुणा व्यर्थ हो जाते क्योंकि लोग इन चीजों को समझने के लिए मानसिक रूप से तैयार ही न थे। उनसे यह भी न कहा जा सकता था कि अज्ञान और धर्मान्धता के कारण आप ऐसा कर रहे हैं और ऐसा करना आपके हित में नहीं है। यह कार्य आपको श्रेष्ठ नहीं बनाएंगे । नि:सन्देह वे अधम हैं। वे अधम कार्य ही कर रहे हैं । बहुत से सन्त आए उन्होंने श्रेष्ठता, क्षमा, एकता और एकाकारिता की बात की । सभी कुछ उन्होंने कहा । बड़े-बड़े पैगम्बर अवतरित हुए । वे उस बुलन्दी तक पहुंचे और बुलन्दी की बात भी की। परन्तु अब भी लोग तैयार न थे । शनै: शनै: उनकी शिक्षाओं ने लोगों पर कार्य करना शुरू किया ।

उन्होंने जो, तथाकथित धर्म स्थापित किए थे वे सारी समस्याओं के कारण बने । वे सभी धर्म अपनी दिशा से भटक गए और एक प्रकार की खिचड़ी पक गई, मुस्लिम, ईसाई, हिन्दू । यह यहां, वह वहां । तो इन सभी खड्डों को भरने के लिए जीवन सरिता की आवश्यकता थी । यह सोचना कि एक मानव दूसरे मानव की अपेक्षा तुच्छ है बिल्कुल अज्ञानता है, मूर्खता है। आप केवल इतना कह सकते हैं कि आपकी स्थिति भिन्न भिन्न है, किसी की ऊंची स्थिति है और किसी की नीची । परन्तु एक तरफा आप किसी को तिरस्कृत नहीं कर सकते कि वह अच्छा नहीं है या यह समाज अच्छा नहीं है। व्यक्तिगत रूप से चाहे आप कहें परन्तु सामूहिकता के लिए आप यह नहीं कह सकते । इस ज्ञान का अन्धकार इतना था कि यह सामूहिक अज्ञान बन गया-सामूहिक अज्ञान। सभी लोग एकत्र होकर यह कहने लगे कि यह धर्म सर्वोत्तम है, केवल हम ही को परमात्मा ने बचाया है। दूसरों ने कहा, नहीं वे तो अति अधम लोग हैं: हम सर्वश्रेष्ठ हैं और इस प्रकार धर्म के नाम पर, सर्वशक्तिमान परमात्मा के नाम पर यह मूर्खता आरम्भ हो गई । तो अब आवश्यकता थी कि आदिशक्ति पूरी ताकत से प्रकट हों । पहली चीज जो उन्होंने (आदिशक्ति) महसूस की कि लोगों को इस बात का ज्ञान होना आवश्यक है कि परिवार क्या है। बच्चा परिवार में जन्म लेता है। यदि माता पिता उसका पूरा ध्यान न रखें, उसे अवांछित प्रेम दें या उनकी उपेक्षा करें तो बच्चा समझ ही नहीं पाता कि प्रेम क्या है। प्रेम का अर्थ बच्चे को बिगाड़ना

या ढेर सारे खिलौने देकर उससे मुक्ति पाना नहीं है। इसका अर्थ हर समय आपके चित्त का निर्लिप्त भाव से बच्चे के हित के लिए बच्चे पर होना है, हित की भावना से मोह के कारण नहीं । तो हर समय आपकी दृष्टि हित पर ही होती है और इस प्रकार मैंने सोचा कि पारिवारिक जीवन के महत्व को सर्वप्रथम स्थापित किया जाए । यह अति आवश्यक है क्योंकि धर्म के नाम पर आजकल वैरागनियों (NUNS), पादरी और सन्यासियों आदि की प्रथा चला दी गई है और सभी प्रकार के बाबा घूम रहे हैं। वे इतने नीरस हैं और इस प्रकार से लोगों को भ्रमित करते हैं कि लोगों ने घर, परिवार, बीबी-बच्चे छोड़ कर सन्यास धारणा शुरू कर दिया है। तो पहली चीज जो मैंने महसूस की वह थी कि प्रेम को समझे बिना मानव में प्रेम नहीं पनप सकता और यह प्रेम यदि सामूहिक हो तभी प्रभावशाली होता है। हमने देखा है कि भारत में परिवार के लोग परस्पर प्रेम करते हैं। परिवार इतने लम्बे होते हैं कि वो यह भी नहीं जानते कि उनके सम्बन्ध क्या हैं। फिर भी हम एक दूसरे को बहन भाई कहते हैं। संयुक्त परिवार प्रणाली इसका कारण है। संयुक्त परिवार प्रणाली सामूहिक प्रणाली की तरह से ही है। कोई नहीं जानता कि उसका वास्तविक भाई कौन है, सौतेला भाई कौन है, चचेरा ममेरा कौन है। फिर भी सम्बन्धियों की तरह से वे इकट्ठे रहते हैं। परन्तु आर्थिक कारणों से संयुक्त परिवार भी टूट गए । इस संकट के समय में जबकि लोगों को प्रेम का ज्ञान होना चाहिए था, सभी देशों में परिवार टूटने लगे । विशेषकर पश्चिमी देशों में जहां लोगों ने पारिवारिक जीवन के महत्व को कभी नहीं समझा । उन्हें अपने परिवार पर कभी विश्वास न था । बेचारे बच्चों के लिए चीजें बहुत कठिन हो गई हैं। वे फिसलन पर खड़े हैं । उनका विकास उचित रूप से नहीं हो पा रहा है। इन परिस्थितियों ने एक हिंसात्मक तथा भयानक रूप से भूत बाधित बच्चों की पीढ़ी को जन्म दिया। यह पीढ़ी युद्ध की ओर चल पड़ी । वे नहीं समझते-उन्हें युद्ध करने की इच्छा होती है। मैंने बच्चों को पेड़ों से लड़ते हुए देखा है। मैंने पूछा आप क्यों लड़ रहे हैं? उन्हें इसका कारण नहीं पता । प्रेम के अभाव में सभी कुछ घृणात्मक हो जाता है, मुझे यह पसन्द नहीं है। हताशा के कारण वे सभी कुछ तोड़-फोड़ करने की कोशिश करते हैं। तो द्वितीय विश्व युद्ध के बाद एक और प्रवृत्ति पनपी और परिणामस्वरूप मूल्यों का ह्रास हो गया । लोगों को लगा कि इन प्राचीन मूल्यों का क्या लाभ है। इन मूल्यों के होते हुए भी हमें क्या मिला और युद्ध, युद्ध किसलिए है? युद्ध ने हमारे समाज और बच्चों का वध कर दिया है। युद्ध के विषय में क्या चीज महान् है। तो लोगों के मस्तिष्क में एक बात आई कि सर्वशक्तिशाली व्यक्ति ही सर्वोत्तम है और किसी भी बहाने से युद्ध करके इसका निर्णय किया जाना चाहिए । तो उनके विचार से जो शासन कर सकता है, दूसरों को दबा सकता है वही सर्वोत्तम है। यद्यपि साम्राज्यवादी शैली की सरकार का प्रभुत्व समाप्त हो गया था परन्तु व्यक्तिगत प्रभुत्व की प्रक्रिया बनी हुई थी और इसके कारण अहम् विकसित होने लगा । बच्चों तक को भी उन्होंने इस प्रकार की शिक्षा दी कि वे अत्यन्त उद्दण्ड एवं बनावटी हो गए । अत्यन्त उद्दण्ड एवं बनावटी । यह समझ पाना असंभव था कि इस प्रकृति को गलत बताए जाने के बावजूद भी बच्चों को संभाला क्यों न जा सका ।

लोगों का ध्यान धारणा न करना लौकिक चीज है। उन्हें ध्यानगम्य होना चाहिए । आप यदि ध्यान धारणा नहीं करते तो मेरा आपसे कोई सम्बन्ध नहीं । आप मेरे सम्बन्धी नहीं हैं और न ही आपका मुझ पर कोई अधिकार है। कोई भी प्रश्न नहीं पूछा जाना चाहिए कि ऐसा नहीं हो रहा, वैसा नहीं हो रहा है। यही कारण है कि जब आप ध्यान नहीं करते तो मैं कहती रहती हूं ध्यान कीजिए-ध्यान कीजिए। मुझे आपसे कुछ नहीं लेना देना । आप मेरे लिए नहीं रह जाते । आपका सम्बन्ध यदि मुझसे नहीं जुड़ा हुआ तो आप भी अन्य लोगों की तरह हैं। चाहे आप सहज योगी हों, चाहे आपको अपने अगुआओं से सहजयोग का प्रमाण पत्र मिल चुका हो, चाहे आपको बहुत महान समझा जाता हो, परन्तु यदि आप प्रतिदिन सुबह और शाम ध्यान-धारणा नहीं करते तो, सत्य बात है, आप श्रीमाताजी के साम्राज्य में नहीं होंगे, क्योंकि मुझसे आपका सम्बन्ध केवल ध्यान-धारणा के माध्यम से ही है। मैं ऐसे लोगों को जानती हूं जो ध्यान-धारणा नहीं करते । उन्हें कष्ट उठाना पड़ता है, उनके बच्चे दुख झेलते हैं। जब ऐसा कुछ होने लगता है तो वे आकर मुझे बताते हैं परन्तु मैं स्पष्ट देख लेती हूं कि यह व्यक्ति ध्यान-धारणा नहीं करता । मेरा उससे कोई सम्बन्ध नहीं है और उसे मुझसे कुछ मांगने का अधिकार नहीं है। आरम्भ में, निःसन्देह ध्यान में जाने के लिए कुछ समय लगता है परन्तु एक बार जब आप जान जाते हैं कि ध्यान-धारणा क्या है तो आपको मेरी संगति अच्छी लगेगी। किस प्रकार आपकी एकाकारिता मुझसे है ! किस प्रकार हम परस्पर तालमेल रख सकते हैं। हमें एक दूसरे को पत्र लिखने या सामाजिक सम्बन्ध बनाने की कोई आवश्यकता नहीं, कुछ नहीं । केवल ध्यान-धारणा की ही आवश्यकता है। ध्यान में ही आपका उत्थान होता है, ध्यान से ही आप ऊंचे उठते चले जाते हैं । और जब यह घटित होता है, जब आप सहजयोग की उस परिपक्व अवस्था तक पहुंच जाते हैं तो आप ध्यान धारणा को छोड़ना नहीं चाहते क्योंकि केवल उसी समय आपकी पूर्ण एकाकारिता मुझसे होती है। इसका अर्थ यह भी नहीं है कि आप 3-4 घंटे ध्यान-धारणा करें ।

कितनी गहनता से आप मेरे साथ जुड़े हुए हैं, यह महत्वपूर्ण है। कितना समय आपने ध्यान को दिया यह नहीं । तब मैं आपके प्रति, आपके बच्चों के प्रति, आपके सबके प्रति जिम्मेदार होती हूं । तब मैं आपके उत्थान के लिए, आपकी सुरक्षा के लिए, सभी बाधाओं से आपकी रक्षा करने के लिए जिम्मेदार हूं। तो एक पिता की तरह मैं सीधे आपको दण्ड नहीं देती । ऐसा नहीं है। परन्तु ठीक है, तुम मेरे सम्बन्धी नहीं हो, मैं अपने आप में ठीक हूं। यदि आप ध्यान धारणा नहीं करते तो मैं आपको विवश नहीं कर सकती । मुझे आपसे कुछ नहीं लेना देना । आप बाहर के लोगों से बाह्य सम्बन्ध रख सकते हैं। परन्तु यह आन्तरिक सम्बन्ध, जिसके द्वारा आपका हित होता है, ध्यान धारणा के बिना आप प्राप्त नहीं कर सकते । मैं आप सबसे बताती रहती हूं कि कृपा करके ध्यान करें, प्रतिदिन ध्यान करें । परन्तु लोग मेरे कथन के महत्व को समझ नहीं रहे हैं। वे मुझसे कहते हैं," श्रीमाता जी हम ध्यान धारणा नहीं करते।" 'क्यों'? "अब हम आत्मसाक्षात्कारी व्यक्ति हैं, हम क्यों ध्यान-धारणा करें । अब यह यन्त्र (MICROPHONE) पूरी तरह से बना हुआ है, परन्तु यदि यह ऊर्जा स्रोत से जुड़ा हुआ नहीं है तो इसे रखने का क्या लाभ है? ध्यान-धारणा में आप प्रेम का अनुभव करेंगे, परमात्मा के प्रेम का । परमात्मा के प्रेम के सौन्दर्य को आप महसूस करेंगे । पूर्ण दृश्य पटल ही परिवर्तित हो जाएगा। ध्यान-धारणा करने वाले व्यक्ति का तो दृष्टिकोण ही बिल्कुल भिन्न होता है, उसका स्वभाव, उसका जीवन बिल्कुल ही भिन्न होता है। वह सदा पूर्ण आन्तरिक सन्तोष के साथ रहता है।

तो आज अवतरण का प्रथम दिन होने के कारण, हम कह सकते हैं कि आज प्रथम दिन है क्योंकि आज आप पहली बार आदिशक्ति पूजा कर रहे हैं। नि:सन्देह! यह युद्ध है, आज नहीं, फिर भी हम कह सकते हैं कि यदि यह सत्य है, यदि यह घटित हुआ है और आपको इससे सहायता मिली है, यदि यह आपके लिए आशीर्वाद है तो आपको इसे सुरक्षित रखने का, बढ़ाने का और इसका आनन्द लेने का ज्ञान होना आवश्यक है। किसी एक नाटक या किसी एक चीज से आपको सन्तुष्ट नहीं हो जाना चाहिए । परमात्मा से आपकी पूर्ण एकाकारिता होनी चाहिए । यह तभी सम्भव है जब आप वास्तव में ध्यान-धारणा करते हैं। ऐसा करना अत्यन्त सुगम है। कुछ लोग कहते हैं कि श्रीमाता जी हम समय से ऊपर नहीं उठ सकते । हर समय हम कुछ न कुछ सोचते रहते हैं या घड़ी देखने की इच्छा करती है। आरम्भ में आपको थोड़ी-सी कठिनाई हो सकती है। केवल आरम्भ में। शनै: शनै: आप ठीक हो जाओगे, इस पर आपका अधिकार हो जाएगा । आप इसे इतनी अच्छी तरह से जान जाएंगे कि कोई भी चीज आपको अच्छी न लगेगी । अपने सौन्दर्य, अपनी गरिमा और महान व्यक्तित्व (जिसका अब पर्दाफाश हो चुका है) को पाने के लिए आपको वास्तव में पूर्ण निष्ठा पूर्वक ध्यान-धारणा करनी होगी । ऐसा नहीं है कि रात को मैं देर से आया इसलिए ध्यान नहीं किया, कल मैंने काम पर जाना है इसलिए ध्यान नहीं कर सकता । बहाने किसी को भी अच्छे नहीं लगते और अब तो बात आपके और आपकी आत्मा के बीच है। इसमें आपका अपना ही लाभ है किसी और का नहीं। आपके लाभ के ही लिए सभी कुछ घटित हो रहा है।

अब हमें समझना है कि हमारी उपलब्धियां क्या हैं। सम्बन्धों की एक विशेष ऊंचाई, परन्तु चाहे आप स्वयं को एक उच्च कोटि का सहजयोगी मानते हों फिर भी ध्यान-धारणा के विषय में नम्र होना आपके लिए आवश्यक है। ध्यान-धारणा का यह गुण इतना आनन्ददायी है कि यद्यपि मैं आपसे सहस्रार पर बात कर रही हूं फिर भी ध्यान में हूं। आप आनन्द के सागर में कूद पड़ें । आरम्भ में ऐसा करना कठिन होगा परन्तु कुछ समय पश्चात् आप जान जाएंगे कि आपका यह सम्बन्ध वह सम्बन्ध है जिसे आप खोज रहे थे । कुछ लोग जो खो जाते हैं, मैंने एक दोष देखा है, वे अकेले में बहुत ध्यान करते हैं। अकेले में वे ध्यान करेंगे, पूजा करेंगे और बैठे रहेंगे परन्तु वह सामूहिक ध्यान नहीं करते । तो हमें ध्यान रखना है कि हमें सामूहिक ध्यान करना है। क्योंकि मैं परम सामूहिक हूं और जब आप सामूहिक ध्यान करते हैं तो मेरे बहुत समीप होते हैं। अत: जब भी आपका कोई कार्यक्रम होता है तो ध्यान अवश्य करें । हर कार्यक्रम में ध्यान धारणा ही आपकी प्राथमिकता होनी चाहिए । भजन आदि गाने के पश्चात् आप ध्यान करें । मैं यदि किसी चीज पर जोर दे रही हूं तो आपको समझ लेना चाहिए कि यही सत्य है और हर चीज का आधार है। देखने में यद्यपि यह अत्यन्त सांसारिक प्रतीत होता है फिर भी यह अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

अब आदिशक्ति की पूजा करने के लिए मैं नहीं जानती, क्योंकि आज तक आदिशक्ति के लिए कोई प्रार्थना नहीं बनी । लोग भगवती तक ही पहुंच पाए । इससे आगे नहीं गए । मैं नहीं जानती आप किस प्रकार की पूजा करेंगे। परन्तु हमें कुछ प्रयत्न करना चाहिए और ध्यान-धारणा ही कुछ प्राप्त करने का सर्वोत्तम उपाय है। तो हम पांच मिनट के लिए ध्यान में जाएंगे ।

कृपया अपनी आंखे बन्द कर लें । (श्रीमाता जी सभी उपस्थित सहजयोगियों की कुण्डलिनी उठाती हैं) ग्यारह रुद्र जागृत हो चुके हैं और वे सारी नकारात्मकता को नष्ट कर देंगे। अज्ञान सबसे बड़ी नकारात्मक शक्ति है। मुझे विश्वास है कि ये रुद्र लोगों के अज्ञान को नष्ट कर देंगे ।

परमात्मा आपको धन्य करें ।

रामनवमी पूजा (संक्षिप्त)

नोयडा-निवास,
शालिवाहन शक सम्वत्-1920 (5 अप्रैल 1998)
परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी
के प्रवचन का संक्षिप्त सार

आज रामनवमी के दिन आपको श्री राम के बारे में बतायें । वैसे तो आप जानते ही हैं कि श्री राम ने सभी धर्मों - पितृ धर्म, मातृ धर्म, पति धर्म - सभी धर्मों को पूरी तरह से निभाया । और यह सब करते हुए उन्होंने राज काज का कार्य बखूबी निभाया । वे अपनी पत्नी से बेहद प्रेम करते थे लेकिन फिर भी राजहित के लिए उन्होंने उसका त्याग किया। बाद में सीता जी ने भी एक प्रकार से उनका त्याग किया । इतनी प्रिय पत्नी का त्याग करना कठिन है, हां अगर पत्नी से प्रेम न हो तो और बात है। श्री राम पूरी तरह से धर्म पर खड़े थे । वे धर्मातीत थे । उनका धर्म ऐसा नहीं जैसे आजकल कोई धर्म पाल रहे हैं या धर्म पर चलने की बात है। वे पूर्णतया धर्म में खड़े हुए थे ।

मनुष्य के रूप में होते हुए इस महान अवतरण ने सभी कठिनाइयों का सामना किया । एक अवतरण होते हुए उन्हें यह सब करने की आवश्यकता नहीं थी, लेकिन वे दिखाना चाहते थे कि मनुष्य रूप में भी इंसान कितनी ऊंचाई पर जा सकता है। ईसा मसीह को भी सताया गया और सूली पर चढ़ा दिया गया लेकिन उन्हें थोड़े समय के लिए ही सहना पड़ा । परन्तु श्री राम को तो काफी समय तक कठिनाईयों का सामना करना पड़ा । चौदह वर्ष तक बनवास में रहे । इसके लिए पुरुषार्थ होना चाहिए । पुरुषार्थ के माने जैसे आपको सहज में कोई कठिनाईयां आती हैं, किसी के पति सहज में नहीं, किसी की पत्नी सहज में नहीं है, और भी कठिनाईयां हो सकती हैं, लेकिन आप इन सबकी परवाह किये बिना सहज कार्य करते रहिए । कुछ लोग कहते हैं कि सहज में कार्य करने से उनका अहंकार बढ़ जाता है। उन्हें समझना चाहिए कि सारा कार्य तो परम चैतन्य करता है। अहंकार केवल तब आता है जब आप सोचते हैं कि ये कार्य आप कर रहे हैं। यदि आप आत्मा पर अपना चित्त रखें, जैसे मैंने बताया था कि आत्मोन्नति होनी चाहिए, तो जब आपका चित्त अपनी आत्मा पर रहता है तो आप पाते हैं कि सभी कार्य अपने आप होते जाते हैं और आपको अहंकार भी नहीं आता । इसके ऊपर महाराष्ट्र के संत नामदेव ने पंजाबी भाषा में लिखा है जिसे गुरु ग्रंथ साहब में भी लिया गया है। उन्होंने कहा जैसे एक मां पीठ पर अपना बच्चा बांधे घर का सारा कार्य करती है लेकिन उसका चित्त अपने बच्चे पर ही रहता है। इसी प्रकार एक बच्चा जब पतंग उड़ा रहा हो तो वह अपने साथियों से बातचीत भी करता रहेगा लेकिन उसका चित्त अपनी पतंग की ओर ही है। तीसरे गांव में औरतें सिर पर पानी के घड़े रख कर जा रही हैं। वे आपस में बातें करती हैं हंसी मजाक करती हैं तो भी उनका चित्त सिर पर रखे घड़ों पर ही रहता है। इसी प्रकार हमारा चित्त भी सब कार्य करते हुए अपनी आत्मा पर ही रहना चाहिए ।

श्री राम देवी के बड़े पुजारी थे । लंका पर आक्रमण से पूर्व उन्होंने देवी पूजन किया । उन्होंने रावण को देवी पूजा के लिए आमन्त्रित किया और रावण आया भी । श्री राम जानते थे कि रावण देवी का पुजारी है इसीलिए उन्होंने इसे बुलाया । वैसे बाहर चाहे उनका आपस में झगड़ा हो लेकिन देवी की पूजा में दोनों एक साथ थे । इसी प्रकार आप सब हमारे बच्चे हैं और पूजा कार्य आपको मिलकर एक साथ करना चाहिए । ये देखा गया है जहां देवी की, मां की, पूजा होती है वहां लोगों में आपस में भाईचारा बहुत होता है। भारत में भी खासकर उत्तर भारत में देवी की, शक्ति की पूजा होती है। यहां जगह-जगह पर मन्दिर हैं और शक्ति की पूजा होती है, इसलिए लोगों में भाईचारा काफी है। महाराष्ट्र में कात्यायनी देवी, बंगाल में दुर्गा मां, की यहां मेरठ में ओचन्डी मां की पूजा होती है, इसलिए लोगों में आपस में प्रेम है। जहां देवी के अलावा किसी और की पूजा होती है वहां कुछ कम है।

श्री राम के भक्त हनुमान हर समय श्री राम का ही ध्यान करते थे । वे भी हमारे बड़े प्यारे बच्चे हैं, बहुत ही प्यारे ।

नवरात्रों की शुरुआत हमारे जन्मदिन से ही होती है और आज आखरी नवरात्रि है।

आप आश्चर्यचकित होंगे कि जब-जब भी मेरे परिवार या सहजयोग में कोई विपत्ति होती है, तो मैं स्वत: ही निर्विचार हो जाती हूं क्योंकि परम चैतन्य ही समस्याओं का समाधान करेंगे ।

परम चैतन्य ही जब सभी समस्याओं का समाधान करते हैं तो मैं क्यों सोचूं! समस्याओं को भूल जाइए । परम चैतन्य को इनकी चिंता करने दीजिए । परम चैतन्य पर यदि आप निर्भर नहीं होंगे तो यह आपकी सहायता नहीं करेगा और न ही समस्याओं का समाधान करेगा, तब अपने मस्तिष्क के साथ आप गोल-गोल घूमते रहेंगे और इनके हल सोचेंगे । निश्चित रूप से आप को जानना होगा कि आप परमात्मा के प्रेम की सर्वव्यापी शक्ति से जुड़े हुए हैं। प्रेम मूर्ख नहीं है। प्रेम ही सोचता है, प्रेम ही सत्य है, प्रेम ही आनंद है ।